जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 47 संख्याः 102 प्रभात बीकानेर, बुधवार, 5 नवम्बर, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

राहुल गाँधी की, फ्रैश, साफ छवि वाले जिलाध्यक्ष बनाने की योजना राजस्थान में क्यों फेल हो रही है

यह कार्यक्रम देश भर में जोर-शोर से आगे बढ़ रहा है, पर, राजस्थान में आकर फिसड्डी हो गया है

- राजस्थान में यह दो व्यक्तियों के कारण असफल होता नज़र आ रहा है। प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा व प्रभारी रंधावा।
- स्पष्ट निर्देश थे कि दिल्ली से पर्यवेक्षक भेजे जाएंगे, जो खोजबीन व छानबीन के बाद, नए जिलाध्यक्षों के नाम प्रस्तावित करेंगे।
- यह भी स्पष्ट निर्देश थे कि प्रदेशाध्यक्ष व राज प्रभारी की इन नियुक्तियों में कोई भूमिका नहीं होगी।
- पर, प्रदेशाध्यक्ष व प्रभारी ने बारह नामों की सूची भेजी है। इस सूची में वे नाम शामिल हैं, जो काफी हद तक विवादित हैं, जैसे प्रमोद सिसोदिया चित्तौड़गढ़, शबनम गोदारा हनुमानगढ़ तथा पुष्पेंद्र भारद्वाज जयपुर। इस तरह के कई नाम हैं, जो पुराने नेताओं व खेमेबाजी में भी सक्रिय रहे हैं।

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 4 नवम्बर। राहुल गांधी ने संगठन सृजन अभियान शुरू कर साफ-सुथरी और प्रभावी राजनीति की दिशा में कदम बढ़ाया है। इस अभियान के तहत, जिलाध्यक्षों को अधिक अधिकार और मजबूती देने के लिए कुछ मानक और नियम तय किए गए हैं, ताकि संगठन के संचालन में ऊर्जा और प्रभावशीलता बनी रहे। यह प्रक्रिया पूरे देश के कई राज्यों में चल रही है।

इस कार्य के लिए पर्यवेक्षकों (ऑब्जर्वर्स) को नियुक्त किया गया है, जिन्हें राज्य नेतृत्व, प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) अध्यक्षों और अन्य स्वार्थी हितों को दरकिनार करते हुए, जिलाध्यक्षों के नामों की पैनल सूची तैयार करनी थी।

लेकिन राजस्थान में इन निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया जा रहा है। केन्द्र से मिले स्पष्ट निर्देशों की अनदेखी करते हुए, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और एआईसीसी प्रभारी रंधावा ने 12 जिलाध्यक्षों की नियुक्ति के लिए सिफारिशें भेज दी हैं, जबकि, इसका अधिकार नहीं था तथा ऐसा न करने के निर्देश उन्हें पहले ही दे दिए गए थे, क्योंकि इस काम के लिए अलग से पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए हैं।

बताया जा रहा है कि जिन लोगों के नाम सुझाए गए हैं, उनमें कई पर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जो कि स्वच्छ छवि और प्रभावी जिलाध्यक्षों की मूल भावना के खिलाफ हैं। रंधावा, जिन्हें राजस्थान का प्रभारी बनाए रखा गया है, केसी वेणुगोपाल के करीबी माने जाते हैं, और वेणुगोपाल पार्टी में वास्तविक रूप से कांग्रेस अध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं।

रंधावा, डोटासरा, अशोक गहलोत और सी.पी. जोशी के गुट से जुड़े हुए हैं। ये नेता अपने-अपने क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं और ऐसे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सड़क दुर्घटनाएं रोकने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार ने क्या कदम उठाये'

जयपुर, 4 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में लगातार हो रही सड़क दुर्घटनाओं को लेकर केन्द्र व राज्य सरकार से 6 नवंबर तक जवाब देने के लिए कहा है। अदालत ने विस्तृत रिपोर्ट मांगते हुए यह बताने के लिए कहा है कि अभी तक सड़क सुरक्षा नीति, ब्लैक स्पॉट सुधार योजना और वाहन जांच अभियान के तहत क्या कदम उठाए गए हैं। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा व जस्टिस बीएस संधू की

- राजेन्द्र शर्मा की पत्र याचिका पर प्रसंज्ञान लेकर हाई कोर्ट ने 6 नवंबर तक जवाब मांगा।

खंडपीठ ने यह आदेश मंगलवार को राजेन्द्र शर्मा की पत्र याचिका पर प्रसंज्ञान लेते हुए दिए। अदालत ने टिप्पणी करते हुए कहा कि सड़क सुरक्षा केवल नियमों का विषय नहीं है, बल्कि यह नागरिकों के जीवन के मौलिक अधिकार से जुड़ा मामला है।

याचिका में कहा गया कि हाल में जयपुर, जोधपुर, उदयपुर सहित प्रदेशभर में लगातार सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं और इनमें लोगों की मौतें हुई है। इन दुर्घटनाओं का मुख्य कारण सड़क सुरक्षा के प्रति सरकारी लापरवाही, खस्ताहाल रोड, ओवरलोडिंग, तेज रफ्तार वाहनों पर नियंत्रण की कमी और ट्रैफिक प्रबंधन की विफलता है। प्रदेश

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एनडीए का आंतरिक फीडबैक, पटना में भारी झटका लग सकता है

एनडीए के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि 2020 में भाजपा ने पटना की 14 में से 9 सीटें जीती थीं, इस बार 3 या 4 सीटें ही मिलेंगी

- पटना में पहले चरण में मतदान होना है। नुकसान को भांपते हुए प्रधानमंत्री ने खुद पटना की चुनावी मुहिम संभाली और विशाल रोड शो के जरिए भाजपा के पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश की, पर, अभी अनिश्चितता कायम है।
- राजनैतिक जानकारों ने कहा कि यह बदलता रुख सत्ता विरोधी लहर, बेरोज़गारी की चिंता और महागठबंधन के बढ़ते प्रभाव की वजह से है।
- इन हालात में भाजपा की नज़र में नीतीश का मोल बढ़ गया है, भाजपा में। माना जा रहा है कि तेजस्वी को हराने के लिए नीतीश की जरुरत पहले से कहीं ज्यादा है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 नवंबर। बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण का प्रचार समाप्त होने के साथ ही राजनीतिक पारा अपने चरम पर पहुंच गया है, जिससे सत्तारूढ़ एनडीए और महागठबंधन के बीच कड़ी टक्कर की संभावना बन गई है।

जैसे-जैसे तस्वीर साफ हो रही है, शुरुआती जमीनी आकलन यह संकेत दे रहे हैं कि राजनीतिक परिदृश्य में बड़ा बदलाव संभव है, खासकर पटना जिले में, जो पारंपरिक रूप से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का गढ़ माना जाता रहा है।

एनडीए के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने आंतरिक फीडबैक का हवाला देते हुए माना कि राज्य के राजधानी क्षेत्र में भाजपा को अप्रत्याशित झटका लग सकता है। पटना जिले की कुल 14 विधानसभा सीटों में से, जहां 2020 के चुनाव में भाजपा ने 9 सीटें जीती थीं, इस बार पार्टी को महज 3 से 4 सीटों पर ही जीत मिलने का अनुमान है। इसलिए 6 नवंबर को होने वाला पहला चरण पार्टी के लिए बेहद अहम माना जा रहा है, जिसने इस जिले में अपने संगठन और स्टार प्रचारकों की पूरी ताकत झोंक दी है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने व्यक्तिगत रूप से पटना में भाजपा की चुनावी मुहिम की कमान संभाली, विशाल रोड शो और जोशीली जनसभा के जरिए पार्टी के पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश की। लेकिन इन जबरदस्त

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

7 देशों के डिप्लोमैट्स की टीम चुनाव देखने बिहार गई

"नो भाजपा" (भाजपा को जानो) मुहिम के तहत दो दिन के प्रवास में इन डिप्लोमैट्स ने भाजपा के चुनाव प्रचार को करीब से देखा

- बिहार यात्रा में इन राजनयिकों ने प्र.मंत्री मोदी की आरा में हुई विशाल जनसभा देखी, कई-कई नेताओं से मुलाकात की तथा घर-घर चुनाव अभियान में गहरी रूचि ली।
- "नो भाजपा" मुहिम भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने शुरु की है।
- डिप्लोमैट्स की टीम में जापान, यूनाईटेड किंगडम, डेनमार्क, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका, इंडोनेशिया, जापान व भूटान के राजनयिक शामिल थे।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 नवम्बर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा द्वारा शुरू की गई "नो बीजेपी" (भाजपा को जानो) पहल के तहत जापान, इंडोनेशिया, डेनमार्क, ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम, भूटान और दक्षिण अफ्रीका के भारत में स्थित दूतावासों के राजनयिक प्रतिनिधियों का एक दल 2-3 नवम्बर 2025 को बिहार का दौरा करने के लिए गया, ताकि वे भारतीय जनता पार्टी के चुनाव प्रचार और भारत की जीवंत लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बारे में वास्तविक जानकारी प्राप्त कर सकें।

इस प्रतिनिधिमंडल ने अररिया में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सार्वजनिक रैली देखी, जहाँ उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान बहुत सारे लोगों की भागीदारी को देखा। अपने दौरे के दौरान, राजनयिकों ने भाजपा के वरिष्ठ नेताओं रविशंकर प्रसाद, धर्मेन्द्र प्रधान और विनोद तावड़े से मुलाकात की और बुनियादी स्तर पर घर-घर जाकर हो रहे चुनाव प्रचार की गतिविधियों को देखा। इसके बाद वे भाजपा के राज्य मुख्यालय पटना गए और पार्टी के संगठन, संचार रणनीति और चुनाव प्रबंधन प्रणाली को समझने के लिए राज्य के वरिष्ठ नेताओं से बातचीत की।

एस आई भर्ती : अशोक गहलोत के पूर्व पी एस ओ को जमानत नहीं मिली

जयपुर, 4 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में पूर्व सीएम अशोक गहलोत के पीएसओ रहे राजकुमार यादव सहित पांच आरोपियों को जमानत देने से इनकार कर दिया है। इसी के साथ अदालत ने पीएसओ के बेटे

- हाई कोर्ट ने पीएसओ के पुत्र सहित नौ आरोपियों को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिये।

भरत यादव सहित नौ आरोपियों को राहत देते हुए उन्हें जमानत पर रिहा करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस चंद्र प्रकाश श्रीमाली की एकलपीठ ने यह आदेश 14 आरोपियों की ओर से दायर जमानत याचिकाओं की सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने पेपर लीक गैंग के सदस्य विजय कुमार डामोर, पेपर हल करने वाले प्रवीण कुमार, सत्येन्द्र यादव, ट्रेनी एसआई समेता कुमारी और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जद (यू) के कद्दावर नेता लल्लन सिंह पर चुनाव आयोग ने केस किया

लल्लन सिंह एक वायरल वीडियो में धमकाने वाला बयान देते हुए दिखे कि मतदान के दिन कुछ नेताओं को घर से नहीं निकलने देना है

- लल्लन सिंह उर्फ राजीव रंजन सिंह खुद एक बाहुबली हैं तथा नीतीश के करीबी हैं। जद (यू) में उन्हें नीतीश के बाद नंबर दो माना जाता है।
- मुख्य विपक्षी दल, राष्ट्रीय जनता दल ने मोकामा में दिए गए लल्लन सिंह के भाषण का वीडियो जारी किया।
- मोकामा लल्लन सिंह के लोकसभा क्षेत्र मुंगेर में आता है, जहाँ से जद (यू) ने बाहुबली अनंत सिंह को टिकट दिया है। लल्लन सिंह उर्फ राजीव रंजन सिंह, जो खुद बाहुबली हैं, अनंत सिंह के पक्ष में प्रचार कर रहे हैं।
- लल्लन सिंह ने दुलार सिंह यादव (एक अन्य पूर्व बाहुबली) की हत्या में अनंत सिंह का बचाव किया व कहा कि अनंत सिंह को फंसाया जा रहा है।

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 4 नवम्बर। बिहार में पहले चरण के हाई-वोल्टेज विधानसभा चुनाव में वोटिंग से 48 घंटे पहले, नीतीश कुमार की अगुवाई वाली जेडीयू में नंबर 2 और केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह, जिन्हें लल्लन सिंह के नाम से जाना जाता है, के खिलाफ एक पुलिस मामला दर्ज किया गया है। यह मामला उनके चुनाव प्रचार के दौरान भड़काऊ बयान देने को लेकर दर्ज हुआ है।

लल्लन सिंह के खिलाफ एक एफआईआर दर्ज की गई है, जिसमें वह एक वीडियो में यह कहते सुनाई दे रहे हैं कि "कुछ नेताओं को मतदान के दिन उनके घर से बाहर जाने नहीं दिया जाना चाहिए।" यह एफआईआर चुनाव आयोग के आदेशों पर आर भारतीय दंड संहिता और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धाराओं के तहत दर्ज की गई है।

मुख्य विपक्षी दल राष्ट्रीय जनता दल ने पहले मोकामा विधानसभा क्षेत्र में लल्लन सिंह के भाषण का मुद्दा उठाया था, जो उस वक्त सुर्खियों में आया था जब स्थानीय बाहुबली और जेडीयू उम्मीदवार अनंत सिंह को हत्या के मामले में गिरफ्तार किया गया था।

वायरल वीडियो में लल्लन सिंह यह कहते सुनाई दे रहे हैं, "कुछ नेताओं को चुनाव के दिन उनके घर से बाहर नहीं जाने देना चाहिए। अगर वे बहुत ज़्यादा मांग करें, तो उन्हें अपने साथ ले जाओ और मतदान करने के बाद उन्हें घर वापस लेकर जाओ और बिस्तर पर सुला दो। उन्हें घर में बंद कर देना है। अब जिम्मेदारी संभालो। चुनाव के लिए अब समय नहीं बचा है।"

वीडियो शेयर करते हुए आरजेडी ने कहा कि लल्लन सिंह चुनाव आयोग पर बुलडोजर चला रहे हैं। "(वह कह रहे हैं) उन्हें बंद कर दो, अगर वे मिन्नत करें तो उन्हें मतदान करने ले जाओ। आरजेडी ने सवाल उठाया, मरा हुआ आयोग कहाँ है?"

मोकामा, जो मुंगेर लोकसभा क्षेत्र का हिस्सा है, लल्लन सिंह के प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्र में आता है। इससे पहले, एक साक्षात्कार में उन्होंने अनंत सिंह की गिरफ्तारी को एक साजिश बताया था और कहा था कि आगामी चुनावों में बाहुबली अनंत सिंह भारी बहुमत से जीतेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पैसेंजर ट्रेन व मालगाड़ी की टक्कर में 7 की मौत

बिलासपुर, 04 नवंबर। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में मंगलवार को एक मेमू लोकल ट्रेन और मालगाड़ी में जबरदस्त टक्कर हो गयी, जिसमें सात यात्रियों की मौत हो गयी और कई अन्य घायल हो गये।

दुर्घटना बिलासपुर स्टेशन के पास शाम को करीब चार बजे हुयी जिसमें

- बिलासपुर स्टेशन पर पैसेंजर ट्रेन खड़ी मालगाड़ी से टकराई।

मेमू ट्रेन खड़ी मालगाड़ी से टकरा गयी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मेमू का इंजन मालगाड़ी के ऊपर चढ़ गया। हादसे की सूचना मिलते ही रेलवे और जिला प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंच गयीं और बचाव अभियान शुरू कर दिया गया। घायलों को पास के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भूमिहार बिहार में जनसंख्या का 2.9 प्रतिशत ही हैं

फिर एनडीए ने बत्तीस व महागठबंधन ने पंद्रह भूमिहार नेताओं को क्यों टिकट दिये हैं, विधानसभा चुनावों में

- इस प्रश्न का जवाब है, बिहार के इतिहास में, ऐतिहासिक व सामाजिक जीवन में भूमिहार जाति का भारी प्रभाव रहा है।
- भूमिहार मुख्य रूप से लैंड ओनिंग जाति है और कई छोटे-बड़े राजघरानों में, जैसे बेतिया, टिकारी, हथुआ, तामुखी, श्योहर, पाकुर, महिषादल, महेशपुर व वाराणसी, भूमिहार ठिकाने हैं।
- बिहार में भूमिहारों ने कई बुद्धिजीवी, जैसे, रामधारी सिंह दिनकर, राहुल सांस्कृतायन, रामवृक्ष बेनीपुरी भी दिये बिहार को।
- राजनीतिक दृष्टि से बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री, भूमिहर नेता कृष्ण सिन्हा (1946-61) थे, उनके लंबे राजनीतिक जीवन में कई प्रभावशाली भूमिहार नेता पनपे। जैसे, महेश प्रसाद सिन्हा, कैलाशपति मिश्रा, वर्तमान में सी.पी. ठाकुर, केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, जम्मू-कश्मीर के गवर्नर मनोज सिन्हा तथा वर्तमान उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा।
- बुद्धिजीवी लैंड ओनिंग जाति, राजनीति व प्रशासनिक बिहार में बहुत महत्व रखती है। वर्ष 1990 से 2025 तक, नीतीश-लालू युग में सत्ता जरुर इन दोनों के इर्द-गिर्द रही, पर, प्रशासनिक पकड़, उच्च शिक्षा, मीडिया, प्रोफेशनल, जैसे कानून व मैडिसन आदि में भूमिहार छाये रहे।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 नवम्बर। भूमिहार बिहार की जनसंख्या का केवल 2.9 प्रतिशत हैं, लेकिन एनडीए ने 32 और महागठबंधन ने 15 भूमिहारों को टिकट दिया है। आज, भूमिहार बिहार में महत्वपूर्ण जाति बन गए हैं।

बिहार के केन्द्र में, गंगा नदी के किनारे स्थित मोकामा एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण शहर है, जो पहले एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में जाना जाता था और एक प्रमुख दाल उत्पादन केन्द्र था।

आज, मोकामा एक क्रूर विडंबना के रूप में हमारे सामने है तथा अपराध और राजनीति के जटिल अंतर्संबंध का प्रमाण बना हुआ है। इस क्षेत्र में अतीत और वर्तमान एक भयंकर हिंसा, शक्ति और चुनावी महत्वाकांक्षा के विभिन्न जीवन्त स्वरूप में दिखाई देते हैं।

जैसे-जैसे 2025 के विधानसभा चुनाव पास आ रहे हैं, दांव पहले से कहीं ज्यादा ऊंचे हैं, पुराने प्रतिद्वंद्वियों के बीच की खाई नए आरोपों के बीच उभरकर सामने आई है। हाल ही में, 64 वर्षीय भूमिहार उम्मीदवार अनंत सिंह, जो जेडी (यू) से हैं, की गिरफ्तारी 75 वर्षीय दुलारचंद यादव की हत्या से संबंधित आरोपों में हुई, जो खुद भी पहले एक गैंगस्टर थे, फिर राजनीति में आए थे। यह गिरफ्तारी इस उथल-पुथल भरे क्षेत्र में बाहुबली नेताओं के निरंतर प्रभाव को उजागर करती है, और अनंत सिंह के लंबे समय से प्रतिद्वंद्वी रहे सूरज भान सिंह के खिलाफ एक तीव्र मुकाबला फिर से शुरू हो गया है। सूरज भान सिंह भी एक कुख्यात भूमिहार एवं बाहुबली नेता हैं।

मोकामा, जो पटना से केवल 70 किलोमीटर दूर स्थित है, एक ऐसे खूनी इतिहास से जूझ रहा है, जो इसके राजनीतिक रूप से ताकतवर व्यक्तियों के जीवन से जुड़ा हुआ है। अनंत सिंह और सूरज भान सिंह, दोनों भूमिहार जाति के कुख्यात व्यक्ति, दशकों से एक हिंसा के उस चक्र में फंसे हुए हैं, जो 1980 के दशक से शुरू हुआ। उनका अतीत गोलीबारी और खून-खराबे से भरा हुआ है, क्योंकि ये लोग सत्ता में अपने बाहुबल और धमकियों के जरिए एक ऐसे राजनीतिक परिदृश्य में पहुँच गये थे, जहाँ बाहुबल अक्सर रणनीति पर हावी रहती थी।

हाल ही में, जन सूराज समर्थक पार्टी के दुलारचंद यादव की हत्या (जो लालू प्रसाद के पुराने सहयोगी थे) ने राजनीतिक गुटों के बीच झड़पों के बीच मोकामा की समकालीन कहानी में एक और काला अध्याय जोड़ दिया। यह घटना, जिसमें अनंत सिंह के समर्थक शामिल थे, न केवल इस क्षेत्र में राजनीतिक जीवन के खतरों को उजागर करती है, बल्कि इस क्षेत्र की निर्दयी राजनीति के रूप को भी एक भयंकर रूप में प्रस्तुत करती है।

जैसे-जैसे पुलिस यादव की मौत की परिस्थितियों की जांच कर रही है, शहर अपनी सांस रोके हुए, अपने हिंसक अतीत और चुनावी बदलाव के अनिश्चित वादे के बीच फंसा हुआ है।

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में एक अजीब परिवर्तन दिखता है, एक ऐसा परिदृश्य, जहां पूर्व दुश्मन अब

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बारह राज्यों में एसआईआर का काम शुरू

नयी दिल्ली, 04 नवंबर। चुनाव आयोग ने कहा कि 12 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का काम शुरू हो गया है।

चुनाव आयोग की ओर से मंगलवार को बताया गया कि बिहार में

- चुनाव आयोग ने मंगलवार को घोषणा की।

एसआईआर के सफल समापन के बाद, इस अभ्यास के दूसरे चरण में नौ राज्यों (छत्तीसगढ़ , गोवा, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल) के लगभग 51 करोड़ मतदाता शामिल होंगे। इसमें तीन केन्द्र शासित प्रदेशों (अंडमान और निकोबार, लक्षद्वीप और पुडुचेरी) के 321 जिले और 1,843 विधानसभा क्षेत्र शामिल होंगे।

उन्होंने कहा कि इन 12 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में एसआईआर के लिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

यदि तुम्हारी कोई निंदा करे तो भीतर ही भीतर प्रसन्न होओ, क्योंकि तुम्हारी निंदा करके वह तुम्हारे पाप अपने ऊपर ले रहा है।

–ब्रह्मानंद सरस्वती

अब सभ्यताओं का नहीं, अर्थ व्यवस्थाओं के बीच संघर्ष का दौर

सूचना, तकनीक और पूंजी के आज के युग में वैश्विक राजनीति का चरित्र तेजी से बदल रहा है। कभी सभ्यताओं, धर्मों या साम्राज्यों के बीच युद्ध होते थे, परंतु 21वीं सदी की दुनिया में यह पूरी तरह बदल रहा है। अब युद्ध हथियारों या विचारधाराओं का नहीं, बल्कि बाज़ार और मुद्रा के प्रभाव क्षेत्र का होने लगा है। अब सभ्यताओं का नहीं, अर्थव्यवस्थाओं के बीच संघर्ष होता है–जहां लक्ष्य भूमि नहीं, बल्कि वैश्विक आर्थिक वर्चस्व है। आज किसी देश की ताकत उसके सैन्य हथियारों से भी बढ़कर उसके जीडीपी, औद्योगिक उत्पादन, स्टार्टअप इकोसिस्टम और तकनीकी प्रभुत्व से मापी जाती है। अब निवेश सम्मेलनों, व्यापार समझौतों और मुद्रा समझौतों से दुनिया के समीकरण तय होते हैं। आधुनिक कूटनीति अब आर्थिक हितों की रखवाली वाली बन चुकी है।यह स्पष्ट हो चुका है कि सभ्यताएं नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्थाएं ही वास्तविक शक्ति केंद्र हैं।

सोवियत संघ के पतन के बाद अमरीका अपने को अधिक सुरक्षित होने की अपेक्षा असुरक्षित महसूस कर रहा है और उसके राष्ट्रपति ट्रम्प अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने में लगे हैं ताकि दुनिया में अमरीका का वर्चस्व बना रहे। अमरीकी मुद्रा डॉलर सिर्फ भरोसे के बल पर टिकी है। इसे हर अर्थशास्त्री जानता है। मगर इसकी वैश्विक स्वीकार्यता है। डॉलर दुनिया की रिज़र्व करेंसी है। तेल और अन्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ज़्यादातर डॉलर में होता है, इसलिए इस मुद्रा की मांग बहुत ऊंची बनी रहती है। मगर डॉलर 'फिएट मनी' है, यानी इसकी कीमत सरकार के भरोसे और आर्थिक नीतियों से तय होती है न कि किसी भौतिक आधार के जैसे सोना। अमेरिकी डॉलर को भरोसा मिलता है अमेरिका के वित्तीय प्रभुत्व, तथा वैश्विक व्यापार में उसकी भूमिका से। इसे बनाए रखने के लिए अमरीका हमेशा ऐसा प्रपंच रचता रहता है जिससे उसकी आर्थिक ताकत सुरक्षित रहे और डॉलर मजबूत बना रहे। सभी देख रहे हैं कि अमरीका अपने डॉलर के प्रभुत्व का राजनीतिक हथियार की तरह उपयोग करता रहा है। अमरिका किसी देश पर प्रतिबंध लगा कर उस देश की डॉलर लेन–देन प्रणाली को रोक सकता है। यह उसकी ताकत है। विश्व बाज़ार में डॉलर पर निर्भरता ऐतिहासिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से है और दुनिया के देशों को व्यापार करते समय इन्हीं कारणों से डॉलर पर निर्भर रहना पड़ता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जुलाई 1944 में अमरीका में न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स स्थित माउंट वाशिंगटन होटल में संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन आयोजित किया गया था, जहां 44 देशों के प्रतिनिधियों ने 'ब्रेटन वुड्स प्रणाली' नामक एक नई अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था स्वीकार की। इस समझौते में तीसरी दुनिया की कोई भागीदारी नहीं थी क्योंकि वे देश तब ब्रिटेन के साम्राज्य के अधीन थे। विश्व युद्ध के कारण पूरा यूरोप ध्वस्त हो चुका था मगर अमरीका उस आंच से बचा रहा था। उस समय अमरिका के पास दुनिया का सबसे बड़ा सोने का भंडार था। इसलिए तय किया गया कि 1/35 औंस सोने का एक डॉलर होगा, और बाकी देश अपनी मुद्राओं को डॉलर से जोड़ेंगे। इस तरह डॉलर विश्व की रिज़र्व करेंसी बन गया। बाद में 1970 के दशक में अमेरिका ने सऊदी अरब और अन्य तेल उत्पादक देशों से अपने निवेश की एवज में समझौता किया कि वे तेल की कीमत डॉलर में तय करेंगे। इससे दुनिया के हर देश को तेल खरीदने के लिए डॉलर की ज़रूरत पड़ने लगी। यह पेट्रोडॉलर सिस्टम कहलाया। इसने डॉलर की अंतरराष्ट्रीय मांग को स्थायी बना दिया। दुनिया के देश अंतर्राष्ट्रीय कारोबार में राशि का निपटान डॉलर में करने लगे। अमेरिकी डॉलर 1/35 औंस सोने की स्थिर विनिमय दर पर परिवर्तनीय था। अमेरिका पर सोने की कीमत स्थिर रखने की ज़िम्मेदारी थी और भविष्य में सोने की परिवर्तनीयता में विश्वास बनाए रखने के लिए उसे डॉलर की आपूर्ति को समायोजित करना पड़ता था। 'ब्रेटन वुड्स प्रणाली' तब तक लागू रही जब तक कि लगातार अमेरिकी भुगतान संतुलन घाटे के कारण डॉलर अमेरिकी सोने के भंडार से अधिक नहीं हो गए, जिसका अर्थ था कि संयुक्त राज्य अमेरिका आधिकारिक मूल्य पर सोने के बदले डॉलर को भुनाने के अपने दायित्व को पूरा नहीं कर पा रहा था। इसलिए अमरीका ने चतुराई की। राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने 1971 में डॉलर को सोने से पूरी तरह अलग कर दिया। उसके बाद डॉलर का मूल्य सोने से नहीं बल्कि अमेरिकी सरकार के भरोसे पर निर्भर हो गया। यह भरोसा अमरीका की अर्थव्यवस्था की ताक़त से बना हुआ है और इसीलिए उसकी वैश्विक स्वीकार्यता बनी हुई है। अब जब विश्व में नई अर्थव्यवस्थाएं महत्वाकांक्षी रूप से उभरने लगी है, अमरीका अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए छटपटा रहा है। जिसके परिपेक्ष्य में उसके राष्ट्रपति ट्रम्प का व्यवहार समझा जा सकता है। कहते हैं प्यार और युद्ध में सब जायज होता है। ट्रम्प के लिए आर्थिक युद्ध में सब जायज है। उनके लिए अब तक बने वैश्विक नियमों का कोई महत्व नहीं है। वे अब अपनी शर्तों पर नयी वैश्विक अर्थ व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रहे हैं। वे अपना आधिपत्य चाहते हैं। वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में अमरीकी साम्राज्यवाद चाहते हैं। एक चतुर व्यवसायी की तरह उन्हें लगता है को अमरीकी आर्थिक साम्राज्यवाद को असली चुनौती यूरोप से नहीं बल्कि एशिया से उभर रही भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं से मिलने वाली है। इस समय जो शतरंज जैसी चालें चली जा रही हैं उन्हें इसी परिपेक्ष्य में बेहतर समझा जा सकता है।

> **भारत ने ऑस्ट्रेलिया, यूएई, यूरोपीय संघ, और आसियान देशों से मुक्त व्यापार समझौतों पर काम शुरू करके अपने निर्यात बाज़ारों का दायरा बढ़ाने का प्रयास किया है। इस नीति से भारत ने न केवल अपने निर्यातकों के लिए नयी राहें बनाई हैं, बल्कि अमरीकी टैरिफ के प्रभाव को भी काफी हद तक कम किया है। भारत ने अमरीका के साथ आर्थिक युद्ध में विवेक, आत्मनिर्भरता और कूटनीति को अपना हथियार बनाया हैं। यह खींचतान लंबे समय तक चल सकती है।**

इन हालात में जहां अमेरिका अपनी डॉलर आधारित अर्थव्यवस्था के वर्चस्व को बनाये रखने की जंग में लगा है। चीन 'मेड इन चाइना' से लेकर 'मेड फॉर वर्ल्ड' तक का सफर तय कर चुका है और अब वह अपनी मुद्रा युआन के अंतरराष्ट्रीयकरण के लिए प्रयत्नशील है। यूरोप यूरो मुद्रा के माध्यम से अपनी वैश्विक व्यापार की ताकत बनाए रखने की जद्दोजहद में लगा है। ऐसे माहौल में अपने आईटी सेवा क्षेत्र तथा 140 करोड़ की आबादी के बड़े बाज़ार के दम पर बढ़ती अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हुए भारत भी बड़ी महत्वाकांक्षा लिए उभर रहा है और अमरीका के आर्थिक साम्राज्यवाद को चुनौति चुनौती दे रहा है। अमरीका द्वारा छेड़ा गया टैरिफ युद्ध की केवल व्यापारिक ही नहीं, बल्कि कूटनीतिक भी है। किंतु भारत जिस संयम, दूरदर्शिता और आत्मनिर्भर नीति के साथ इस संकट का सामना कर रहा है उसे अनेक विश्लेषक वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्मार्ट डिप्लोमेसी का एक उदाहरण मान रहे हैं। भारत का अमेरिका से आर–पार का व्यापारिक युद्ध छेड़ने से बचना जसकी कूटनीतिक जरूरत है, लेकिन उसने यह संदेश भी स्पष्ट रूप से जरूर दिया है कि वह किसी भी आर्थिक दबाव में झुकने वाला देश नहीं है और संवाद और पारस्परिक सम्मान से ही अमरीका के साथ व्यापारिक संबंध आगे बढ़ सकते हैं। कूटनीतिक संतुलन भारत की आर्थिक परिपक्वता का प्रमाण माना जा रहा है।

अर्थ व्यवस्थाओं की वैश्विक जंग के बीच भारतीय रिज़र्व बैंक ने बहुआयामी रणनीति बनाई है जिसमें महंगे डॉलर रूपांतरणों से बचने के लिए एक सामानंतर गतिशील रुपया–रूबल विनिमय तंत्र विकसित करने, भुगतान पुष्टिकरण प्रणालियां स्थापित करने और वैकल्पिक वित्तीय प्लेटफ़ॉर्म तैयार करने की व्यवस्था है। आरबीआई ने पिछली 5 अगस्त को, अधिकृत डीलर श्रेणी–1 बैंकों को पूर्व अनुमोदन के बिना अपने विदेशी सहयोगी बैंकों के लिए विशेष रुपया वोस्ट्रो खाते खोलने की अनुमति दे दी। फिर 12 अगस्त को उसने नियमों में और ढील दी, जिससे वोस्ट्रो खातों में जमा धनराशि को सरकारी प्रतिभूतियों और ट्रेजरी बिलों में स्वतंत्र रूप से निवेश करने की अनुमति मिल गई। वोस्ट्रो खाता एक घरेलू बैंक खाता होता है जो किसी विदेशी बैंक के लिए स्थानीय मुद्रा में खोला जाता है। विशेषज्ञों का कहना है, "वोस्ट्रो खाता रूस के साथ तेल व्यापार को सुगम बनायेगा क्योंकि यह लेनदेन को डॉलर जैसी तृतीय–पक्ष मुद्राओं के माध्यम से परिवर्तित किए बिना सीधे रुपये में निपटाने की सुविधा प्रदान करता है। तेल क्षेत्र में, रूसी निर्यातक इस व्यवस्था के तहत भारतीय बैंकों के वोस्ट्रो खातों में भारतीय रुपये रख सकते हैं, जिससे भारतीय आयातक डॉलर को दरकिनार करते हुए सीधे रुपये में भुगतान कर सकते हैं। यह व्यवस्था मुद्रा रूपांतरण लागत, विनिमय दर जोखिम और भुगतान में देरी को कम करेगी। रूसी संस्थाएं इस व्यवस्था से प्राप्त अतिरिक्त रुपया शेष राशि को भारतीय सरकारी प्रतिभूतियों, बॉन्ड, इक्विटी और बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में भी निवेश कर सकेंगी। इसके अलावा, तीसरे देशों के निर्यात के लिए रुपया शेष राशि का उपयोग करने के भी प्रस्ताव हैं, जिससे रूसी आपूर्तिकर्ता अन्य मुद्राओं में भुगतान प्राप्त करते हुए भारतीय सामान खरीद सकेंगे। इसके साथ ही संयुक्त अरब अमीरात को शामिल करते हुए त्रिपक्षीय निपटान तंत्र पर भी बातचीत चल रही है। भारत ने ऑस्ट्रेलिया, यूएई, यूरोपीय संघ, और आसियान देशों से मुक्त व्यापार समझौतों पर काम शुरू करके अपने निर्यात बाज़ारों का दायरा बढ़ाने का प्रयास किया है। इस नीति से भारत ने न केवल अपने निर्यातकों के लिए नयी राहें बनाई हैं, बल्कि अमरीकी टैरिफ के प्रभाव को भी काफी हद तक कम किया है। भारत ने अमरीका के साथ आर्थिक युद्ध में विवेक, आत्मनिर्भरता और कूटनीति को अपना हथियार बनाया हैं। यह खींचतान लंबे समय तक चल सकती है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि आने वाले सालों में आर्थिक प्रतिस्पर्धा का नया दौर शुरू हो सकता है। भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश उसका इस युद्ध में असली हथियार होगा। अब नया इतिहास अर्थशास्त्री और निवेशक लिखने वाले हैं जो मुद्रा को प्रभावी बनाने वाले योद्धाओं की कहानियां कहेंगे।"

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

गुरु नानकदेव जी

डॉ. जे के गर्ग

गुरु नानक जी ने अपने अनुयायियों को दस उपदेश दिए जो कि सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे। गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। मूर्ति–पूजा आदि निरर्थक है। नाम–स्मरण सर्वोपरि तत्त्व है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत–प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दीं जो इस प्रकार हैं।

ईश्वर एक है। ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है। ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए। बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं। सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए। मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ–लालच व संग्रह वृत्ति बुरी है। सिख ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि गुरु नानक नित्य बेई नदी में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन वे स्नान करने के पश्चात वन में अंतर्ध्यान हो गये। उस समय उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। परमात्मा ने उन्हें अमृत पिलाया और कहा– "मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं, जो तुम्हारे संपर्क में आयेंगे वे भी आनन्दित होंगे। जाओ दान दो, उपासना करो, स्वयं नाम लो और दूसरों से भी नाम स्मरण कराओ।" इस घटना के पश्चात वे अपने परिवार का भार अपने श्वसुर को सौंपकर विचरण करने निकल पड़े और धर्म का प्रचार करने लगे।

उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों की भी यात्राएं की और जन सेवा का उपदेश दिया। बाद में वे करतारपुर में बस गये और 1521 ई. से 1539 ई. तक वहीं रहे। नानक देवजी ने 25 सितंबर, 1539 को अपना शरीर त्याग दिया था। मृत्यु से पहले उन्होंने अपने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जो बाद में गुरु अंगद देव के नामसे जाने गये। नानक देव जी ने कहा– "मोन धारण करके नाम जपो, क्योंकि इसी से मानसिक आध्यात्मिक शक्ति मिलती है और आत्मिक शांति भी।"

सिख हमेशा अपनी आमदनी का दसवा हिस्सा दान–पुण्य में खर्च करे।

सच्चाई तो यही है कि गुरु नानक देवजी एक महान दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मधारक, समाजसुधारक, कवि और देशभक्त थे। वे विश्वबंधुत्व में विश्वास करते थे और उनमें सच्ची मानवता के सभी गुण मौजूद थे। उनके बचपन के समय में कई चमत्कारिक घटनाएं घटी जिससे जन साधारण उन्हें दिव्य व्यकित्व का स्वामी मानते थे। नानकदेव जी वास्तव में आलोलिक श्रेणी के संत महापुरुष थे। गुरु नानक ने बचपन से ही रूढ़िवादिता के विरुद्ध संघर्ष करना शुरू कर दिया था। वे धर्मप्रचारकों को उनकी खामियां बतलाने के लिए अनेक तीर्थ स्थानों पर पहुंचे और लोगों से धर्मांधता से दूर रहने का आग्रह किया। गुरु नानक जंयती पूरे देश में कार्तिक पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है जिसे प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। गुरुनानक सिखों के प्रथम गुरु हैं।

गुरु नानक देवजी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा, संवत् 1526 के दिन हुआ था। कुछ इतिहासकार एवं जानकार गुरुनानक की जन्मतिथि 15 अप्रैल, 1469 मानते हैं। नानक जी का जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी नामक गांव में खत्री कुल में हुआ था। तलवंडी का नाम आगे चलकर नानक के नाम पर ननकाना पड़ गया था। गुरु नानक देव के पिता और माता का का नाम मेहता कालू और तृप्तादेवी था। गुरु नानक को बचपन से ही सांसारिक विषयों में कोई रुची नहीं थी और वे उनसे उनकी उससे विरक्ति थी। उनका अधिकाशं समय आध्यात्मिक चिंतन और सत्संग में व्यतीत होता था। गुरु नानकदेव महान सामाजिक सुधारक थे, उन्होनें सिख धर्म की स्थापना की थी। गुरु नानक जी का विवाह सन् 1487 में माता सुलखनी से हुआ। उनके दो पुत्र थे जिनका नाम श्रीचंद और लक्ष्मीचन्द था। नानक देव जी ने समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने के लिए अनेक यात्राएं की थी। ऐसा कहा जाता है कि नानक देव जी को उनके पिता ने एक बार व्यापार करने के लिए 20 रुपये दिए और कहा 'इन 20 रुपये से सच्चा सौदा करके आओ।' नानक देव जी सौदा करने निकले, रास्ते में उन्हें साधु–संतों की मंडली मिली। नानकदेव जी साधु–संतों को 20 रुपये का भोजन करवा कर वापस लौट आए। पिताजी ने पूछा– 'क्या सौदा करके आए?' उन्होंने कहा– 'साधुओ ईश्वर की सीमाएं और कार्यक्षेत्र संपूर्ण मानव जाति की सोच से परे हैं। सत्य को जानना हर चीज से बड़ा है और उससे भी बड़ा है सच्चाई के साथ आपकी मदद करता है। इसलिए हमें हमेशा दूसरों की मदद के लिए तैयार रहना चाहिये। कर्म भूमि पर फल पाने के लिए कर्म सबको करना पड़ता है। ईश्वर तो सिर्फ लक़ीरें देते हैं पर रंग उनमे हमको ही भरना पड़ेगा है। ईश्वर की हज़ारों आँखें हैं और फिर भी एक भी आँख नहीं। ईश्वर के हज़ारों रूप हैं और फिर भी प्रभुजी निराकार हैं। आप जो भी बीज आज बोयेंगे, उसका फल आपको देर–सबेर जरूर मिलेगा। जब हमारा शरीर मैला हो जाता है तो हम

पानी से उसे साफ़ कर लेते हैं। उसी तरह जब हमारा मन मैला हो जाये तो उसे ईश्वर के जाप और प्रेम द्वारा ही स्वच्छ किया जा सकता है। याद रक्खे कि भगवान के दरबार में सभी कर्मों का लेखा–जोखा रहता है। बिना गुरु के कुछ भी काम अधूरा होता हैं। धन को जेब तक ही रखें उसे हृदय में जगह न दें। जब धन को हृदय में जगह दी जाती है तो सुख शांति के स्थान पर लालच, भेदभाव और बुराइयों का जन्म होता है। धन के भंडार से परिपूर्ण प्रभुत्व वाले सम्राटों की तुलना में वो चींटी महान है जिसके मन में ईश्वर का निवास है। यदि लोग अपने धन का प्रयोग सिर्फ अपने लिए और खजाना भरने के लिए करते हैं तो वह शव की तरह है, लेकिन यदि वे इसे दूसरों के साथ इसे बांटने का निर्णय लेते हैं तो वह प्रभुजी पवित्र प्रसाद बन जाता है। जो व्यक्ति किसी का हक़ छीनता है उसे कही भी सम्मान नहीं मिलता। इसलिए कभी किसी का हक़ नहीं छीनना चाहियें। जिन्होंने प्रेम किया है वो ही लोग परमात्मा को पा सकते है। नानक देव जी के अनुसार एक ओंकार यानी ईश्वर एक है।

गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। मूर्ति–पूजा आदि निरर्थक है। नाम–स्मरण सर्वोपरि तत्त्व है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत–प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दी जो इस प्रकार हैं– "ईश्वर एक है। ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है। ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए। बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं। सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए। मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। .सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ–लालच व संग्रह वृत्ति बुरी है।"

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा

स्पानइल मस्कुलर एट्रोफी: मरीजों के लिए किफायती दवा का रास्ता खुला

उच्च न्यायालय के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की मुहर से दवा के दाम में 97 प्रतिशत राहत

विकास आसावत

हाल ही में भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने स्विस दवा निर्माता रोश कंपनी द्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय के उस आदेश के खिलाफ दायर याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें नैटको फार्मा को स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी के इलाज के लिए उपयोग की जाने वाली दवा रिस्डिप्लाम के जेनेरिक संस्करण बनाने और बेचने की अनुमति दी गई थी। इससे पूर्व इसी वर्ष मार्च में दिल्ली हाई कोर्ट की एकल पीठ ने नैटको फार्मा की रोश के रिस्डिप्लाम सम्बंधित पेटेंट की वैधता के समबन्ध में दी गयी दलील को पेटेंट एक्ट के अनुसार प्रथम दृष्टया तर्कपूर्ण माना और पेटेंट को पूर्व में उनके ही जीनस पेटेंट यौगिक का स्पष्ट जैव समस्थानिक संशोधन माना।

साथ ही कोर्ट ने किसी दुर्लभ बीमारी के इलाज के लिए उपलब्ध एकमात्र दवा की आम जनता के लिए बहुत ही किफायती और प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उपलब्धता को भी फैसले के लिए महत्वपूर्ण कारक माना था। बाद में डिवीजन बेंच ने भी इसी माह फैसला देते हुए एकल न्यायाधीश के निर्णय में हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया।

उच्च न्यायालय की युगल पीठ के फैसले के बाद नैटको फार्मा ने प्रेस रिलीज़ जारी कर बताया कि कंपनी ने रिस्डिप्लाम के जेनेरिक संस्करण को तुरत प्रभाव से व कोर्ट के समक्ष उसकी मंशा अनुरूप दवा को प्रति बोटल 15,900 में जारी करने का निर्णय लिया जो रोश फार्मा द्वारा एवरिस्डी (रिस्डिप्लाम) की प्रति बोतल कीमत लगभग 6 लाख से 97 प्रतिशत कम है। नैटको ने अपने पेशेंट एक्सेस प्रोग्राम के तहत कुछ अधिक जरूरतमंद मरीजों को इस मूल्य पर भी छूट देने की इच्छा जाहिर की है।

स्पानइल मस्कुलर एट्रोफी (एस.एम.ए.) मांसपेशियों से समबन्धित एक दुर्लभ आनुवंशिक विकार है जो एसएमएन1 जीन की डिफेक्टिव प्रतियों के कारण होता है व मोटर न्यूरॉन्स को प्रभावित करता हैं। मोटर न्यूरॉन्स मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में विशिष्ट तंत्रिका कोशिकाएँ होती हैं जो चेहरे, बाहों, पैरों, छाती, गले और जीभ की गति को नियंत्रित करती हैं।

साथ ही बोलने, चलने, निगलने और साँस लेने के लिए प्रयुक्त मांसपेशियाँ की गतिविधि को भी नियंत्रित करती है।

आमतौर पर रिपोर्ट की जाने वाली दुर्लभ बीमारियों (ऑर्फ़न डिजीज) में, लाइसोसोमल भंडारण विकार, गौचर रोग, पोम्पे रोग, फैब्री रोग, स्पानइल मस्कुलर एट्रोफी आदि शामिल हैं। नेशनल रजिस्ट्री फॉर रेयर एंड अदर इनहेरिटेड डिसऑर्डर्स में अब तक 18366 दुर्लभ विकार से ग्रसित मरीजों का पंजीकरण हुआ है जो निश्चित ही वास्तविक संख्या से कम है जबकि भारत में ही प्रति वर्ष लगभग 4,000 नवजात एस.एम.ए. डिसऑर्डर के साथ पैदा होते है।

एस.एम.ए. के संभव इलाज में नवीन उपचारों ने रोगियों के लिए दीर्घायु और जीवन की गुणवत्ता में सुधार का अवसर दिखाया है लेकिन दूर–सुदूर क्षेत्रों में विशेषज्ञों की अनुपलब्धता व ट्रीटमेंट का सामर्थ्य के बाहर होने के कारण बहुसंख्यक परिजनों के लिए चुनौतीपूर्ण है।

उक्त वर्णित रोश फार्मा के रिस्डिप्लाम के अतिरिक्त ज़ोल्गेन्स्मा – दो साल से कम उम्र के बच्चों के लिए एक बार दिया जाने वाला एकमात्र स्वीकृत जीन थेरेपी है जिसकी कीमत लगभग 16 करोड़ है, वही इंजेक्शन नुसिनर्सेन (स्पिनराज़ा) भी एक विकल्प है जिसके प्रत्येक डोज़ की कीमत लगभग 87 लाख है, ही अनुमत उपलब्ध इलाज है।

भारत सरकार द्वारा तिरसठ असाध्य रोगों के उत्कृष्टता केंद्रों में उपचार के लिए प्रति रोगी 50 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता भी एस.एम.ए. के इलाज में नाकाफी है जो प्रति मरीज 16 करोड़ से अधिक हो सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए व दानदाताओं द्वारा स्वैच्छिक दान की सुविधा प्रदान लिए सरकार ने पारदर्शी डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म बनाया गया है। इस पोर्टल पर रोगियों से संबंधित जानकारी, रोग, उपचार की अनुमानित लागत और उपचार करने वाले संस्थानों के बैंक खातों का विवरण उपलब्ध है।

आपातकालीन परिस्थितियों के दौरान भारत सरकार पेटेंट एक्ट में उल्लेखित प्रावधानों प्रयोग का करके दवा व सार्वजनिक स्वास्थ्य से सम्बंधित पेटेंट्स को इस्तेमाल कर या कंपल्सरी लाइसेंस प्रक्रिया में लाकर किफायती दामों पर जेनेरिक दवा को जन उपलब्ध उपलब्ध करा सकती है। सांसद श्री हरीस बीरन भी राज्य सभा में भारत सरकार द्वारा धारा 100 के अंतर्गत क़ानूनी छूट देकर जेनेरिक्स के निर्माण को बढ़ावा देने की बात कह चुके है।

कोर्ट का यह निर्णय बौद्धिक संपदा अधिकारों और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के बीच संतुलन बनाने के न्यायपालिका के निरंतर प्रयास को दर्शाता है। भारत पहले ही यूकेएफटीए व इफटीए जैसे मुक्त व्यापार समझौतो से डाटा एक्सक्लूसिविटी को बाहर रखकर, सस्ती दवा तक आसान पहुंच और न्यूनतम समयावधि में जेनेरिक दवा उपलब्ध कराने के प्रति अपनी नीति पर तटस्थता जाहिर कर चूका है। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने भी देश भर के औषधि नियामकों को दुर्लभ रोगों के इलाज के लिए दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की स्वीकृति प्रक्रिया में तेजी लाने है व ऐसे सभी आवेदनों पर तीन महीने के भीतर कार्रवाई का निर्देश दिए है। चूँकि सार्वजनिक स्वास्थ्य मुख्य रूप से राज्य का विषय है इसलिए केंद्रीय योजनाओ का प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सख्त निगरानी जरुरी है।

पेटेंट एक्ट द्वारा जन स्वास्थ्य सम्बंधित प्रदत शक्तियों का समय समय पर इष्टतम इस्तेमाल, जेनेरिक्स निर्माताओं के लिए विशेष क्षमता निर्माण कार्यक्रम, दुर्लभ रोगों की दवाओं के नमूनों के सरकारी प्रयोगशाला मूल्यांकन को प्राथमिकता, अंतर्राष्ट्रीय दवा निर्माताओं के साथ साझेदारी, अनुसंधान में अधिक निवेश, न्यायालय के जन स्वास्थ्य व दवा के पेटेंट से सम्बंधित निर्णयों की सख्त पालना, केंद्र व राज्य सरकारों के बीच योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए बेहतर तालमेल, क्राउड फंडिंग के बारे में जागरूकता आदि कुछ ऐसे कदम है जो एस.एम.ए. पीड़ितों के लिए उपचार और उनके गरिमापूर्ण जीवन के लिए मील के पत्थर साबित होंगे।

–विकास आसावत,
पेटेंट अटॉर्नी एवं एडवोकेट

राशिफल बुधवार 5 नवम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, बुधवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र प्रातः 9:40 तक, सिद्धि योग दिन 11:28 तक, विष्टि करण प्रातः 8:43 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–तुला, चन्द्रमा–मेष, मंगल–वृश्चिक, बुध–वृश्चिक, गुरू–कर्क, शुक्र–तुला, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज राजयोग प्रातः 9:40 से सायं 6:44 तक है। भद्रा प्रातः 8:43 तक है। आज कार्तिक पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत, गुरू नानक जयन्ती, देव दिवाली है। आज कार्तिक स्नान और भीष्म पंचक व्रत समाप्त होंगे। आज व्यतिपात पुण्य, मन्वादि, त्रिपुरारि पूर्णिमा है। आज अष्टानिका महापर्व पूर्ण होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:27 तक, शुभ 10:48 से 12:10 तक, चर 2:54 से 4:16 तक, लाभ 4:16 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:43, सूर्यास्त 5:38 तक

मेष

मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर–परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। धार्मिक–मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा की स्थिति बनी रहेगी। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सी.एम.से विकास कार्यों पर की चर्चा

बीकानेर, (कासं)।मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने मुलाकात की और विधानसभा क्षेत्र में हो रहे व प्रस्तावित विकास कार्यों पर विस्तार से चर्चा की।

विधायक सारस्वत ने मुख्यमंत्री शर्मा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार द्वारा श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र में निरंतर अनेक विकास कार्य करवाए जा रहे हैं, जिससे आमजन को लाभ मिल रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि क्षेत्र की कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं अभी लंबित हैं, जिन्हें शीघ्र पूर्ण करवाया जाए ताकि जनता को जनहित की सुविधाएं त्वरित गति से मिल सकें।

मुख्यमंत्री ने विधायक सारस्वत को आश्वासन दिया कि श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र में विकास की कई महत्वपूर्ण योजनाओं को जल्द ही पूर्ण किया जायेगा। विधायक सारस्वत ने इस दौरान 650 करोड़ रूपये की जल जीवन मिशन आधारित पेयजल योजना को शीघ्र शुरू करवाने तथा उप जिला चिकित्सालय श्रीडूंगरगढ़ में प्रस्तावित ट्रोमा सेंटर का निर्माण कार्य शीघ्र आरंभ करने का आग्रह किया। शिक्षा, चिकित्सा और प्रशासन से जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों पर भी चर्चा की। रतनगढ़ से बीकानेर नेशनल हाईवे पर राजमार्ग को फोरलेन मार्ग बनाने की मांग केन्द्र सरकार से करने को कहा।

उन्होंने सी.एम.को समर्थन मूल्य पर मूंगफली खरीद में फैले भ्रष्टाचार के मामलों से भी अवगत करवाया और कहा कि जिन किसानों को अभी तक टोकन नहीं मिले हैं, उनकी मूंगफली तुलाई सुनिश्चित की जाए।

वंदे मातरम् 150, सात को जूनागढ़ से निकलेगी प्रभात फेरी

बीकानेर, (कासं)। राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने पर 7 से 15 नवम्बर तक जिले भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने मंगलवार को वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से इसकी समीक्षा की।

संभागीय आयुक्त विश्राम मीणा, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, नगर निगम आयुक्त मयंक मनीष, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी

- **जिला कलेक्टर ने तैयारियों को अंतिम रूप दिया**

सोहन लाल, अतिरिक्त कलेक्टर (नगर) रमेश देव तथा नगर विकास न्यास के पूर्व अध्यक्ष एवं अभियान के संभाग प्रभारी महावीर रांका वीडियो कांफ्रेंस से जुड़े। जिला कलेक्टर वृष्णि ने बताया कि 'वंदे मातरम् 150' के तहत 7 नवम्बर को जिला स्तरीय कार्यक्रम होगा। वहीं 15 नवम्बर तक होने वाले सभी कार्यक्रमों का निर्धारण कर लिया गया है।

उन्होंने बताया कि 7 नवम्बर को प्रातः 7.30 बजे प्रभात फेरी, रन और साइकिल रैली निकाली जायेगी। इसकी शुरूआत जूनागढ़ के आगे से होगी। इसमें एनसीसी, एनएसएस, स्काउट-गाइड, पुलिस के जवान, साइकिल धावक सहित स्कूल-कॉलेज विद्यार्थी भाग लेंगे। इस दौरान शहरी स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि का कार्यक्रम होगा।

बीकानेर कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने वंदे मातरम् प्रभात फेरी की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक को संबोधित किया।

इसके बाद प्रातः 8.30 बजे से रविन्द्र रंगमंच पर जिला स्तरीय समारोह होगा। इसमें राष्ट्र गीत का सामूहिक गायन होगा। साथ ही देशभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जायेगी। इसी दिन सायं 5 बजे आयोजित होने वाली सांस्कृतिक संध्या में बीएसएफ और केन्द्रीय जेल के बैण्ड देशभक्ति के गीतों पर सुमधुर स्वर लहरियां बिखेरेंगे। इस दौरान उपखण्ड एवं ग्राम पंचायत स्तर पर भी राष्ट्रगीत का सामूहिक गायन किया जायेगा।

जिला कलक्टर ने बताया कि 'वंदे मातरम्150' के तहत 10 से 15 नवम्बर तक वंदे मातरम् और स्वदेशी संकल्प कार्यक्रम होंगे। इसके तहत 10 नवम्बर को नगरीय निकायों एवं पंचायती राज संस्थाओं को छोड़कर सभी सरकारी कार्यालयों में, 11 नवम्बर को नगरीय निकायों में, 12 नवम्बर को पंचायती राज संस्थाओं में, 13 नवम्बर को स्कूलों , छात्रावासों और आवासीय विद्यालयों में, 14 नवम्बर को सभी उच्च शिक्षण संस्थाओं में तथा 15 नवम्बर को सभी अस्पतालों और पुलिस थानों में यह कार्यक्रम होंगे।

जिला कलेक्टर ने बताया कि वंदे मातरम् 150 की शुरूआत 7 नवम्बर से लेकर संविधान दिवस 26 नवम्बर तक सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में वंदे मातरम् का सामूहिक वाचन किया जायेगा। अभियान के दौरान चित्रकला, निबंध लेखन और रंगोली प्रतियोगिताएं होंगी। सोशल मीडिया सहित विभिन्न माध्यमों से अभियान का प्रचार-प्रसार किया जायेगा। उन्होंने बताया कि वंदे मातरम् के सम्पूर्ण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए अतिरिक्त कलेक्टर (नगर) रमेश देव नोडल अधिकारी होंगे।

वहीं विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र अनूपगढ़ में विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके चलते निर्वाचन काम में लगे सभी संबंधित कर्मचारियों के अवकाश तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिए गए हैं। इनमें सहायक निर्वाचन रजिस्ट्रेशन अधिकारी, चुनाव शाखा के कार्मिक, बीएलओ, सुपरवाइजर और बूथ लेवल अधिकारी शामिल हैं।

भगवान की सवारी आज निकलेगी

बीकानेर, (कासं)। चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के तत्वावधान में सकल श्रीसंघ के सहयोग से बुधवार को भगवान की सवारी भुजिया बाजार के प्राचीन चिंतामणि जैन मंदिर से सुबह साढ़े नौ बजे गाजे बाजे, भजन मंडलियों के साथ निकलेगी। शाम को चिंतामणि जैन मंदिर में शाम 108 दीपकों की आरती शाम साढ़े छह बजे होगी।

चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष हरीश नाहटा ने बताया कि जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ के गणिवर्य मेहुल प्रभ सागर, मुनि मंथन प्रभ सागर, बाल मुनि मीत प्रभ सागर, बीकानेर की साध्वी दीपमाला व शंखनिधि म.सा., जैन श्वेताम्बर पार्श्व चन्द्र गच्छ की साध्वी पदमप्रभा व सुव्रता के सानिध्य निकलने परमात्मा की सवारी के स्वागत के लिए अनेक जैन बाहुल्य मोहल्लों में स्वागत द्वार व बैनर लगाये तथा सजावट की गई है।

नाहटा ने बताया कि ऐतिहासिक कार्तिक महोत्सव के तहत बीकानेर में भगवान की सवारी निकलती करीब अस्सी वर्ष से अधिक समय से निकल रही है। परमात्मा की सवारी में शामिल आदिश्वर मंडल अपना 75 वां वर्ष मना रहा है। आदिश्वर मंडल, कोचर मंडल, वीर मंडल, महावीर मंडल, जैन मंडल व गौतम मंडल के कलाकार पिछले 15-20 दिनों से परमात्मा की सवारी में प्रस्तुति देने के लिए पूर्वाभ्यास कर रहे है। विभिन्न जैन बाहुल्य मोहल्लों में भजन मंडलियों का ठहराव रहेगा।

सवारी 7 नवम्बर को सुबह साढ़े नौ बजे गोगागेट के गौड़ी पार्श्वनाथ नाथ मंदिर से रवाना होकर चिंतामणि जैन मंदिर में संपन्न होगी।

सार-समाचार

उर्वरक काम में न लेने का संकल्प

किसानों ने रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करने का संकल्प लिया।

बीकानेर, (कासं)। कृषकों को भूमि में उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग करने एवं अनुदानित उर्वरकों का औद्योगिक प्रयोग, राज्य से बाहर परिगमन रोकने के उद्देश्य से कृषकों को जागरूक किये जाने हेतु 'धरती माता बचाओ अभियान' चलाया जायेगा। इसके मद्देनजर मंगलवार को अतिरिक्त निदेशक कृषि (विस्तार) की अगुवाई में कृषि भवन परिसर में कृषि एवं अन्य सम्बद्ध विभाग के अधिकारियों व किसानों को रासायनिक उर्वरकों का उपयोग ना करने व जैविक खेती को बढ़ावा देने तथा धरती माता बचाओ अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने का संकल्प दिलाया गया। इसी श्रृंखला में ही 5 व 20 नवम्बर को आयोजित होने वाली ग्राम सभाओं में प्रतिभागियों व किसानों को धरती माता बचाओ अभियान में सक्रिय भागीदारी हेतु संकल्प दिलाया जायेगा। संकल्प कार्यक्रम में कृषि विभाग के अधिकारी जयदीप दोगने, दीपक कपिला, दर्शन सिंह, रेनू वर्मा, मुकेश गहलोत, मानाराम जाखड़, कविता गुप्ता, विजय कुमार, जोधराज, सतीश गेदर, अशोक साहू, श्यामसुंदर अग्रवाल, धनाराम बेरड, अशोक व्यास, जगबीर बेनीवाल, अनिल चौधरी, शिवदयाल सिंह, रामचंद्र, प्रियदर्शनी, रसपाल मोटा, लीला बिश्नोई, मेघराज, राजीव एवं प्रगतिशील किसान उपस्थित थे।

भक्तामर पाठ आज

सुगनजी महाराज के उपासरे में चातुर्मास के समापन पर प्रवचन देते गणिवर्य मेहुल प्रभ सागर।

बीकानेर, (कासं)। जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के गणिवर्य मुनि मेहुल प्रभ सागर मुनि मंथन प्रभ सागर, बाल मुनि मीत प्रभ सागर, बीकानेर की साध्वी दीपमाला व शंखनिधि में संबोधि चातुर्मास 2025 के समापन पर प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रियाएं मंगलवार को रांगड़ी चौक के सुगनजी महाराज के उपासरे व महावीर भवन में हुई। गणिवर्य, मुनि व साध्वीवृंद बुधवार को चार्तुमासिक स्थान परिवर्तन करेंगे। रांगड़ी चौक के सुगनजी महाराज के उपासरे में मंगलवार को गणिवर्य मेहुल प्रभ सागर ने अंतिम चातुर्मास प्रवचन (देशना) में कहा कि काम, क्रोध, लोभ व मोह आदि कषायों का त्याग कर धर्म-अध्यात्म को मन व अंतकरण से स्वीकार करें। देव, गुरू व धर्म में अपना समर्पण करें। छोटे-छोटे व्रत व नियम लेकर अपने में व्याप्त बुराईयों व कमियों को दूर करें। नित्य आत्म-निरीक्षण व परीक्षण करें। गणिवर्य मेहुल प्रभ सागर म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में बुधवार को सुबह सवा छह बजे रांगड़ी चौक के सुगनजी महाराज के उपासरे में कार्तिक पूर्णिमा पर पालीतणा के शत्रुंज्य तीर्थ के पट चित्र के आगे भाव वंदना व धर्म क्रियाएं की जायेगी। गणिवर्य म.सा. सुगनजी महाराज के उपासरे से प्रस्थान कर सुबह साढ़े छह बजे खजांची मोहल्ले में स्थित खरतरगच्छ युवा परिषद के राष्ट्रीय संरक्षक राजीव खजांची के निवास पर आयोजित भक्तामर स्तोत्र में तथा उसके बाद श्री चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के तत्वावधान में सकल श्रीसंघ के सहयोग से भगवान की सवारी में सानिध्य प्रदान करेंगे। साध्वीश्री दीपमाला व शंखनिधि नाहटा चौक के महावीर डागा निवास पर चार्तुमासिक स्थान परिवर्तन करेंगी।

कोलायत मेले पर चलेंगी स्पेशल ट्रेन

बीकानेर,(कासं)। श्रीकोलायत में बुधवार को लगने वाले कार्तिक पूर्णिमा के मेले के लिए रेलवे ने स्पेशल रेलों का संचालन करेगी। बीकानेर से श्रीकोलायत के बीच चलने वाली इस रेल सेवा के लिए मंडल रेल प्रबंधक ने अलग से शिड्यूल जारी किया है। स्पेशल रेल सेवाओं का संचालन सुबह साढ़े दस बजे शुरू होगा और देर रात तक जारी रहेगा। सड़क मार्ग से जाने के बजाय यात्रियों को रेल से यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। गाड़ी संख्या 04733 बीकानेर- कोलायत अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा पांच नवम्बर को बीकानेर स्टेशन से 10:35 बजे रवाना होकर 10:45 बजे लालगढ़, 11:04 पर नाल, 11:23 बजे गजनेर व 12:00 बजे कोलायत पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04734 कोलायत- बीकानेर अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा पांच नवम्बर को कोलायत से 12:20 बजे रवाना होकर 12:35 बजे गजनेर पहुंचेगी,12:54 पर नाल पहुंचेगी, 13:15 बजे लालगढ़ पहुंचेगी व 13: 50 बजे बीकानेर पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04735 बीकानेर-कोलायत मेला स्पेशल अनारक्षित रेलसेवा पांच नवम्बर को बीकानेर से 16:00 बजे रवाना होकर 16:15 पर लालगढ़ पहुंचेगी, 16:34 पर नाल पहुंचेगी,16:53 बजे गजनेर पहुंचेगी व 17:30 बजे कोलायत पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04736 कोलायत-बीकानेर मेला स्पेशल अनारक्षित रेलसेवा पांच नवम्बर कोलायत स्टेशन से 18:15 बजे रवाना होकर 18:30 बजे गजनेर पहुंचेगी, 18:49 बजे नाल पहुंचेगी।

अब किसानों को ही बताना होगा कि टोकन सही है या फर्जी

बीकानेर, (कासं)। समर्थन मूल्य पर मूंगफली खरीद के मामले में जिला प्रशासन ने फिजिकल वेरिफिकेशन का दावा किया था। लेकिन अब ये विफल हुआ है। अब किसानों को ही बताना होगा कि टोकन सही है या फर्जी।

इसके लिए अब पटवारियों को खेत में भेजने के बजाय खरीद केन्द्रों सहित कई जगह टोकन की लिस्ट रखी गई है। किसान को ही देखकर बताना है कि उसके खेत की रिपोर्ट सही है या गलत। कलेक्टर नमृता वृष्णि ने पिछले दिनों उपखंड अधिकारियों को आदेश दिया था कि वे खेत में पहुंचकर फसल का फिजिकल वेरिफिकेशन करें। हर उपखंड मुख्यालय पर पांच से दस हजार टोकन का वितरण है। इतने खेत में पहुंचकर पटवारी फिजिकल वेरिफिकेशन नहीं कर सके।

- **अब पटवारियों को खेत में भेजने के बजाय खरीद केन्द्रों सहित कई जगह टोकन की लिस्ट रखी गई है**

ऐसे में अब जिला कलेक्टर ने उन लोगों की लिस्ट जारी कर दी है, जिन्होंने टोकन प्राप्त किए हैं। इस लिस्ट को कोई भी किसान केन्द्र पर देख सकता है। अगर उसके खेत की गलत रिपोर्ट की गई है तो इस आशय की शिकायत तुरंत की जा सकेगी। इसके बाद उपखंड अधिकारी जांच करवायेंगे। अगर कोई भी रिपोर्ट गलत पाई जायेगी तो फर्जी टोकन प्राप्त करने वाले के खिलाफ संबंधित थाने में एफआईआर करवाई जायेगी। इसके साथ ही ई मित्र संचालक के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज करवाई जायेगी।

खेत में अधिकांश किसान अपनी फसल ले चुके हैं, ऐसे में अब ये जांच नहीं हो सकती थी कि पहले यहां फसल बुवाई हुई या नहीं। उपखंड अधिकारी ये काम पटवारी से करवाएंगे, जिनके पास पहले से इतना बड़ा क्षेत्र है कि वो सभी टोकन वाले खेतों तक नहीं पहुंच सकता। जल्द ही समर्थन मूल्य पर खरीद शुरू होने वाली है। ऐसे में कम समय में सभी की जांच संभव नहीं है।

कलेक्टर ने आदेश दिए हैं कि सहकारी समिति के खरीद केन्द्रों पर भी टोकन की लिस्ट रखी जायेगी। कोई भी किसान इसकी जांच कर सकता है। उसके खेत में अगर किसी ने गलत टोकन ले रखा है तो उसकी रिपोर्ट सहकारी समिति के जनरल मैनेजर से की जा सकती है। जनरल मैनेजर ही उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करायेंगे।

हथियार तस्करी के तीन आरोपी गिरफ्तार

नाल, (कासं)। पुलिस ने अवैध हथियार तस्करी के एक बड़े नेटवर्क का भंडाफोड़ करते हुए तीन तस्करों को गिरफ्तार किया। यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सिंह सागर के निर्देश पर नाल थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने संयुक्त रूप से की।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों में गिरोह का सरगना मोमराज निवासी रोहीणा, फलोदी, मोनाराम उर्फ मोहनराम निवासी गिराजसर, बज्जू और रेवंतराम निवासी रोहीणा, फलोदी शामिल हैं। इनके तार पूर्व में राठौर ट्रैवल्स की बस में पकड़ी गई चार अवैध पिस्तौल और 30 कारतूस की तस्करी से जुड़े बताये जा रहे हैं।

पुलिस ने सीओ सदर अनुष्ठा कालिया के पर्यवेक्षण में इस नेटवर्क का खुलासा किया। थानाधिकारी विकास विश्नोई के नेतृत्व में हुई इस कार्रवाई में साइबर सेल के एएसआई दीपक यादव की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दंपती ने नहर में लगाई छलांग, पत्नी बची

श्रीविजयनगर, (कासं)। रघुनाथपुरा पंचायत में मंगलवार सुबह एक दंपती ने अनूपगढ़ शाखा नहर में छलांग लगा दी। इस घटना में पत्नी गीता देवी को राहगीरों ने सकुशल बचा लिया जबकि पति राजपाल गेदर लापता है। यह घटना चक 24 एस.डी. स्थित बुर्जी नंबर 40 आरडी के पास सुबह लगभग छह बजे हुई।

घटना की सूचना मिलते ही क्षेत्र में हड़कम्प मच गया। मौके पर मौजूद कुछ राहगीरों ने तुरंत गीता देवी को नहर से बाहर निकाला और उन्हें घर पहुंचाया। हालांकि पति राजपाल गेदर का अब तक कोई सुराग नहीं मिल पाया है। सूचना मिलने पर राजियासर पुलिस और गोताखोरों की टीम घटनास्थल पर पहुंची। उन्होंने तुरंत नहर में तलाशी अभियान शुरू कर दिया। देर शाम तक भी राजपाल गेदर का कोई पता नहीं चल पाया। घटनास्थल पर ग्रामीणों और रिश्तेदारों

- **पति लापता, पुलिस और गोताखोरों का सर्च अभियान जारी**
- **पत्नी को राहगीरों ने सकुशल बचा लिया**

की भीड़ जमा है। मौके से एक मोटरसाइकिल, चप्पल, जूते और एक शॉल बरामद किया गया है। पुलिस का अनुमान है कि दंपती ने नहर में कूदने से पहले ये सामान किनारे पर रखा था। घटना के कारणों का अभी तक स्पष्ट पता नहीं चल पाया है, लेकिन ग्रामीणों के अनुसार दंपती पिछले कुछ समय से मानसिक तनाव में थे। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और लापता राजपाल गेदर की तलाश में अभियान लगातार जारी है।

प्रकाशोत्सव पर निकला भव्य नगर कीर्तन

सूरतगढ़, (कासं)। मंगलवार को गुरूनानक देव के 556 वें प्रकाशोत्सव पर भव्य नगर कीर्तन निकाला गया। सत गुरू नानक प्रगट्या मिटी धुंध जग चानण होआ... जैसे पावन शब्दों, शब्द कीर्तन और बोले सो निहाल, सत श्री अकाल के उद्घोषों से शहर गूंज उठा। इस नगर कीर्तन में हजारों सिख संगत शामिल हुई।

गुरूद्वारा श्री गुरू नानक देव दरबार (आरसीपी कॉलोनी) से पांच प्यारों की अगुआई में यह कीर्तन शुरू हुआ। फूलों से सजी पालकी में गुरू ग्रंथ साहिब विराजमान थे। पालकी के आगे महिला सेवादार झाड़ू लगा रही थी। जबकि पुरूष सेवादार पानी का छिड़काव कर रहे थे। युवा दुपहिया वाहनों पर सवार होकर उत्साह बढ़ा रहे थे। लगभग एक किलोमीटर लम्बे इस नगर कीर्तन में दाढ़ी जत्थे के छिंद्रपाल अर्सी, धर्मशांत अर्सी और केवल सिंह गुरू वाणी का कीर्तन कर संगत को निहाल कर रहे थे। मुख्य मार्गों से गुजरते जुलूस का हर मोड़ पर लोगों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया और चाय-नाश्ते की सेवा प्रस्तुत की। संगत पालकी के समक्ष शीश झुकाकर सुख-समृद्धि की अरदास कर रही थी।

नगर कीर्तन आरसीपी रोड से शुरू होकर कालका माता रोड, चरणसिंह चौक, बसंत बिहार कॉलोनी, रेलवे ओवरब्रिज, मुख्य बाजार और बीकानेर रोड होते हुए गुरूद्वारा सिंह सभा पहुंचा। यहां पुष्पवर्षा की गई। इसके बाद आवासन मंडल कॉलोनी से गुरूद्वारा तेग बहादुर पहुंची।

मूंगफली खरीद की तैयारियों का लिया जायजा

लूणकरनसर, (कासं)। लूणकरनसर एसडीएम दयानंद रूयल ने मूंगफली खरीद की तैयारियों का जायजा लेने के लिए अनाज मंडी का निरीक्षण किया। उन्होंने खरीद प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

एसडीएम ने क्रय विक्रय सहकारी समिति के अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अपनी फसल आसानी से बेच सकें। मूंगफली का एमएसपी 6783 रूपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। उपखंड अधिकारी रूयल ने अनाज मंडी में उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया। व्यापार मंडल अध्यक्ष विनोद चौपड़ा ने किसानों और व्यापारियों की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया।

'शिथिलता के कारण एमओयू का क्रियान्वयन लंबित नहीं रहे'

बीकानेर, (कासं)। राइजिंग राजस्थान के दौरान राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड से संबंधित एमओयू के क्रियान्वयन में आ रही बाधाओं के निवारण, संबंधित विभागों से समन्वय तथा इनमें और अधिक गति लाने के उद्देश्य से बोर्ड की ओर से मंगलवार को होटल सागर में 'एमओयू ग्राउंड ब्रेकिंग एक्सीलरेशन मीट प्रोग्राम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बीकानेर, चूरू और नागौर जिले के निवेशक मौजूद रहे।

कार्यक्रम में राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड के प्रशासक राजेश चौहान मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि राइजिंग राजस्थान के दौरान हुए प्रत्येक एमओयू का क्रियान्वयन राज्य सरकार

- **राइजिंग राजस्थान के दौरान एमओयू करने वाले निवेशकों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो, इसके मद्देनजर विभिन्न जिलों में ऐसे सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं**

की सर्वोच्च प्राथमिकता में है। मुख्यमंत्री तथा मुख्य सचिव स्तर पर इनकी नियमित समीक्षा होती है। उन्होंने कहा कि राइजिंग राजस्थान के दौरान एमओयू करने वाले निवेशकों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो, इसके मद्देनजर विभिन्न जिलों में ऐसे सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं।

चौहान ने कहा कि अधिकारी इसकी गंभीरता को समझें और समयबद्धता के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि सभी मंडियों के सचिव, संबधित निवेशक से समन्वय रखें। किसी भी स्थिति में कार्यालय की शिथिलता के कारण एमओयू का क्रियान्वयन लंबित नहीं रहे। इस संबंध में किसी भी विभाग से समन्वय करवाना है, तो वह कार्य भी कृषि विणपन बोर्ड के अधिकारियों द्वारा किया जाए। उन्होंने कहा कि सरकार इन एमओयू के क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है, निवेशक भी वैसी ही गंभीरता दिखाएं।

एसआईआर : घर-घर पहुंच बीएलओ ने शुरू किया सर्वेक्षण कार्य

बीकानेर, (कासं)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम (एसआईआर): 2026 के तहत बीएलओ द्वारा घर-घर पहुंचकर सर्वेक्षण का कार्य मंगलवार को शुरू किया गया।

पहले दिन जिले के 1 हजार 638 बूथ लेवल अधिकारी जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं के घर पहुंचकर गणना प्रपत्र वितरण एवं भरने का काम शुरू किया। यह कार्य 4 दिसम्बर तक चलेगा। इस दौरान जिले के 18 लाख 36 हजार 728 मतदाताओं तक पहुंचने का लक्ष्य रहेगा। जिला निर्वाचन अधिकारी नम्रता वृष्णि ने बताया कि बीएलओ द्वारा घर-घर पहुंचकर आंशिक रूप से भरे हुए गणना प्रपत्र की दो प्रतियां दी जायगी। गत एसआईआर की मतदाता सूची से वर्तमान मतदाताओं की सूचनाएं लेकर

बीकानेर पंचायत समिति सभागार में न्यूनतम मैपिंग वाले बीएलओ को प्रशिक्षण देते अतिरिक्त जिला निर्वाचन अधिकारी मयंक मनीष।

मैपिंग में मतदाताओं की सहायता की जायेगी। उप जिला निर्वाचन अधिकारी सुरेश कुमार यादव ने बीकानेर पूर्व विधानसभा के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर बीएलओ द्वारा किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि सभी निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को भी क्रॉस वेरिफिकेशन के लिए निर्देशित किया। साथ ही

- **जिले में 4 दिसम्बर तक 18 लाख से अधिक मतदाताओं तक पहुंचने का लक्ष्य**

बीएलओ को वितरित किये गए गणना प्रपत्रों की एंट्री बीएलओ ऐप पर करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी सुपरवाइजर्स को भी अतिरिक्त गंभीरता से कार्य करने के निर्देश दिए।

बीकानेर पूर्व और पश्चिम विधानसभा क्षेत्र में न्यूनतम मैपिंग वाले तीस-तीस बीएलओ का प्रशिक्षण मंगलवार को पंचायत समिति सभागार में आयोजित किया गया। इस दौरान अतिरिक्त जिला निर्वाचन अधिकारी मयंक मनीष, बीकानेर पूर्व विधानसभा क्षेत्र की निर्वाचक पंजीयन अधिकारी महिमा कसाना मौजूद रही।

शिविर में 33 यूनिट रक्तदान

अनूपगढ़, (कासं)। वार्ड नंबर 30 स्थित श्री मुक्ति साहिब गुरूद्वारे में मंगलवार को श्री गुरूनानक देव के प्रकाश पर्व के अवसर पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। गुरूद्वारा कमेटी द्वारा आयोजित इस शिविर में स्थानीय साध-संगत ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

गुरूद्वारा कमेटी के प्रधान अजमेर सिंह ने बताया कि इस रक्तदान शिविर में लाजवंती ब्लड बैंक ने अपनी निशुल्क सेवाएं प्रदान की। जबकि एचडीएफसी बैंक का भी विशेष सहयोग रहा। शिविर की शुरूआत गुरू ग्रंथ साहिब के समक्ष अरदास के साथ की गई।

रक्तदाताओं के लिए शुगर, ब्लड प्रेशर, ब्लड ग्रुप और एचबी की निशुल्क जांच की सुविधा भी उपलब्ध थी। सेवादार हरप्रीत सिंह ने जानकारी दी कि दोपहर 3:30 बजे तक 33 यूनिट रक्त का संग्रहण किया जा चुका था। रक्तदान करने वालों को गुरूद्वारा कमेटी की ओर से प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

क्रमांक- LU2012/SGN/2025-26/101458 **लोक सूचना** दिनांक- 04.11.2025

श्रीमती लवली कथूरिया पत्नी श्री सतीश कुमार निवासी 6-जे-32 वार्ड नं. 36, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का आवासीय प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात् -

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं./भूमि का विवरण	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
1.	चक 4 ई छोटी तहसील व जिला श्रीगंगानगर	श्रीमती लवली कथूरिया पत्नी श्री सतीश कुमार	चक 4 ई छोटी मुरब्बा नं. 39 के किला नं. 2/1 में 0.2230 है. किला नं. 3 में 0.2530 है. किला नं. 4 में 0.2530 है. किला नं. 5/1 0.0950 है. किला नं. 5/2 में 0.1580 हैक्टे. किला नं. 8 में 0.2530 हैक्टे. किला नं. 9/2 में 0.1520 हैक्टे. यथाकुल 1.3870 हैक्टेयर	कुल 1.3870 हैक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारो के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर एसएसओ आईडी से लॉग इन कर **90-A For Development Authority (UDH)** आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नही है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज .... को जारी की गयी। - प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

क्रमांक- LU2012/SGN/2025-26/101459 **लोक सूचना** दिनांक- 04.11.2025

श्री सतीश कुमार पुत्र श्री नरेश कुमार निवासी 6-जे-32 वार्ड नं. 36, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का आवासीय प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात् -

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं./भूमि का विवरण	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
1.	चक 4 ई छोटी तहसील व जिला श्रीगंगानगर	श्री सतीश कुमार पुत्र श्री नरेश कुमार	चक 4 ई छोटी मुरब्बा नं. 39 के किला नं. 7/2 में 0.1265 हैक्टे. यथाकुल 0.1265 हैक्टेयर	कुल 0.1265 हैक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारो के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर एसएसओ आईडी से लॉग इन कर **90-A For Development Authority (UDH)** आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नही है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज .... को जारी की गयी। - प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक :- नियमन/ 2025/ 4469 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 31/10/2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री हरपिन्द्र सिंह पुत्र श्री भरपूर सिंह निवासी चक धर्मसिंहवाला, 12 बीएनडब्ल्यू तहसील सादुलशहर जिला श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखण्ड का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में न्यास रिकॉर्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है :-

न्यास रिकॉर्ड के अनुसार भूखण्ड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखण्ड के नामान्तरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
भूमि का विवरण	मूल भूखण्डधारी	दस्तावेज का विवरण
चक 3 एमएल मुरब्बा नं. 15 किला नं. 1, 2 में माप 30 इन्टू 60 फीट भूखण्ड संख्या डी-40 रिद्धि-सिद्धि इन्कलेव-2 श्रीगंगानगर	उक्त भूखण्ड का नियमन पट्टा संख्या 8386 दिनांक 21.12.2009 को श्रीमती नीता ग्रोवर पत्नी श्री अनिल ग्रोवर के नाम से जारी किया हुआ है।	श्री हरपिन्द्र सिंह द्वारा पंजीकृत बैयनामा दिनांक 18.09.2014 की प्रति प्रस्तुत कर उक्त भूखण्ड के नामान्तरण बाबत न्यास में ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गया है इस सम्बन्ध में श्री हरपिन्द्र सिंह पुत्र श्री भरपूर सिंह निवासी चक धर्मसिंहवाला, 12 बीएनडब्ल्यू, तहसील सादुलशहर जिला श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज/फ्री लीज होल्ड पट्टे के संबंध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/ उजर/ दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास/ हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिये कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा एवं कोई आपत्ति/ उजर स्वीकार नहीं होगा। आवेदन संख्या:- SGNR/FY25-26/MUT/887 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

अवैध शराब समेत दो गिरफ्तार

रामसिंहपुर, (निसं)। पुलिस ने अवैध शराब के खिलाफ अभियान चलाते हुए दो अलग-अलग मामलों में दो युवकों को गिरफ्तार किया है। इन कार्रवाइयों के दौरान 10 लीटर अवैध हथकढ़ शराब बरामद की गई। यह कार्रवाई थानाधिकारी अजय कुमार के निर्देश पर की गई। पहली कार्रवाई में हेड कॉन्स्टेबल गुलाब सिंह ने रेडबगी फाटक के पास से अंकुश पुत्र जरनैल सिंह को पकड़ा। उसके पास से 5 लीटर अवैध हथकढ़ शराब जब्त की गई। वहीं, दूसरी कार्रवाई में हेड कॉन्स्टेबल वीरेंद्र सिंह ने राजेन्द्र उर्फ राजू पुत्र चंद्रभान मेघवाल को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से भी 5 लीटर अवैध हथकढ़ शराब बरामद हुई। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पांच साल की बच्ची से दुष्कर्म के आरोपी मौलवी को आजीवन कारावास

आरोपी मौलवी ने मिठाई का लालच देकर बच्ची को मस्जिद में ले जाकर दुष्कर्म किया था

- **जज ने कहा कि 5 साल की छोटी उम्र खिलौनों से खेलनी की होती है, ऐसी दरिंदगी जघन्य अपराध है, जिसमें किसी भी प्रकार की नरमी नहीं बरती जा सकती है**
- **पीड़िता को मुआवजा दिलाने के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अलवर को अनुशंसा भेजी है**

अलवर, (निसं)। अलवर में पांच साल की मासूम बच्ची से रेप करने के दोषी मौलवी को अंतिम सांस तक कठोर आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। आरोपी पर साढ़े 6 लाख का जुर्माना भी लगाया है। आरोपी ने मिठाई का लालच देकर बच्ची के साथ वारदात की थी।

विशिष्ट पॉक्सो न्यायालय संख्या-2 की जज शिल्पा समीर ने आरोपी को सजा सुनाते हुए कहा कि 5 साल की छोटी उम्र खिलौनों से खेलनी की होती है। ऐसी दरिंदगी जघन्य अपराध है, जिसमें किसी भी प्रकार की नरमी नहीं बरती जा सकती है।

सरकारी वकील पंकज यादव ने बताया कि पीड़िता के पिता ने सितंबर 2024 को रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। रिपोर्ट में बताया कि 22 सितंबर 2024 को मौलवी उसकी 5 साल की बेटी को मिठाई देने के बहाने मस्जिद में ले गया था। आरोपी ने मस्जिद में ही वारदात को अंजाम दिया। बच्ची की मां के मौके पर पहुंचने पर आरोपी फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी को बस स्टैंड से दबोचा था। वह वारदात के बाद बस और अन्य वाहनों से भागने की फिराक में था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ चार्जशीट कोर्ट में पेश की। अभियोजन पक्ष ने कोर्ट में 16 गवाह और 18 दस्तावेजी सबूत पेश किए। कोर्ट ने सबूतों, मेडिकल रिपोर्ट और एफएसएल सबूत के आधार पर आरोपी को दोषी ठहराया। कोर्ट ने आरोपी को आजीवन कठोर कारावास और अर्थदंड से दंडित किया। इसके अलावा पीड़िता को मुआवजा दिलाने के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अलवर को अनुशंसा भेजी है।

डोरबेल बजाने पर बालक को पीटा

भीलवाड़ा, (निसं)। एक बच्चे का डोरबेल बजाना एक व्यक्ति को इतना नागवार गुजरा कि एक दो नहीं बल्कि आठ थप्पड़ मारे। वारदात करने वाला डॉक्टर बताया जा रहा है। डॉक्टर यानी एक सभ्य व्यक्ति जो बच्चे की नादानी पर इतना भड़क गया कि इंसानियत ही भूल गया। घटना रायला के राजस्थान ग्रामीण बैंक के पास स्थित निजी क्लिनिक के बाहर हुई है। वीडियो में थप्पड़ मारने वाला व्यक्ति डॉक्टर रंजीत मंडल है। पीड़ित बच्चे के पिता ने थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है। बच्चे को मानसिक और शरीरिक ज़ख़्म देने वाले डॉक्टर मंडल ने अलग से सफाई पेश की है कहा कि ये बच्चा रोजाना डोरबेल बजा कर भाग जाया करता था।

करोड़ों के मादक पदार्थ के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

- **एक स्कॉर्पियो जब्त, मणिपुर से मादक पदार्थ लेकर आ रहे थे**

दौसा, (निसं)। मेहंदीपुर बालाजी के पास खेड़ा पहाड़पुर में एजीटीस और एसओजी ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए 10 किलो 692 ग्राम मादक पदार्थ पकड़ा है। साथ ही दो तस्करों को गिरफ्तार कर एक स्कॉर्पियो को भी जब्त किया है। तस्कर मणिपुर से मादक पदार्थ लेकर आ रहे थे। इसकी कीमत करोड़ों में आंकी गई है।

जानकारी के अनुसार एजीटीएस और एसओजी की टीमें पांच बोलेरो में भरकर जयपुर से खेड़ा पहाड़पुर के पास पहुंची, जहां कई घंटे तक कार्रवाई की गई। दौसा पुलिस के एएसपी हेमंत कलाल व मेहंदीपुर बालाजी थानाधिकारी गौरव प्रधान भी पहुंचे। मादक पदार्थ और तस्करों को पकड़कर मेहंदीपुर बालाजी थाने लाया गया। एडीजी दिनेश एमएन के निर्देश पर मादक पदार्थों के खिलाफ हुई यह कार्रवाई जिले में अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई बताई जा रही है।

एसपी सागर राणा ने बताया कि करोड़ों की कीमत का 10 किलो 692 ग्राम मादक पदार्थ पकड़ा गया है। दो तस्कर गिरफ्तार किए हैं और उनकी स्कॉर्पियो गाड़ी को जब्त कर लिया गया है।

45 किलो डोडा-चूरा समेत आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। नारकोटिक्स टीम ने मादक पदार्थ विरोधी अभियान के तहत मुखबिर की सूचना पर कार्यवाही करते हुए छोटी सादड़ी बस स्टैंड से सेमरदा करुंडा रोड़ के बीच एक मारुति ऑल्टो कार को रोककर तलाशी के दौरान 45.520 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा बरामद कर एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उक्त कार्रवाई केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो के उप नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल के निर्देशन में की गई।

उपनारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति राजस्थान नम्बर वाली मारुति ऑल्टो कार में छोटी सादड़ी बस स्टैंड से सेमरदा करुंडा रोड़ तक अवैध डोडा-चूरा ले जा रहा है। सूचना पर सीबीएन प्रतापगढ़ सेल के अधिकारियों की एक टीम गठित की गई और टीम को रवाना किया गया। गठित टीम ने संदिग्ध मार्ग पर कड़ी निगरानी रखी, टीम ने संदिग्ध वाहन की पहचान करने के बाद उसे रोक लिया। उप नारकोटिक्स आयुक्त ने बताया कि टीम ने मौके पर कार की तलाशी ली तो कार में 45.520 किलोग्राम अवैध डोडा चूरा बरामद हुआ। टीम ने मौके पर कानूनी औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद, बरामद डोडा चूरा को वाहन सहित जब्त कर लिया और एनडीपीएस एक्ट में कार्यवाही करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से सफल स्पीड ट्रायल

- **पश्चिम-मध्य रेलवे के कोटा मंडल में स्वदेशी तकनीक से निर्मित वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का उच्च गति परीक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण**

कोटा, (निसं)। पश्चिम-मध्य रेलवे के कोटा मंडल में स्वदेशी तकनीक से निर्मित वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का उच्च गति परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया गया। यह ट्रायल अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन (आरडीएसओ), लखनऊ की परीक्षण निदेशालय टीम द्वारा 2 नवम्बर से प्रारंभ किया गया है, जो 17 नवम्बर तक चलेगा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि यह परीक्षण सवाई माधोपुर-कोटा-नागदा खंड पर 16 कोच वाले वंदे भारत स्लीपर रेक के माध्यम से किया जा रहा है। ट्रेन को अधिकतम 180 किलोमीटर प्रति घंटे की गति पर चलाकर उसकी तकनीकी दक्षता, ब्रेकिंग क्षमता, स्थिरता, कंपन तथा यांत्रिक व विद्युत प्रणालियों की विश्वसनीयता की जाँच की जा रही है। आरडीएसओ के परीक्षण निदेशक राधेश्याम तिवारी के निर्देशन में यह ट्रायल वास्तविक यात्री भार के समान परिस्थितियों में किया गया। रेक को पूर्ण लोडेड स्थिति में चलाया गया, जिसमें 800 टन रेक भार के अतिरिक्त 108 टन अतिरिक्त भार (50-50 किलोग्राम लोहे की धूल से भरे कनस्तरों के रूप में) जोड़ा गया। इस प्रकार कुल 908 टन भार के साथ ट्रेन का संचालन कर इसे वास्तविक ऑपरेशनल स्थिति में परखा गया। यह परीक्षण भारतीय रेल के इंजीनियरिंग कौशल और तकनीकी क्षमता का प्रमाण है।

रोहलखुर्द-लबान स्टेशनों के मध्य 180 किमी प्रति घंटे की गति से 50 किलोमीटर तक लॉन्ग कंफर्मेटरी रन (एलसीआर) सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इसके अतिरिक्त ऑसिलेशन टेस्ट और वेट ट्रैक इमरजेंसी ब्रेकिंग टेस्ट जैसे महत्वपूर्ण तकनीकी परीक्षण भी किए गए, जिनका उद्देश्य उच्च गति पर ट्रेन की स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करना था। इस ट्रायल में आरडीएसओ के परीक्षण निदेशक राधेश्याम तिवारी के अतिरिक्त, मुख्य लोको निरीक्षक रामनिवास मीणा, यातायात निरीक्षक संदीप दुबे, लोको पायलट पंचम सिंह, अभिनंद त्रिगुनयक, राजेश भाटजीवाल, पी.के. जैन एवं ट्रेन प्रबंधक धर्मेन्द्र कुमार सैनी सहित तकनीकी विशेषज्ञों का योगदान रहा। वंदे भारत स्लीपर रेक नवीनतम डिज़ाइन की संशोधित बोगियों से सुसज्जित है, जो उच्च गति पर भी अधिक स्थिरता और आराम प्रदान करती हैं। यह ट्रायल मिशन रफ्तार और मिशन गति शक्ति के तहत भारतीय रेल के उच्च गति नेटवर्क की दिशा में एक निर्णायक कदम है।

शादी वाले घर में दो सिलेण्डर ब्लास्ट, 13 लोग घायल

घायलों में नौ का एमडीएम और तीन का एमजीएच में इलाज चल रहा है, दो की हालत गंभीर

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में शादी वाले घर में एक के बाद एक दो सिलेंडर ब्लास्ट हो गये। हादसे में 13 लोग घायल हो गए। घायलों में नौ का एमडीएम और तीन का एमजीएच में इलाज चल रहा है। इनमें दो की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसा बावड़ी के पास हरढाणी में मंगलवार शाम हुआ। हादसे में दूल्हा महेंद्र भी झुलस गया है। महेंद्र की 15 नवंबर को शादी है।

एएसपी भोपालसिंह लखावत ने बताया कि खेड़ापा थाना क्षेत्र के एक मकान में कंस्ट्रक्शन का काम चल रहा था। इस दौरान गैस वेल्डिंग हो रही थी, चिंगारी उछल गई। इस वजह से सिलेंडर में आग लग गई और विस्फोट हो गया।

हादसे में घायल एक व्यक्ति ने बताया कि उसके नाक और मुंह पर चोट लगी है। पता ही नहीं चला कि सीएनजी गैस की टंकी फटी या सिलेंडर ब्लास्ट हुआ। तेज धमाका हुआ और कुछ पत्थर जैसे आकर गिरे। मुझे कैसे चोट लगी पता ही नहीं चला। एकदम से धुआं हो गया था। हादसे में छोटू सिंह, अजमाल सिंह, दिनेश, राकेश, निवासी सेवकी कल्ला, बुधाराम निवासी हरढाणी, अजमाल सिंह निवासी हरढाणी, गणपत राम निवासी हरढाणी, ओमाराम निवासी हरढाणी, रामदास, सुनील निवासी पूसाराम हरढाणी, महिपाल निवासी हरढाणी घायल हुए हैं।

बनास नदी में डूबे युवक का शव मिला

- **युवक का तीन दिन बाद 10 किलोमीटर दूर मिला**

टोंक, (निसं)। मेहंदवास थाना क्षेत्र में बह रही बनास नदी में नहाते समय डूबे युवक का शव चौथे दिन मंगलवार को घटना स्थल से करीब 10 किलोमीटर दूर बरामद किया गया।

एसडीआरएफ टीम ने बताया कि बीते शनिवार को दोस्तों के साथ बनास नदी पर नहाने आये राकेश कीर पुत्र रमेश कीर (28) निवासी थली जो बनास नदी पर स्थित मंदिर के पीछे बने घाट पर नहाने के लिए उतरा था, तभी से वह मौके से लापता होने पर दोस्त घबरा गए। बाद में सूचना पर परिजन व मेहन्दवास थाना पुलिस पंहुची तथा पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की मदद से उसकी तलाश की लेकिन नहीं मिला। फिर रविवार को एसडीआरएफ टीम को अजमेर से बुलाया गया। टीम ने तीन दिन तक लगातार तलाश की। लेकिन लापता युवक नहीं मिला। मंगलवार को टीम के प्रयास से युवक का शव घटनास्थल से दस किमी दूर बनास नदी के अमीनपुरा रपटे के पास नजर आया, जिसे निकालकर पुलिस को सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों के सौंप दिया।

अवैध माल परिवहन के खिलाफ भीलवाड़ा गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन सख्त

भीलवाड़ा गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की विशेष बैठक में बस दुर्घटनाओं को लेकर चर्चा की

- **ट्रांसपोर्ट नगर में अवैध माल परिवहन को ट्रेवल्स और वीडियोकोच के माध्यम से पूर्ण रूप से बंद करने पर सभी की सहमति रही**

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की विशेष बैठक संपन्न हुई, जिसमें बस दुर्घटनाओं की लगातार हो रही घटनाओं पर गंभीर चर्चा की गई। एसोसिएशन ने इन दुर्घटनाओं और अवैध माल परिवहन (लदान) को रोकने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं।

अध्यक्ष विश्वबन्धु सिंह राठौड़ ने बताया कि बस दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए 70 सदस्यों की एक कमेटी का गठन किया गया है और इसे सात टीमों में विभाजित किया गया है। साथ ही ट्रांसपोर्ट नगर में अवैध माल परिवहन को ट्रेवल्स और वीडियोकोच के माध्यम से पूर्ण रूप से बंद करने पर सभी की सहमति रही। सचिव सुनील सोडाणी ने बताया कि आज ही एसोसिएशन की टोलियों ने उन तमाम ट्रांसपोर्टरों और ट्रैवल संचालकों को पाबंद किया गया जो अवैध बुकिंग कर रहे थे। इस दौरान दो ट्रावेल्स एजेन्सी के यहां गाड़ी भरी हुई पकड़ी गई। डीटीओ को बुलाकर चालान करवाया गया और माल तथा गाड़ी को सीज़ कर दिया गया है। एसोसिएशन ने सख्त रुख अपनाते हुए भविष्य में भी अवैध माल लदान के खिलाफ सख्ती से पेश आने की चेतावनी दी है।

कोषाध्यक्ष केशव भुरानी ने बताया कि एसोसिएशन ने सभी व्यापारियों से अनुरोध किया है कि वे अपना माल ट्रेवल्स या वीडियोकोच में न देकर ट्रांसपोर्ट एजेंसी को ही दें। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो उनके माल के नुकसान, हर्जे-खर्चे की जिम्मेदारी उनकी स्वयं की होगी। ट्रेवल्स की आड़ में या कार्गो की आड़ में जो ट्रेवल्स चलाए जा रहे हैं, उन्हें तुरंत बंद करें, अन्यथा टूट-फूट की जिम्मेदारी उनकी होगी।

एसोसिएशन के अध्यक्ष विश्वबन्धु सिंह राठौड़ ने बताया कि अवैध लदान की यह लड़ाई कई सालों से लड़ रहे हैं और आज की स्थिति में सरकार, प्रशासन और आम जनता उनके साथ हैं। भविष्य में ऐसी दुर्घटनाएं न हों, इसके लिए एसोसिएशन लगातार सक्रिय रहेगी और नियमों का उल्लंघन करने वालों को भारी नुकसान भुगतने की चेतावनी देती है। इस बैठक में सुनील सोडाणी, ज्ञानचंद तातेड़, दिलीप जैन, रतन मीणा, किशोर नानेचा, दीपक सोगानी, अरिहंत जैन, राहुल कटारिया, पिंटू सिंह, गोपाल शर्मा, सत्यवीर यादव सहित भीलवाड़ा गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के सदस्य, कार्यकारिणी समिति और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बाँसवाड़ा सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि., बाँसवाड़ा

क्रमांक :- 2025-26/ एफ/524 — दिनांक :- 01/11/2025

ई-निविदा सूचना वर्ष-2/2025-26

बांसवाडा सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि. बांसवाडा द्वारा अर्न्तगत e-Bid for Procurement of Ration items- Wheat Atta, Wheat, Rice Basmati, Poha, Pules, Spices, Jeera, Sabat Chana, Kabuli, Moong, Soyabean Oil, Ghee Desi, Bath Soap, Washim Soap, Oil Base Soap, Toothpaste, ToothBrush, Hair Oil, Biscuit etc. के लिए इच्छुक बोलीदाताओं से दिनांक 01.12.2025 को सायः 05.00 बजे तक ऑनलाईन निविदा आमन्त्रित की जाती है। निविदा में वर्णित कार्य से सम्बन्धित विवरण व अन्य शर्ते बेवसाईड http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। उपापन हेतु NIB Code- CMF2526A0082, UBN No. CMF2526GLOB00107 है।

राज.संवाद/सी/25/13103 — महाप्रबंधक

कार्यालय नगर पालिका मण्डल विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़)

Ph. 01422-243929 — Email- viratnagar.jaipur@yahoo.com

क्रमांक: न.पा.वि. / 2025 / 1646 — दिनांक : 30.10.2025

-: ई-निविदा सूचना/2025-26 :-

नगर पालिका विराटनगर द्वारा निम्नलिखित कार्य की ई- निविदायें आमंत्रित की जाती है जिसका विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eprocurement.gov.in पर भी उपलब्ध है तथा कार्यालय समय में सूचना बोर्ड पर भी देखा जा सकता है।

Sr. No.	NIB Code	UBN No.
1.	DLB2526A7542	DLB2526WSOB22824
2.	DLB2526A7542	DLB2526WSOB22825

राज.संवाद / सी / 25 / 13077 — अधिशाषी अधिकारी, नगर पालिका विराटनगर

कार्यालय नगर पालिका, खेजरोली-जयपुर (राज.)

क्रमांक / न.प. खेज. / 2025 / 1090 — दिनांक 30.10.2025

ई-निविदा आमंत्रण सूचना

नगर पालिका कार्यालय खेजरोली द्वारा आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु दर संविदा के माध्यम से कार्य करवाने हेतु उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंन्ट प्रकिया द्वारा ई-निविदा आंमत्रित की जाती हैं। निविदा सूचना एवं शर्तें http://sppp.rajasthan.gov.in पर NIB Code DLB2526A7613 तथा पर डाउनलोड कर देखा जा सकता है।

UBN NO :	
	DLB2526WSRC23072
	DLB2526WSRC23073
	DLB2526WSRC23074
	DLB2526WSRC23075
	DLB2526WSRC23076
	DLB2526WSRC23077
	DLB2526WSRC23078

राज.संवाद / सी / 25 / 13047 — अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका खेजरोली

राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड

निविदा सूचना

220/132 केवी, 100 एमवीए गैस फिल्ड पावर ट्रांसफार्मर टेंक का एसेसरीज और ऑयल ड्रम सहित 220 केवी जीएसएस मण्डावर से 220 केवी जीएसएस दूनी जिला टोंक तक लोडिंग, अनलोडिंग एवं शिफ्टिंग सहित ट्रांसपोर्टेशन के कार्य, 132 केवी डीसी सवाई माधोपुर-लाखेरी-केशोराय पाटन की लोकेशन संख्या 572 (DA+0) से लोकेशन संख्या 573 (DA+0) तक संशोधन कार्य कुस्तला देवपुरा बाईपास रेल्वे ट्रेक चेनेज नं. 4/1-2 के बीच (मैसर्स रेल्वे का डिपॉजिट कार्य), 132 केवी एससी सवाई माधोपुर-उनियारा लाइन की लोकेशन संख्या 7 (SA+0) से लोकेशन संख्या 8 (SA+0) तक कुस्तला देवपुरा बाईपास रेल्वे ट्रेक चेनेज के मध्य में (मैसर्स रेल्वे का डिपॉजिट कार्य) संशोधन के कार्य, 132/33 केवी, 20/25 एमवीए ऑयल फिल्ड पावर ट्रांसफार्मर टेंक का एसेसरीज और ऑयल ड्रम सहित ट्रांसफार्मर वर्कशॉप जयपुर से 132 केवी जीएसएस हिण्डोली जिला बून्दी तक लोडिंग, अनलोडिंग एवं शिफ्टिंग सहित ट्रांसपोर्टेशन के कार्य, 132/33 केवी, 20/25 एमवीए ऑयल फिल्ड पावर ट्रांसफार्मर टेंक का एसेसरीज और ऑयल ड्रम सहित 132 केवी जीएसएस राजगढ से 132 केवी जीएसएस अजनोटी जिला सवाई माधोपुर तक लोडिंग, अनलोडिंग एवं शिफ्टिंग सहित ट्रांसपोर्टेशन के कार्य हेतु निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा की पूर्ण जानकारी / निविदा की तारीख बढाने की सूचना के दस्तावेज / विवरण देखने / डाउनलोड करने के लिये (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in) एवम विभाग की वेबसाइट https://energy.rajasthan.gov.in/rrvpn पर उपलब्ध है।

UBN No. VPN2526SSOB02063, VPN2526WSOB02064, VPN2526WSOB02065, VPN2526SSOB02066, VPN2526SSOB02067

अधीक्षण अभियंता (प्र. एवं नि.), सवाई माधोपुर

राज.संवाद/सी/25/13082 — रा.रा.वि.प्र.नि./TR-7209/2025

OFFICE OF THE MUNICIPAL BOARD, DEOGARH

Near Bus Stand Deogarh

Tel. No. 02904-252039 — E-mail Id-EODEOGARH.LSG@RAJASTHAN.GOV.IN

S.No. F ( )/MBD/Engg./E-NIB/09/2025-26/1797 — Date :- 31-10-2025

Notice Inviting BID

NIB No 09/2025-26

नगर पालिका देवगढ द्वारा निम्नांकित विकास कार्यो हेतु केन्द्र व राज्य सरकार के विभागो व अधिकृत संगठनो व स्वायत शासी संस्थाओ में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से इलेक्ट्रोनिक फारमेन्ट में आनलाईन निविदा आमन्त्रित की जाती है। निविदा सम्बन्धित विस्तृत विवरण व जानकारी वेबसाईट www.sppp.raj.nic.in or http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी एवं डाउनलोड की जा सकती है।

NIB CODE :- DLB2526A7583

UBN No.:- DLB2526WSOB22973, DLB2526WSOB22974, DLB2526WSOB22975, DLB2526WSOB22976, DLB2526WSOB22977, DLB2526WSOB22978, DLB2526WSOB22979, DLB2526WSOB22980, DLB2526WSOB22981, DLB2526WSOB22982, DLB2526WSOB22988, DLB2526WSOB22990, DLB2526WSOB22992, DLB2526WSOB22994

महत्वपूर्ण तिथियां

निविदा कार्यक्रम	तिथि व समय
कुल निविदा के कार्य	14
निविदा की अनुमानित लागत	395.54 लाख
निविदा प्रकाशन की तिथि	31.10.2025 06:00 PM
निविदा डाउनलोड प्रारम्भ तिथि	31.10.2025 06:00 PM
ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	12.11.2025 06:00 PM तक
भौतिक रूप से डिमाण्ड ड्राफ्ट जमा कराने की तिथि	13.11.2025 11:00 AM तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथि	13.11.2025 12:00 PM से
ऑनलाईन निविदा हेतु वेबसाईट	http://eproc.rajasthan.gov.in
दोष निवारण अवधि	नियमानुसार

राज.संवाद / सी / 25 / 13074 — अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता एवं परियोजना प्रबंधक वाटरशेड सेल कम डाटा सेन्टर जिला परिषद जालोर

क्रमांक :- एफ ( )/निविदा/2025-26/3157 - 3165 — दिनांक :- 30/10/2025

NOTCE INVITING BID

NIT No. 30 - 38/2025-26

Bids for NRM Works Under PMKSY-2.0 and MJSA 2.0 project area in Ahore, Bhinmal, Sayla, Jalore, Sarnau, Raniwara, and Bagoda of estimated Value INR 189.56 Lacs are invited from interested bidders Up to 3.00 PM 30-10-2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https//eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state.

NIT NO.	Work Name & Block	NIB No.	UBN No.
NIT-30/2025-25 MJSA 2.2	Pakka Check Dem/Anicut Nirman (Bhinmal)	WSC2526A0913	WSC2526WSRC01569
NIT-31/2025-25 MJSA 2.1	Rooftop Tanka Nirman (Sayla)	WSC2526A0914	WSC2526WSRC01571
NIT-32/2025-25 MJSA 2.1	Rooftop Tanka, Farm Pond and Recharge Shaft Nirman (Sarnau)	WSC2526A0915	WSC2526WSRC01570
NIT-33/2025-25 MJSA 2.1	Rooftop Tanka, and Tanka Nirman (Raniwara)	WSC2526A0916	WSC2526WSRC01572
NIT-34/2025-25 MJSA 2.1	Rooftop Tanka, and Farm Pond Nirman (Bagoda)	WSC2526A0917	WSC2526WSRC01573
NIT-35/2025-25 MJSA 2.2	Rooftop Tanka, and CCT Nirman (Bagoda)	WSC2526A0918	WSC2526WSRC01574
NIT-36/2025-25 MJSA 2.1	ECD Nirman (Jalore)	WSC2526A0922	WSC2526WSRC01575
NIT-37/2025-25 MJSA 2.1	Rooftop Tanka Nirman (Ahore)	WSC2526A0920	WSC2526WSRC01576
NIT-38/2025-25 PMKSY 2.0	Pakka Check Dem/Anicut Nirman (Ahore)	WSC2526A0921	WSC2526WSRC01577

Raj.Samwad/C/25/13112 — SE & PMWCDC, ZILA PARISHAD, JALORE

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड, प्रथम उदयपुर

क्रमांक:अअ/जिख/अंके/2025-26/4616-4640 — दिनांक: 28/10/25

ई-निविदा सूचना संख्या 56-68/2025-26

खण्ड कार्य क्षेत्र में विभिन्न उपखण्डों के विभिन्न ग्रामों की पेयजल योजना संबंधित विभिन्न कार्य (रू. 10.00 से 60.00 लाख तक के) की आमंत्रित की जाती है जो कि दिनांक 11.11.2025 को 18.00 बजे प्राप्त की जावेगी। निविदाओं का विस्तृत विवरण राज्य सरकार के उपापन पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकता है।

NIB Code-PHE2526A3889

UBN No.- PHE2526SLRC07948, PHE2526SLRC07949, PHE2526SLRC07950 PHE2526SLRC07951, PHE2526SLRC07953, PHE2526WSRC07958, PHE2526WSRC07959, PHE2526WSRC07960, PHE2526WSRC07967, PHE2526WSRC07968, PHE2526WSRC07969, PHE2526WSRC07970, PHE2526WSRC07971

अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड, प्रथम उदयपुर

DIPR/C/16062/2025

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- राजकाज 18597587 — दिनांक :- 31/10/2025

ई-निविदा सूचना संख्या:- जोन दक्षिण/12/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी मे पंजीकृत ठेकेदारों से सिविल कार्यो हेतु मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्यों की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्ते आदि का सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.jodhpurjda.org, www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

NIB Code :- JOD2526A0175

UBN No. :- JOD2526WSOB00375 To JOD2526WSOB00385

राज.संवाद/सी/25/13099 — अधिशाषी अभियंता (दक्षिण)

कार्यालय नगर पालिका, रामगढ पचवारा, जिला-दौसा

Email ID:-lalsot.jaipur@yahoo.com — Ph-01431-260714

क्रमांक:-न.पा.रा.प / 2025 / 977 — दिनांक:-21.10.2025

ई-निविदा सूचना-

नगर पालिका रामगढ पचवारा द्वारा बजट घोषणा संख्या 219.10.00 / 2025-26 के अन्तर्गत विद्युत सम्बन्धित कार्य कराये जाने हेतु उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन निविदा समय सांय 6.00 बजे तक दिनांक 18-11-2025 तक आमंत्रित की जाती है। निविदा की महत्वपूर्ण शर्ते एवं विवरण वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। कार्यों की अनुमानित लागत 76.80 लाख रू0 है।

UBN Number:- DLB2526WSOB22665

राज.संवाद / सी / 25 / 13057 — अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रामगढ पचवारा

राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड

केंद्र / राज्य सरकार के विभागों एवं रा. रा. वि. प्र.नि.लि. के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत / मान्य निविदाकारों से अधिशासी अभियंता (सिविल), अजमेर / सीकर के अधीन ई निविदा सूचना संख्या 18/2025-26 में क्र. स. 01 से 02 पर वर्णित सिविल कार्यों के लिए निर्धारित प्रपत्र में मोहरबंद निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। अधिशासी अभियंता (सिविल), मेड़ता सिटी के अधीन निविदा सूचना संख्या 19/2025-26 में क्र. स. 01 से 02 पर वर्णित कार्यों के लिए निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से ऑन लाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बंधित समस्त विवरण वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in, https://energy.rajasthan.gov.in/rrvpn एवं http://sppp.raj.nic.in पर उपलब्ध है।

UBN No. :- For NIB No. 18/2025-26- VPN2526WSOB02070, VPN2526WSOB0206

UBN No. :- For NIB No. 19/2025-26- VPN2526WSOB02079, VPN2526WSOB02080

अधीक्षण अभियंता (सिविल), अजमेर

राज.संवाद/सी/25/13088 — रा.रा.वि.प्र.नि./TR-7215/2025

कार्यालय नगर पालिका भवानीमण्डी, जिला झालावाड़, राजस्थान

क्रमांक :- न.पा.भ. / निर्माण / 2025 / 1666 — दिनांक :- 11 / 09 / 2025

-: ई-निविदा संख्या 12/2025-26 :-

सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम 26 के अनुसार तथा स्वायत्त शासन विभाग राजस्थान जयपुर के परिपत्र दिनांक 23 फरवरी 2015 No F8(G)(Rules)DLB/2015/4081 की पालना में राजस्थान नगर पालिका (सामान्य कय एवं अनुबंध) नियम 1974 के धारा 14 के उपधारा-1 के क्लॉज सी के अनुसार नगर पालिका भवानीमण्डी में सक्षम श्रेणी के पंजीकृत संवेदको व अन्य विभागों में सक्षम श्रेणी के पंजिकृत ठेकेदारों / फर्मो से ई निविदा पद्धति से 1 कार्य की ऑनलाईन निविदाऐं दिनांक 03 / 11 / 2025 से 11 / 11 / 2025 तक आमंत्रित की जाती है। कार्य की अनुमानित लागत / निविदा से संबंधित परिपत्र डाउनलोड, अपलोड करने की तिथि व निविदा की शर्ते व अन्य जानकारी वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in & http//sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

NIB COAD- DLB2526A7604

अध्यक्ष नगर पालिका भवानीमण्डी — अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका भवानीमण्डी

राज.संवाद / सी / 25 / 13071

कार्यालय नगर पालिका पिड़ावा जिला-झालावाड़ (राज.)

E-mail id - eopirawa.lsg@rajasthan.gov.in — Phone No. - 07434-258566

क्रमांक / न.पा.पि. / निर्माण / 2025 / 1940-1942 — दिनांक:-29 / 10 / 2025

ई-निविदा क्रमांक 05/2025-26

नगर पालिका पिडावा में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदको व अन्य विभागो के सक्षम श्रेणी में पंजिकृत फार्मो / संवेदको से ई-निविदा पद्धति से 5 कार्यो की दिनांक 04.11.2025 से 11.11.2025 तक ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत, निविदा से सम्बन्धित प्रपत्र डाउनलोड, अपलोड करने की तिथि व निविदा की षर्ते एवं अन्य जानकारी वेबसाईट http://sppp.rajasthan.nic.in एवं http://eproc.rajasthan.gov.in व कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर देखी जा सकती है।

NIB CODE :-DLB2526A7563

WORK NO.	UBN CODE
1	DLB2526WSRC22916
2	DLB2526WSOB22921
3	DLB2526GLOB22924
4	DLB2526WSOB22940
5	DLB2526WSOB22942

राज.संवाद / सी / 25 / 13130 — अध्यक्ष नगर पालिका पिड़ावा — अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका पिड़ावा

कार्यालय अधिषाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड भीनमाल

क्रमांक: अअ/भीन/2025-26/859 — **निविदा सूचना संख्या: 09 वर्ष 2025-2026** — दिनांक. 28.10.2025

NIB No. PWD2526A4061

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सडक / भवन कार्य के आधार पर उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में कार्य जिनकी लागत राशि रू. 469.79 लाख है के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	:	01 नवम्बर 2025, 9:30 बजे से 17 नवम्बर 2025, सायं 06:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http:// eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रियाhttp://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। कार्यवार यू बी.एन संख्या निम्नानुसार है।

1. UBN No. PWD2526WSOB15680
2. UBN No. PWD2526WSOB15681
3. UBN No. PWD2526WSOB15682
4. UBN No. PWD2526WSOB15683
5. UBN No. PWD2526WSOB15684
6. UBN No. PWD2526WSOB15685
7. UBN No. PWD2526WSOB15686
8. UBN No. PWD2526WSOB15687
9. UBN No. PWD2526WSOB15688
10. UBN No. PWD2526WSOB15589

(ओम प्रकाश)

DIPR/C/16014/2025 — अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड भीनमाल

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड जालोर

Tel: 02973-222272, Email: ee.jal.phed@rajsthan.gov.in, xen_jal@yahoo.com

क्रमांक:-वृत/जालोर / निविदा/ / 2025-26/2118-24 — दिनांक:- 29/10/202

बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 37-44/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु लोक निर्माण और वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334 (ए) () के तहत रू. 150.00 लाख तक की निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हेतु जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग मे पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियमानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र / राज्य सरकार के अधिकृत विभागों / संगठनों, केन्द्रिय लोक निर्माण विभाग, रेल, डाक, दूर संचार विभागों मे उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया द्वारा निम्न ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जाती है:-

बिड संख्या	NIB No. PHE 2526A3921	अनुमानित लागत (लाखों मे)	धरोहर राशि 2 प्रतिशत	बिड शुल्क (रूपयें)	ई-प्रकिया शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
37/2025-26	PHEWSRC08032	15.00	30000	500	500	12 माह
38/2025-26	PHEWSRC08033	15.00	30000	500	500	12 माह
39/2025-26	PHEWSRL08034	15.00	30000	500	500	12 माह
40/2025-26	PHEWSRC08035	15.00	30000	500	500	12 माह
41/2025-26	PHEWIRC8638	6.00	12000	500	500	12 माह
42/2025-26	PHEWSRC8039	6.00	12000	500	500	12 माह
43/2025-26	PHEWSRC8040	6.00	12000	500	500	12 माह
44/2025-26	PHEWSRC8041	6.00	12000	500	500	12 माह
ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि		31.10.2025				
ऑनलाईन बिड डाउनलोड / अपलोड करने की अन्तिम तिथि		07.11.2025 को 6.00 पी.एम.				
ऑनलाईनबिड खोलने की तिथि		08.11.2025 को 2.00 पी.एम.				

बिड से संबंधित समस्त विवरण वैबसाईट www.dipronline.org,sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

(राजकुमार कटारा)

DIPR/C/16107/2025 — अधिशाषी अभियंता जन स्वास्थ्य अभियात्रिक विभाग, खण्ड - जालोर

राजस्थान में डेयरी विकास के लिये 1000 करोड़ रुपए का ''कोरपस फण्ड'' बनाने की मंजूरी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की इस ऐतिहासिक पहल से प्रदेश की सहकारी डेयरियों और उनसे जुड़े लाखों दुग्ध उत्पादकों को फायदा मिलेगा

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर राज्य सरकार ने डेयरी विकास के लिए राज्यभर की डेयरियों के इंफ्रास्ट्रक्चर पर खर्च के लिये 1000 करोड़ रुपये के ''कोरपस फण्ड'' बनाने की स्वीकृति जारी की है। यह स्वीकृति राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट फण्ड के लिये जारी की गई है। डेयरी विकास के क्षेत्र में राजस्थान में पिछले दो दशकों में पहली बार यह ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की इस ऐतिहासिक पहल से प्रदेश की सहकारी डेयरियों और उनसे जुड़े लाखों दुग्ध उत्पादकों को फायदा होगा। साथ ही डेयरियों के आधारभूत ढांचे में विस्तार से आरसीडीएफ एवं जिला दुग्ध संघों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार की संभावनाएं तलाशने में भी मदद मिलेगी।

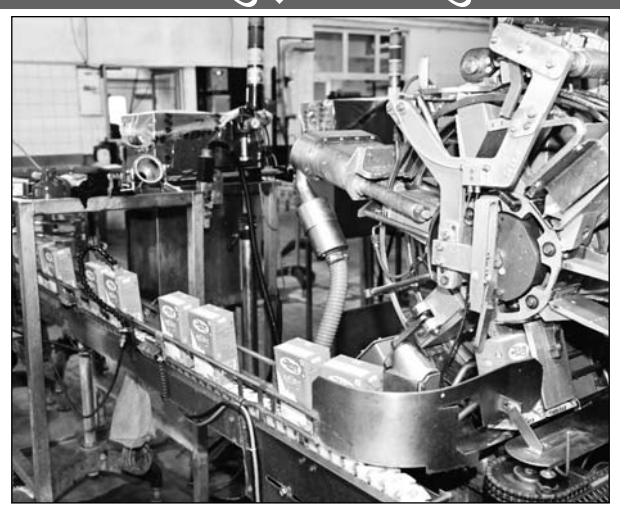

राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की प्रशासक एवं प्रबन्ध संचालक श्रुति भारद्वाज ने बताया कि राजस्थान में डेयरी विकास के क्षेत्र में इतनी बड़ी राशि के विनियोजन की स्वीकृति पहली बार जारी की गई है। स्वीकृत राशि से राज्यभर की सहकारी डेयरियों में दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता का विस्तार किया जायेगा और वर्तमान में आरसीडीएफ की कुल दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता को 52 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 75 लाख लीटर प्रतिदिन किया जावेगा। उन्होंने बताया कि अलवर, उदयपुर, बांसवाड़ा, भरतपुर एवं सवाईमाधोपुर में नवीन एवं अत्याधुनिक तकनीक के डेयरी प्लान्टस की स्थापना की जावेगी। इसके साथ ही सीकर-झुन्झुनुं, श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़, जोधपुर और कोटा दुग्ध संघों के डेयरी प्लान्टस का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण किया जायेगा। कोटा, उदयपुर एवं राजसमंद जिलों में भी नये अत्याधुनिक संयंत्रों की स्थापना की जावेगी और जोधपुर पशु आहार संयंत्र का विस्तारीकरण किया जावेगा।

- राज्य सरकार के इस फैसले से आरसीडीएफ की दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता भी बढकर 75 लाख लीटर प्रतिदिन होगी
- इसके साथ ही पशु आहार उत्पादन क्षमता भी 2550 मैट्रिक टन प्रतिदिन हो जाएगी

पाली एवं हनुमानगढ़ जिले में 60 मैट्रिक टन क्षमता के नये डेयरी प्लान्टस भी स्थापित किये जाएंगे। श्रुति भारद्वाज ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत इस बजट के कारण आरसीडीएफ के पशु आहार संयंत्रों की उत्पादन क्षमता भी बढ़ाई जा सकेगी।

वर्तमान में पशु आहार संयंत्रों की उत्पादन क्षमता 1800 मैट्रिक टन प्रतिदिन है, जिसे बढ़ाकर 2500 मैट्रिक टन प्रतिदिन किया जाएगा। इसी प्रकार आरसीडीएफ के पाउडर प्लान्टस की वर्तमान क्षमता 165 मैट्रिक टन प्रतिदिन है, जिसे बढ़ाकर 225 मैट्रिक टन प्रतिदिन किया जायेगा। उन्होंने बताया कि ''कोरपस फण्ड'' की 10 प्रतिशत राशि आरसीडीएफ स्वयं के द्वारा अर्जित लाभ में से देगा।

इसी प्रकार जिला दुग्ध संघों द्वारा भी कोरपस फण्ड की 10 प्रतिशत राशि उनके द्वारा अर्जित लाभ में से दी जावेगी। कोरपस फण्ड में बैंक अथवा वित्तीय संस्थाओं से उचित ब्याज दर पर ऋण लिया जा सकेगा।

केन्द्रीय प्रवर्तित योजना एएचआईडीएफ के अन्तर्गत 3 प्रतिशत ब्याज की सब्सीडी भारत सरकार और 3 प्रतिशत ब्याज की सब्सीडी राजस्थान सरकार द्वारा दी जावेगी।

रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगा उठा राजपार्क गुरूद्वारा

गुरुनानक देव की जयंती आज, जयपुर के सभी गुरुद्वारों को फूलों से सजाया

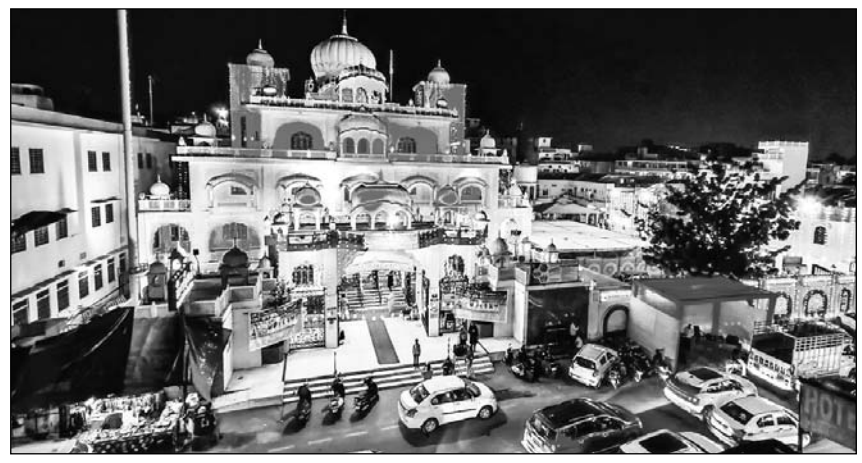

गुरूनानक देव जयंती की पूर्व संध्या पर राजापार्क स्थित गुरूद्वारे को रोशनी से सजाया गया।

जयपुर। सिख धर्म के प्रथम गुरु और संस्थापक गुरुनानक देव जी का 556वां प्रकाश पर्व (जयंती) 5 नवंबर को पूरे श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस मौके पर जयपुर के सभी गुरुद्वारों में रोशनी और सजावट की गई है। पूरे परिसर को रंगीन लाइटिंग और फूलों से सजाया गया है।

गुरुद्वारे के सेक्रेटरी गुरमीत सिंह ने बताया कि कार्यक्रमों की शुरुआत सुबह 5 बजे नित नेम से होगी। जो 6.30 बजे तक चलेगा। इसके बाद सुबह साढ़े सात बजे से आसा दी वार का कीर्तन होगा। इसे दरबार साहब (अमृतसर) के हजूरी रागी जत्था भाई ओंकार सिंह द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। इसके बाद सिख शिक्षण संस्था के बच्चे गुरुवाणी कीर्तन करेंगे। गुरुद्वारे में दोपहर से लेकर शाम तक भी धार्मिक कार्यक्रम जारी रहेंगे। भाई ओंकार सिंह, भाई तेजेंद्र सिंह और गुरुमत प्रचारक विचारक ज्ञानी किशन सिंह साध संगत के समक्ष गुरुवाणी कीर्तन एवं गुरमत विचार प्रस्तुत करेंगे। इस दौरान गुरु के उपदेश, जीवन दर्शन और इतिहास पर आधारित विचार साझा किए जाएंगे। इसके बाद प्रदेश की खुशहाली और समृद्धि के लिए अरदास की जाएगी। इस पावन अवसर पर सरबत के भले की अरदास कर समूची मानवता के कल्याण की प्रार्थना की जाएगी।

राजस्थान सिख समाज के अध्यक्ष अजय पाल सिंह ने बताया कि जयपुर में आदर्श नगर राजापार्क, वैशाली नगर, कंवर नगर और मानसरोवर गुरुद्वारों में बुधवार की सुबह से ही संगत पहुंचना शुरू हो जाएगी।उन्होंने बताया कि आदर्श नगर गुरुद्वारे में लगभग 25 हजार श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है। यहां श्रद्धालु मत्था टेकने के बाद दिनभर लंगर परसादी ग्रहण करेंगे। गुरु ग्रंथ साहिब की पालकी को भी विशेष फूलों और रोशनी से सजाया गया है। गुरुद्वारे के ज्ञानी जगदीश सिंह ने बताया कि गुरु ने कई उपदेश दिए है। इनमें गुरुनानक देव जी के उपदेश नाम जपो, किरत करो, वंड छको के भाव को आगे बढ़ाने के लिए श्रद्धालु सेवा और भक्ति में लीन रहेंगे। जयपुर में प्रकाश पर्व का यह आयोजन न केवल सिख समाज बल्कि अन्य समुदायों के लिए भी श्रद्धा और एकता का प्रतीक बनेगा।

'गिवअप' अभियान से जुड़कर 42 लाख लोगों ने खाद्य सुरक्षा योजना से स्वयं नाम हटवाया

इस कारण राज्य सरकार 69.50 लाख नए पात्र लाभार्थियों को इस योजना से जोड़ सकी

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर प्रदेश में 42 लाख अपात्र लोगों ने स्वयं ''गिव अप'' अभियान से जुड़कर खाद्य सुरक्षा योजना छोड़ी है। इससे अब पात्र और वंचित लोगों को फायदा मिलेगा।

प्रदेश में जनसंख्या के अनुपात में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम में लगभग 4.46 करोड़ लाभार्थियों की सीमा निर्धारित है। परंतु यह सीमा पूर्ण हो जाने के कारण नए पात्र व्यक्तियों को योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा था। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में 1 नवम्बर 2024 को आरंभ हुए ''गिव अप'' अभियान में प्रदेशभर में 41.95 लाख से अधिक अपात्र लोगों द्वारा स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा छोड़कर सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचय दिया है। करीब 27 लाख से अधिक व्यक्ति ई-केवाईसी नहीं करवाने के कारण स्वतः सूची से बाहर हो गए, जिससे नए पात्र लाभार्थियों के लिए स्थान उपलब्ध हुआ। यह अभियान अब जनआंदोलन का रूप ले चुका है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बताया कि 26 जनवरी को खाद्य सुरक्षा पोर्टल को पुनः शुरू किया। इसके बाद से अब तक लगभग 69.50 लाख नए पात्र लाभार्थियों को खाद्य सुरक्षा योजना से जोड़ा जा चुका है।

- खाद्य सुरक्षा योजना में कलैक्टर्स जोड़ सकेंगे लाभार्थी, लोग स्वयं हटा सकेंगे अपना नाम सूची से

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा पात्र वंचितों के नाम जोड़ने की प्रक्रिया को सरल बनाया गया है। अब जिला कलेक्टर को भी एनएफएसए सूची में नए लाभार्थियों को सम्मिलित करने का अधिकार दिया गया है। साथ ही, सक्षम लाभार्थी पोर्टल के माध्यम से स्वयं अपना नाम सूची से हटवा सकते हैं। इससे पारदर्शिता और न्यायसंगतता सुनिश्चित हुई है।

मुख्यमंत्री की इस पहल से पात्र वंचितों को न केवल खाद्य सुरक्षा प्राप्त हो रही है, बल्कि उन्हें प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत प्रति व्यक्ति 5 किलो गेहूं, मुख्यमंत्री रसोई गैस सब्सिडी योजना में 450 रुपये की दर से प्रतिवर्ष 12 गैस सिलेंडर, मुख्यमंत्री आयुष्मान दुर्घटना बीमा योजना में 5 लाख रुपये का निशुल्क बीमा और मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना में निशुल्क चिकित्सा सुविधा जैसी अन्य योजनाओं का लाभ भी प्राप्त हो रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व और दूरदर्शी नीतियों के चलते राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम का यह विस्तार न केवल राज्य की प्रशासनिक दक्षता का प्रमाण है, बल्कि सामाजिक न्याय, पारदर्शिता और समान अवसर की भावना को साकार करने वाला ऐतिहासिक कदम है। राजस्थान सरकार की यह पहल 'आपणो अग्रणी राजस्थान' के संकल्प को मूर्त रूप दे रही है।

2130 बदमाशों के ठिकानों पर छापा

जयपुर। जयपुर पुलिस ने मंगलवार को बदमाशों के 2130 संदिग्ध ठिकानों पर दबिश देकर 551 वांछित अपराधियों को गिरफ्तार किया। जयपुर रेंज आईजी राहुल प्रकाश ने बताया कि पुलिस की 430 टीमों ने हार्डकोर और वांछित अपराधियों के ठिकानों को चिह्नित कर आठ जिलों में एक साथ दबिश दी थी, जिससे बदमाशों में हडकंप मच गया।

जयपुर डिस्कॉम ने थ्री फेज के सभी खराब मीटर बदले

जयपुर। जयपुर विद्युत वितरण निगम ने अपने सभी थ्री फेज (गैर कृषि) उपभोक्ताओं के खराब विद्युत मीटर बदलने में कामयाबी हासिल की है। निगम के सभी 18 सर्किलों में सभी थ्री फेज (गैर कृषि) विद्युत उपभोक्ताओं के डिफेक्टिव मीटर बदलकर उनके स्थान पर नए कार्यशील मीटर लगा दिए गए हैं। डिस्कॉम को खराब मीटर वाले उपभोक्ताओं को नियमानुसार विद्युत शुल्क में छूट नहीं देनी होगी। इन उपभोक्ताओं को अब एवरेज बिल के स्थान पर वास्तविक उपभोग के आधार पर बिल जारी किए जाएंगे।

उल्लेखनीय है कि थ्री फेज (गैर कृषि), थ्री फेज (कृषि), सिंगल फेज (शहरी) तथा सिंगल फेज (ग्रामीण) के 2 लाख 20 हजार से अधिक मीटर डिफेक्टिव होने के कारण निगम को वित्तीय वर्ष 2022-23 में 9 करोड़ 40 लाख रूपए की राशि विद्युत शुल्क में छूट के रूप में उपभोक्ताओं को देनी पड़ी थी। जयपुर डिस्कॉम के प्रयासों का परिणाम है कि अब निगम के सभी सर्किलों में सिंगल फेज (शहरी एवं ग्रामीण), थ्री फेज (कृषि एवं गैर कृषि) में खराब मीटरों की संख्या घटकर मात्र 19 हजार 303 रह गई है और यह छूट वित्तीय वर्ष 2025-26 के प्रथम 6 माह में घटकर मात्र 12.50 लाख रूपए ही रह गई है।

- अब इन 18 सर्किल क्षेत्र में थ्री फेज गैर कृषि उपभोक्ताओं को वास्तविक उपभोग के आधार पर बिजली बिल

जयपुर वितरण निगम में 4 लाख से अधिक गैर कृषि थ्री फेज उपभोक्ता हैं। विगत कुछ माह में निगम के सभी सर्किलों में अभियंताओं ने प्रयास कर 3,388 थ्री फेज गैर कृषि उपभोक्ताओं के डिफेक्टिव मीटर बदल दिए। थ्री फेज उपभोक्ता निगम के लिए अधिक विद्युत उपभोग एवं अधिक राजस्व प्रदान करने वाले उपभोक्ता की श्रेणी में आते हैं।

डिफेक्टिव मीटर बदलने के प्रयासों के अन्तर्गत जयपुर डिस्कॉम को मिली यह दूसरी बड़ी सफलता है। इससे पहले जून एवं जुलाई माह में 8 सर्किलों कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, जयपुर सिटी सर्किल नॉर्थ एवं साउथ, जेपीडीसी नॉर्थ तथा दौसा सर्किल में सभी श्रेणियों में खराब मीटर बदल दिए गए थे। अब करौली सर्किल भी इस कतार में शामिल हो गया है। निगम के 9 सर्किल जीरो डिफेक्टिव मीटर हो गए हैं। इन सर्किलों में लगातार खराब मीटर को शून्य बनाए रखा जा रहा है।

प्रदेश में चिकित्सा संस्थानों का आज से होगा सघन निरीक्षण

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की पहल पर प्रदेशभर में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है। इसी कड़ी में चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशों पर प्रदेशभर में 5 नवम्बर से 7 नवम्बर तक चिकित्सा संस्थानों का सघन निरीक्षण किया जाएगा। सघन निरीक्षण के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाएगा कि हर चिकित्सा संस्थान में इण्डियन पब्लिक हैल्थ स्टेण्डर्ड पूरे हों, जिन संस्थानों में यह स्टेण्डर्ड पूरे नहीं होंगे, वहां मिशन मोड में इन स्टेण्डर्ड को पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने मंगलवार को स्वास्थ्य भवन में आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंस में इस संबंध में अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए। उन्होंने कहा कि 5 से 7 नवम्बर तक सभी संयुक्त निदेशक जोन, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी सहित अन्य अधिकारी अपने-अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले सभी चिकित्सा संस्थानों का सघन निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। रिपोर्ट के आधार पर मानक पूरे नहीं करने वाले चिकित्सा संस्थानों में आवश्यक सुधार के लिए कदम उठाए जाएंगे।

प्रमुख शासन सचिव ने विभिन्न स्वास्थ्य मानकों की समीक्षा करते हुए कहा कि सभी जिले हर हाल में टीकाकरण के निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करें। उन्होंने निर्धारित लक्ष्य से पीछे रहने वाले सभी आरसीएचओ को 17 सीसीए के नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में कोताही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा।

श्रीमती राठौड़ ने कहा कि प्रदेशभर में संचालित एम्बुलेंस सेवाओं का भी सघन निरीक्षण किया जाए, जहां भी एम्बुलेंस संचालन में कमियां पाई जा रही हैं, वहां नियमानुसार पैनल्टी लगाने के साथ ही आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सभी अधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों में एम्बुलेंस सेवाओं का नियमित रूप से निरीक्षण करें। यह सुनिश्चित हो कि एम्बुलेंस संचालन योग्य हों, उनमें सभी जीवन रक्षक उपकरण उपलब्ध हों और क्रियाशील स्थिति में हों। उन्होंने बताया कि अप्रेल माह से अगस्त माह तक एम्बुलेंस सेवाओं के संचालन में कमियां पाई जाने पर 2 करोड़ रूपए से ज्यादा की पैनल्टी लगाई गई है।

देशभर से बैंक कर्मचारी नेता जयपुर में जुटेंगे

जयपुर। करीब 25 साल बाद ऑल इंडिया बैंक एम्पलाइज एसोसिएशन (एआईबीईए)केंद्रीय समिति की राष्ट्रीय बैठक की मेजबानी जयपुर में राजस्थान प्रदेश बैंक एम्पलाईज यूनियन करेगी। महासचिव महेश मिश्रा ने बताया कि इससे पहले सन् 2000 में यह बैठक जयपुर में हुई थी। यह दो दिवसीय (5-6 नवम्बर) बैठक आज से एमआई रोड स्थित होटल गोल्डन ट्यूलिप में शुरू होगी। इसे एआईबीईए के राष्ट्रीय महासचिव सी एच वेंकटचलम संबोधित करेंगे। सम्मेलन में एआईबीईए के अध्यक्ष राजन नागर और सचिव बीएस रामबाबू के साथ कश्मीर से कन्याकुमारी तक देशभर से राष्ट्रीय कार्यकारिणी के 105 से ज्यादा प्रतिनिधि भाग लेंगे। बैठक से पूर्व मंगलवार को तारक भवन में राजस्थान प्रदेश बैंक एम्पलाइज यूनियन के महासचिव महेश मिश्रा के नेतृत्व में सम्मेलन की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। इसमें आरपीबीईयू के चेयरमैन आरजी शर्मा और उप महासचिव सूरज भान सिंह आमेरा सचिव महेश शर्मा भी मौजूद रहे।

शिक्षा संकुल में कूडेदान की जगह का कायाकल्प कर बनाया सभागार

जयपुर। शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने मंगलवार को डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा संकुल स्थित राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के कार्यालय में नवनिर्मित सभागार एवं लिफ्ट का लोकार्पण किया। इसका नाम ''माधव सभागार'' रखा गया है। सभागार की कुल क्षमता 40 लोगों के बैठने की है। इसके निर्माण पर 35 लाख रुपये खर्च हुए है। जिस जगह सभागार का निर्माण किया गया है, वहां पूर्व में कूडादान था, जिसे अभी आधुनिक सुविधाओं सें युक्त सभागार के रूप मे परिवर्तित किया गया है। इससे पूर्व मंत्री मदन दिलावर ने भूतल पर नवनिर्मित एलीवेटर (लिफ्ट) का भी लोकार्पण किया। दिलावर ने बधाई देते हुए कहा कि, ये सभागार बहुत सुन्दर बना है, जो सभी प्रकार की बैठके आयोजित करने के लिए उपयोगी साबित होगा। भवन में ऐसे लोग भी आते है जो सीढ़ियां चढ़ने मे सक्षम नहीं होते है। ऐसे लोगों के लिए नवीन एलीवेटर (लिफ्ट) प्रारम्भ होने सें बहुत लाभ होगा। लोग आसानी सें भवन के सभी कक्षों मे पहुंच सकेंगे। इस अवसर पर सभागार निर्माण मे उल्लेखनीय कार्य करने वाले सुमित तिवारी, अधिशाषी अभियंता, समग्र शिक्षा, महाराजा सक्सेना, सहायक अभियंता, समग्र शिक्षा तथा ओपन स्कूल के सहायक निदेशक गिरिराज गुप्ता, बेसिक कम्प्यूटर इंस्ट्रक्टर अक्षिता शर्मा को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में शासन सचिव शिक्षा कृष्ण कुणाल, विशिष्ट शासन सचिव विश्व मोहर्न, निदेशक माध्यमिक शिक्षा सीता राम , राज्य परियोजना निदेशक समग्र शिक्षा एवं राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल की निदेशक डॉ अनुपमा जोरवाल, निदेशक साक्षरता एवं सतत शिक्षा मनीष गोयल, राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल की सचिव डॉ. अरुणा शर्मा उपस्थित थे।

शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने मंगलवार को डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा संकुल स्थित राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के कार्यालय में नवनिर्मित सभागार एवं लिफ्ट का लोकार्पण किया।

डंपर से 14 लोगों को कुचलने वाले ड्राईवर के खिलाफ मामला दर्ज

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। विश्वकर्मा स्थित लोहा मंडी में सोमवार की दोपहर नशे में धुत्त डंपर चालक ने एक कार चालक से मामूली कहासुनी के आवेश में आकर 14 लोगों को बेरहमी से कुचलता हुआ निकल गया था। हादसे के बाद मुख्य मार्गो में कोहराम मच गया और घंटों तक यातायात बाधित रहा। वहीं पुलिस ने इस मामले में डंपर चालक के खिलाफ आपराधिक मानव वध का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरु कर दी है। पुलिस ने बीएनएस की धारा 105 में मुकदमा दर्ज कर लिया है। इस मामले की जांच दुर्घटना अनुसंधान ईकाई की जगह हरमाड़ा थाना अधिकारी उदयसिंह करेंगे। पुलिस इस प्रकरण की जांच भी आपराधिक मामले की तरह गहनता से करेंगी।

पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए घायल दिग्प्रताप सिंह की शिकायत पर डंपर चालक कल्याण मल के खिलाफ धारा 105 बीएनएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरु कर दी है। पीड़ित ने पुलिस को बताया की पूरा घटना क्रम उसकी आंखों के सामने हुआ। वो अपनी मां के साथ स्कूटी पर लोहामंडी की ओर जा रहा था। इसी दौरान तेज रफ्तार डंपर लापरवाही तरीके से आया और पैदल जा रहे लोगों को कुचलता हुआ निकल गया। डंपर चालक ने कई दूपहिया और चौपहिया वाहनों को भी टक्कर मारी और दर्जनों लोगों को घायल करता हुआ आगे बढ़ गया।

- हरमाड़ा थाना इंचार्ज उदयसिंह करेंगे इस प्रकरण की जांच
- बीएनएस की धारा 105 में केस दर्ज, इसमें आजीवन या 10 साल तक की कारावास के साथ जुर्माने का प्रावधान है

एडवोकेट पंकज पंचलगिया ने बताया कि पुरानी आईपीसी की धारा 304 के तहत आपराधिक मानव वध में लगाई जाती थी। लेकिन अब बीएनएस एक्ट के तहत धारा 105 गैर -इरादतन हत्या की धारा जोड़ी जाती है। जिसमें आजीवन या 10 साल तक का कारावास और जुर्माने का प्रावधान है।

राजस्थान विवि. में यू.जी.सी. विनियमों के अनुसार शिक्षकों की नियुक्ति व पदोन्नति व्यवस्था शीघ्र लागू करने की मांग

कानपुर, गोरखपुर, निम्बाहेडा और जयपुर के कई विश्वविद्यालयों में कुलपति रह चुके प्रोफेसर अशोक कुमार ने राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े को पत्र लिखकर इस संबंध में जल्द ठोस कार्रवाई का आग्रह किया

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रोफेसर अशोक कुमार ने राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े को पत्र लिखकर राजस्थान विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) विनियमों के अनुसार शिक्षकों की नियुक्ति और पदोन्नति व्यवस्था शीघ्र लागू करने की मांग की है। प्रो. अशोक कुमार कानपुर, गोरखपुर, निम्बाहेडा और जयपुर के कई विश्वविद्यालयों में कुलपति के पद पर सेवाएं दे चुके हैं। वे आई.एस.एल.एस. एंड सोशल रिसर्च फाउंडेशन इंडिया के अध्यक्ष भी है।

प्रोफेसर अशोक कुमार ने राज्यपाल बागड़े को पत्र में लिखा है कि, ''विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने वर्ष 2018 में विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति और पदोन्नित के लिए विस्तृत विनियम जारी किए थे। राजस्थान सरकार ने इन विनियमों में 4 संशोधन करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय को इन्हें अपने परिनियमों में सम्मिलित करने के लिए आदेश दिया था। इस संबंध में राज्यपाल द्वारा एक समिति का गठन भी किया था, जिसकी रिपोर्ट भी राज्यपाल कार्यालय को भेजी जा चुकी है। परंतु खेद खेद का विषय है कि इस रिपोर्ट और राज्य सरकार के आदेशों के बावजूद, राजस्थान विश्वविद्यालय ने अभी तक इन विनियमों को स्वीकार नहीं किया है।''

- प्रोफेसर अशोक कुमार का कहना है कि यू.जी.सी. ने वर्ष 2018 में विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति और पदोन्नित के लिए विस्तृत विनियम जारी किए थे। राजस्थान सरकार ने इन विनियमों में 4 संशोधन करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय को इन्हें अपने परिनियमों में सम्मिलित करने के लिए आदेश दिया था, परंतु यह अभी तक नहीं अपनाए गए।
- इसका दुष्प्रभाव यह हुआ है कि, राजस्थान यूनिवर्सिटी में शिक्षकों की नियुक्ति और पदोन्नति की प्रक्रिया पूरी तरह से रुकी हुई है तथा योग्य उम्मीदवारों को अवसर नहीं मिल रहे हैं। शिक्षकों के पद रिक्त होने के कारण नियमित कक्षाएं और अनुसंधान कार्य प्रभावित हो रहे हैं।

प्रोफेसर अशोक कुमार का कहना है कि राजस्थान विश्वविद्यालय में यह विनियम लागू नहीं होने के कारण में आज यहां शिक्षकों की नियुक्ति और पदोन्नति की प्रक्रिया पूरी तरह से रुकी हुई है, जिससे योग्य उम्मीदवारों को अवसर नहीं मिल रहे हैं और कार्यरत शिक्षकों का मनोबल गिर रहा है। राजस्थान विवि. में शिक्षकों के पद रिक्त पड़े हैं, यह गतिरोध लंबे समय से चल रहा है, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों को पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं हैं और नियमित कक्षाएं बुरी तरह प्रभावित हो रही है। शिक्षक नहीं होने के कारण अनुसंधान कार्य भी बाधित हो रहा है, जिससे विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिणक रैंकिंग तथा प्रतिष्ठा को गंभीर क्षति पहुँच रही है।

प्रो. अशोक कुमार ने कहा कि, राजस्थान विश्वविद्यालय का यह नकारात्मक रवैया सीधे तौर पर राज्य के उच्च शिक्षा के भविष्य और हजारों छात्रों के करियर को खतरे में डाल रहा है। उन्होंने राज्यपाल से इस गंभीर विषय पर तत्काल संज्ञान लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन को शीघ्र उचित कार्रवाई करने के निर्देशित करने का आग्रह किया है।

तस्करी के दो आरोपियों को 20-20 साल का कठोर कारावास

कोर्ट ने आरोपियों को दो-दो लाख रुपए के अर्थदंड से भी दंडित किया

भीलवाड़ा, (निसं)। विशिष्ट न्यायाधीश एनडीपीएस कोर्ट ने डोडा-चूरा तस्करी के मामले में दो आरोपियों को 20-20 साल के कठोर कारावास और दो-दो लाख रुपए के अर्थ दंड से दंडित किया है।

विशिष्ट लोक अभियोजक रामस्वरूप गुर्जर ने बताया कि 7 नवम्बर 2019 को काछोला थाना अधिकारी रतनलाल मय जाब्ता थाने से गश्त करते हुए लक्ष्मणगढ़ तिराहे पर नाकेबंदी कर वाहनों की जांच कर रहे थे। इस दौरान एक ट्रक आया जिसे शंका के आधार पर चेक किया तो ट्रक में 40 कट्टे अफीम डोडा-चूरा भरा हुआ मिला जो अजवाइन, प्याज और लहसुन के कट्टों के नीचे दबा कर रखा हुआ था। ट्रक चालक से नाम-पूछा तो ट्रक चालक ने अपना नाम मदनलाल पुत्र बालू लाल प्रजापत निवासी रायपुर और खलासी ने अपना नाम सांवरलाल पिता महावीर प्रसाद रायपुर शाहपुरा जिला भीलवाड़ा होना बताया। पुलिस ने अफीम डोडा-चूरा का तोल किया तो कुल वजन 1000 किलो पाया गया। मुलजिमों को गिरफ्तार कर पुलिस ने चालान न्यायालय में पेश किया। ट्रायल पूरा होने के बाद विशिष्ट न्यायाधीश एनडीपीएस भीलवाड़ा जगदीश प्रसाद शर्मा ने मदनलाल और सवार को दोषी मानते हुए दोनों को 20-20 साल के कठोर कारावास और दो-दो लाख रुपए के जुर्माने से दंडित किया है। विशिष्ट लोग अभियोजक गुर्जर ने आरोप सिद्ध करने के लिए 7 गवाह और 202 दस्तावेज कोर्ट में पेश किए।

पुलिस ने आरोपियों को विशिष्ट न्यायाधीश एनडीपीएस कोर्ट में पेश किया।

गेपसागर झील में कार व बाइक गिरी : डूंगरपुर शहर में बादल महल रिंग रोड पर सोमवार देर रात बाइक और कार के बीच टक्कर के बाद दोनों वाहन गेपसागर झील में गिर गए। हादसे में बाइक सवार युवक की डूबने से मौत हो गई, जबकि उसका दोस्त और कार सवार युवक को लोगों ने बचा लिया।

कोतवाली थाना पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान रोशन पुत्र भगवती शंकर हरसोत, निवासी पिंडावल के रूप में हुई है। वह डूंगरपुर शहर में रहकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। रोशन अपने परिवार का इकलौता बेटा था और उसकी दो बहनें हैं। सोमवार शाम वह लाइब्रेरी में पढ़ाई करने गया था। इसके बाद अपने दोस्त अमन जैन के साथ बाइक से घर लौट रहा था। इसी दौरान गेपसागर झील के बादल महल रिंग रोड पर सामने से आ रही एक कार से टक्कर हो गई। हादसे के बाद बाइक और कार दोनों झील के पानी में जा गिरे। घटना के बाद रिंग रोड पर मौजूद लोग दौड़कर मौके पर पहुंचे और अमन जैन व कार सवार युवक को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन रोशन गहरे पानी में डूब गया। बाद में गोताखोरों की मदद से शव बाहर निकाला गया। पुलिस ने शव को डूंगरपुर जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। हादसे की खबर मिलते ही देर रात परिवार के लोग अस्पताल पहुंचे, जहां उनका रो-रोकर बुरा हाल हो गया। पुलिस ने बताया कि हादसे की प्राथमिक वजह अंधेरा और तेज रफ्तार वाहन हो सकते हैं। मामले की जांच की जा रही है।

सम्मेलन में जाट समाज के 30 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

जाट समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन हरणी महादेव भीलवाड़ा में सम्पन्न हुआ।

भीलवाड़ा, (निसं)। सकल जाट समाज द्वारा राजस्थान मेवाड़ जाट महासभा, भीलवाड़ा के तत्वावधान में आयोजित जाट समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन हरणी महादेव भीलवाड़ा में सामाजिक एकता और सादगी का प्रदर्शन हुआ। इस अवसर पर 30 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे, जिन्होंने एक नए और समृद्ध जीवन की शुरुआत की। कार्यक्रम में नव-दंपतीयों को आशीर्वाद दिया। मुख्य अतिथियों में राजस्थान जाट महासभा प्रदेशाध्यक्ष राजाराम मील, सारिका सिंह चौधरी (प्रदेशाध्यक्ष, महिला कांग्रेस, राजस्थान), और अंकलेश जाखड़ शामिल रहे। अन्य विशिष्ट अतिथियों में भीलवाड़ा विधायक अशोक कोठारी, नगर निगम महापौर राकेश पाठक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अदिति चौधरी, बदरी लाल जाट, महावीर चौधरी, एस.डी.एम. ओम प्रकाश माचरा, नगर निगम कमिश्नर हेमाराम चौधरी, सीताराम चौधरी, हनुमान धायल (पुलिस निरीक्षक), देवीलाल चौधरी, राजवीर कुशवाह, हीरा लाल भदाला, रामेश्वर जाट, प्रेमाराम सियाग, गजराज चौधरी और जे.वी.पी. मीडिया ग्रुप चेयरमैन हरि राम किंवाड़ा मौजूद रहे। इस अवसर पर नवग्रह आश्रम के संस्थापक हंसराज चौधरी ने सभी उपस्थित लोगों को नशा मुक्ति का संकल्प दिलाया। जाट समाज के प्रमुखों और सदस्यों ने इस मंच से सामूहिक रूप से यह संकल्प लिया कि सामूहिक विवाह का यह आयोजन हर साल किया जाएगा, समाज के सभी लोग सामूहिक विवाह में ही अपने बच्चों की शादी करेंगे, शादियों में होने वाली होड़ा-होड़ी और फिजूलखर्ची (बर्बादी) से बचकर उस धन का उपयोग शिक्षा पर किया जाएगा। यह सामूहिक संकल्प समाज में एक नई दिशा देने और शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मंच संचालन नारायण भदाला ने किया।

हेल्प डेस्क में शिक्षकों को मुक्त करने की मांग

- राज. शिक्षक संघ राष्ट्रीय ने बीकानेर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन भेजा

बीकानेर, (निसं)। राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय ने जिला कलेक्टर बीकानेर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन भेज कर आग्रह किया है की विशेष मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम के हेल्प डेस्क कार्यक्रम में अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं को देखते हुए शिक्षकों को मुक्त रखा जाए।

संगठन के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष रवि आचार्य ने ज्ञापन में अवगत कराया कि वर्तमान में सरकार द्वारा समय से पूर्व परीक्षा अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है जिस कारण से विद्यालयों में पाठ्यक्रम भी पूर्ण नहीं हो पाया है। शिक्षकों पर पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने एवं फिर परीक्षाओं का संचालन नवंबर माह में ही करने का दबाव है। ऐसी स्थिति में एक ही समय में विशेष मतदाता पुनरीक्षण एव विद्यालयी कार्यों के पूर्ण करने के दोहरे राजकीय दायित्वों को लेकर असमंजसता की स्थिति बन गई है। आचार्य ने ज्ञापन में बताया कि विशेष मतदाता पुनरीक्षण के अध्यक्ष का कार्य अन्य राजकीय कर्मचारियों के माध्यम से पूर्ण किया जा सकता है लेकिन परीक्षाओं का संचालन एवं पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने का दायित्व केवल शिक्षक वर्ग ही पूर्ण कर सकता है। ऐसी स्थिति में शिक्षकों को विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम से मुक्त रखते हुए पाठ्यक्रम एवं परीक्षा संचालन की कार्यों के दायित्व को पूर्ण करने में ही रहने देना चाहिए। ज्ञापन में अवगत करवाया कि जारी आदेशों में अर्हता दिनांक 1 जनवरी 26 के तहत विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत गठित होने वाली हेल्प डेस्क के लिए अधिकांश विद्यालयों में 2-2 बूथ होने के कारण एक विद्यालय से 6 शिक्षकों को लगाया गया है तथा जहां एक बूथ है वहां से 3 शिक्षकों को लगाया जाने से शिक्षण व्यवस्था प्रभावित होगी और साथ ही विद्यार्थियों के साथ न्याय नहीं होगा।

वर्तमान में 20 नवंबर से राज्य के सभी विद्यालयों में राज्य स्तरीय समान परीक्षा योजना के तहत अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं का संचालन होना है। वहीं परीक्षाएं निर्धारित समय से पूर्व प्रारम्भ होने के कारण विद्यालयों में पाठ्यक्रम बकाया चल रहा है जिसे पूर्ण करवाने का दबाव भी शिक्षकों पर है। ज्ञापन में पाठ्यक्रम पूर्ण करने, परीक्षा समय एवं उसी बीच पुनरीक्षण कार्यक्रम की हेल्प डेस्क में शिक्षकों को लगाये जाने से शिक्षण व्यवस्था एवं परीक्षाएं प्रभावित होने की स्थिति रहेगी, जिससे बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के सफल संचालन एवं अधूरे पाठ्यक्रम को पूर्ण करवाने हेतु छात्र हित में उक्त हेल्प डेस्क कार्यक्रम से शिक्षकों को मुक्त करवाने का आग्रह जिला कलेक्टर से किया गया है।

फैक्टरी में महिला की चोटी मशीन में आई, चमड़ी सहित बाल हटे

घटना विगत 11 अक्टूबर की है, पुलिस ने मामला दर्ज नहीं किया

- पीड़ित परिवार न्याय के लिए पुलिस अधीक्षक के पास पहुंचा

अलवर, (निसं)। एमआईए की बेनामी फैक्टरी में महिला की चोटी मशीन में आ गई। इससे महिला के सिर के चमड़ी सहित बाल हट गये। इस मामले को लेकर पुलिस ने मामला दर्ज नहीं किया। आखिर पीड़ित परिवार न्याय पाने के लिए पुलिस अधीक्षक की शरण में पहुंचे।

जानकारी के अनुसार घटना 11 अक्टूबर की है। जब बिशम्बर अलवर बहाला विशंभर पुत्र किशना जाटव निवासी टोल टैक्स बहाला के पास इंदिरा कॉलोनी बहाला की पत्नी सीमा अलवर के मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र स्थित एक बेनामी फैक्टरी जो सिर्फ प्लाट नम्बर के आधार पर यहां हीटर का मटेरियल उत्पादन बना रही है उसमें कार्य करती है। मेरी पत्नी सीमा व मेरे साले की पत्नी राजकुमारी औद्योगिक क्षेत्र कंपनी एच1/952 कंपनी मालिक पुष्पेंद्र भारद्वाज के पास मजदूरी का काम करती है जिसमें हीटर बनाने का मटेरियल बनाया जाता है 11 अक्टुबर को मेरी पत्नी व मेरे साल की पत्नी राजकुमारी रोजाना की तरह फैक्टरी में सुबह कार्य करने गई। फैक्टरी मालिक ने मेरी पत्नी सीमा को मशीन पर काम करने के लिए बोला मशीन के फैन बेल्ट व कर नहीं होने के कारण सीमा ने मशीन पर कार्य करने के लिए मना कर दिया। परंतु फैक्टरी मालिक बोला की पूर्व में भी इसी मशीन पर महिला बगैर फैन बेल्ट के ही काम करती थी। काम तो इसी पर ही करना होगा। मेरी पत्नी सीमा ने मालिक से बोला कि मेरा पीएफ ईएसआई नहीं कट रहा है, अगर कोई घटना हो जाती जिसका जिम्मेदार कौन होगा तो मालिक बोला कि तुम्हारा ऐप कट रहा है। कोई घटना होती है तो उसका जिम्मेदार मैं खुद हूं। दोपहर करीब 12:30 बजे मेरी पत्नी सीमा की चुन्नी बिना कन्न वाले मशीन में आ गई जिसमें सीमा के सिर के बाल चमड़ी सहित उखड़ गए जिसके कारण बेहोश होकर गिर गई। जब मेरी पत्नी घायल अवस्था में बेहोश थी, कंपनी मालिक ने उद्योग क्षेत्र में इधर-उधर मेडिकल पर दिखाया। जब मेडिकल वालों ने जवाब दे दिया तो ईएसआईसी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। यहां से जयपुर के लिए एसएमएस के लिए रेफर कर दिया पति ने आरोप लगाया कि पुलिस ने जाति पूछ कर उनका मुकदमा दर्ज नहीं किया और कहा कि क्या फैक्टरी मालिक तुम्हें बुलाने गया था, तुम्हारी पत्नी खुद चल कर आई। तुम जाति सूचक शब्द बोल कर कहा कि तुम्हें सिर्फ क्लेम चाहिए और मुकदमा दर्ज नहीं किया। इस पर उन्होंने न्याय पाने के लिए आज जिला पुलिस अधीक्षक को अपनी गुहार लगाई है।

श्रीगंगानगर जिले में डेंगू रोगियों का आंकड़ा दो सौ के करीब

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले में डेंगू रोगियों का आंकड़ा दोहरे शतक के करीब पहुंच रहा है। जिला अस्पताल में 40 सैंपलों की एलाइजा जांच की गई। इनमें से पांच पॉजिटिव पाए गए हैं। अब जिला अस्पताल में भर्ती रोगियों की संख्या 22 हो गई है। नए मरीज तीन जिला मुख्यालय से, एक सादुलशहर और एक पदमपुर ब्लॉक एरिया का रहने वाला है। यह विभाग का आधिकारिक आंकड़ा है, लेकिन इसमें प्राइवेट अस्पतालों में भर्ती मरीजों का आंकड़ा शामिल नहीं है। यहां तक कि तपोवन में हो रही एलाइजा जांच के आंकड़े भी शामिल नहीं है। तपोवन में 27 एलाइजा टेस्ट किए गए। इनमें 12 पॉजिटिव आए हैं। इनमें से तीन श्रीगंगानगर जिले के हैं, शेष फाजिल्का और अबोहर तहसील के हैं। एक अक्टूबर से अब तक के डेटा की बात करें तो 3 नवंबर को आधिकारिक आंकड़ा 78 जबकि कुल आंकड़ा 81 पहुंच गया है। एक जनवरी से अब तक यह आंकड़ा 189 पहुंच चुका है।

जिला अस्पताल की डीसी डॉ. ज्योत्सना चौधरी ने बताया कि अस्पताल में डेंगू वार्ड में अभी मरीज भर्ती करने को पर्याप्त संसाधन मौजूद हैं। इसलिए वार्ड को नहीं बढ़ाया गया है। जिला अस्पताल के ब्लड बैंक में एसडीपी बनाने की प्रक्रिया सही चल रही है और जरूरत के हिसाब से मरीजों को एसडीपी दिया जा रहा है। स्थिति नियंत्रण में है और मरीज उपचार के बाद ठीक होकर घर लौट रहे हैं। अभी वार्ड में 22 मरीज उपचाराधीन हैं।

जिला अस्पताल में मच्छरों की फौज पर नियंत्रण के लिए प्रयास शुरू नहीं किए गए। नगरपरिषद से मनरेगा मजदूर आए ही नहीं। लिहाजा सफाई का अभियान छेड़ा ही नहीं गया। अस्पताल सूत्रों के अनुसार पीएमओ की ओर से 30 मजदूर मांगे गए थे, लेकिन एक भी नहीं आया। दोपहर में पता किया तो नगरपरिषद की ओर से बताया गया कि गलतफहमी के कारण मजदूर नहीं भेजे जा सके। अस्पताल के स्टाफ ने भी बताया कि मच्छरों के नियंत्रण के लिए प्रभावी प्रयास नहीं हो रहे।

लोगों को नेशनल हाइवे निर्माण के नाम पर बेघर किया

भीलवाड़ा, (निसं)। नेशनल हाइवे 158 की परियोजना निदेशक ने झूठा वादा कर मकान तोड़ दिये। 700 मीटर के अधूरे हाइवे निर्माण की दुर्दशा ऐसी कि कभी भी बहुत बड़ा हादसा हो सकता है।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 158 मांडल आसींद रास को बनकर तैयार हुए 3 साल हो गए हैं, इस नेशनल हाइवे पर आसींद कस्बे के मध्य से 700 मी अधूरे निर्माण कार्य 3 वर्षों से सुर्खियां बटोर रहा है। कभी नेशनल हाइवे के निर्माण को लेकर सीमा में आ रहे मकानों को तोड़ने के नाम पर परियोजना निदेशक द्वारा पल्ला झाड़ा गया तो कभी नेशनल हाइवे पर बने मकानों को तोड़कर परियोजना निदेशक की हठधर्मीता सामने आई। 2 महीने पूर्व हाइवे सीमा के नजदीक आ रहे मकानों को यह कहकर तोड़ दिए गए कि उन्हें शीघ्र मुआवजा राशि तथा हाइवे का निर्माण पूरा कर दिया जाएगा, आज यहां तोड़े गए मकान में लोग टेंट लगाकर रहने को मजबूर हो गए हैं। तीन साल में अधूरे हाइवे निर्माण और इस क्षतिग्रस्त हाइवे पर कई अधिकारी व राजनेताओं का गुजरना हुआ, निर्माण कार्य पूरा करने की बात पर परियोजना निदेशक राकेश कुमार से इन अधिकारियों राजनेताओं ने संपर्क किया तो हमेशा टालमटोल का जवाब मिला। सरकार की उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी के आसींद सवाईभोज दौरे के दौरान भी परियोजना निदेशक को जमकर फटकार लगाई गई। कस्बे वासियों ने परियोजना निदेशक राकेश कुमार पर आरोप लगाए कि उनसे झूठा वादा कर उनके मकान तोड़ दिए गए।

- तोड़े गए मकान में लोग टेंट लगाकर रहने को मजबूर

राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण के नाम पर लोगों के घर तोड़ दिये।

विधायक जब्बर सिंह सांखला ने बताया कि परियोजना निदेशक को फोन लगाए गए लेकिन उन्होंने फोन उठाया ही नहीं।

वाहन चोर गिरफ्तार, पांच बाइक बरामद

श्रीगंगानगर, (निसं)। पुरानी आबादी पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार कर शहर से चोरी हुई 5 मोटरसाइकिलें बरामद की हैं। आरोपी मोटरसाइकिल चोरी के मामले में पहले भी गिरफ्तार हो चुका है।

एसएचओ रजिराम ने बताया कि थाना इलाके से चोरी हो रही मोटरसाइकिलों की बरामदगी तथा आरोपी पकड़ने को एसपी डॉ. अमृता दुहन के निर्देश पर एएसआई छिंद्रपालसिंह के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया था। टीम ने 8 वाई मोहनपुरा व हाल 6 ए निवासी 24 वर्षीय लवप्रीतसिंह उर्फ लब्बु पुत्र दारासिंह उर्फ धारा को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से उसकी निशानदेही पर चोरी की 5 मोटरसाइकिलें बरामद की। आरोपी ने पूछताछ में बताया कि उसने पुरानी आबादी थाना क्षेत्र के अलावा कोतवाली क्षेत्र से दो तथा जवाहरनगर थाना क्षेत्र से भी दो मोटरसाइकल चोरी की थी। इनमें से एक जस्सासिंह मार्ग से, एक नेहरू पार्क के पास से तथा दो मोटरसाइकिल छजगरिया मोहल्ले के पास से चोरी करना स्वीकार किया है। आरोपी से चोरी हुई अन्य मोटरसाइकिलों के बारे में पूछताछ की जा रही है।

जांच अधिकारी एएसआई छिंद्रपाल सिंह ने बताया कि 21 अक्टूबर दोपहर में कुंज विहार से सुखवीर बराड़ की मोटरसाइकिल घर के आगे से चोरी हुई थी। परिवादी के परिवाद पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की। घटनास्थल से सीसीटीवी कैमरों के फुटेज देखे गए तो आरोपी की पहचान की गई, क्योंकि आरोपी पर पहले से मोटरसाइकिल चोरी के मुकदमे हैं और गिरफ्तार हो चुका है। आरोपी नशे का आदी है। पहले मिर्जेवाला रहते था, फिर मोहनपुरा और अब 6 ए में अपनी बहन के गांव में रहता है।

मानसिक रूप से कमजोर महिला ने फांसी लगाई

श्रीडूंगरगढ़, (निसं)। यहां एक मानसिक रूप से कमजोर महिला ने सुसाइड कर लिया। महिला ने शिवम मानव कल्याण सेवा संस्थान के कमरे में पंखे से चुन्नी का फंदा लगाकर अपनी जान दे दी। मृतका की पहचान 40 वर्षीय किरण पत्नी जितेंद्रसिंह निवासी सुडाबास, गोगामेडी, रतनगढ़ के रूप में हुई है। वह पिछले एक साल से बिग्गाबास के वार्ड नंबर 24 में संचालित आश्रम में रह रही थी। सूचना मिलने पर हेड कॉन्स्टेबल रामस्वरूप अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को नीचे उतारकर उपजिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। रामस्वरूप ने बताया कि मृतका के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है। परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

शिक्षक पिता के पुत्र ने विद्यालय का काया पलट का फैसला लिया

जालोर, (कासं)। जालोर शहर के मूल निवासी एवं वर्तमान में प्रवासी व्यवसायी दिलीपराज कोठारी ने अपने पिताजी अमृतराज कोठारी की स्मृति को चिर स्थाई बनाने के लिए कुछ हटकर बड़ा फैसला किया है। स्थानीय समाज सेवक एवं व्यवसायी पुष्पराज बोहरा की प्रेरणा से दिलीपराज कोठारी महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, शिवाजी नगर जालोर की कायापलट करने के लिए संकल्पित हुए, जिसमें कभी उनके पिताजी अमृतराज कोठारी ने शिक्षक एवं संस्था प्रधान के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। दिलीपराज कोठारी की शिक्षा-दीक्षा जालोर में हुई तथा शिक्षा उपरांत व्यवसाय के उद्देश्य से बैंग्लूरू प्रवास किया। वर्तमान में एक सफल व्यवसायी के रूप में स्थापित दिलीपराज अपनी जड़ों को नहीं भूले तथा प्रेरक पुष्पराज बोहरा एवं अपने मित्र एवं राजनेता रविन्द्र सिंह बालावत से चर्चा कर कोठारी-भण्डारी चैरिटेबल ट्रस्ट, जालोर-बैंग्लूरू के माध्यम से महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय अंग्रेजी माध्यम, शिवाजी नगर, जालोर के नवीन भवन निर्माण का फैसला किया, ताकि समर्पित शिक्षक रहे पिताजी की स्मृति को चिरस्थाई बनाया जा सके।

इस संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से भामाशाह दिलीपराज कोठारी ने प्रेरक पुष्पराज बोहरा तथा रविंद्र सिंह बालावत के साथ जिला कलेक्टर डॉ प्रदीप के. गावडे से मुलाकात कर नवीन भवन निर्माण के लिए प्रस्ताव प्रदान किया। जिला कलेक्टर ने कोठारी के इस निर्णय की सराहना करते हुए प्रसन्नता प्रकट की। जिला शिक्षा अधिकारी भंवरलाल परमार ने शिक्षा के क्षेत्र के विकास हेतु भामाशाह दिलीपराज कोठारी के महत्वपूर्ण निर्णय का स्वागत करते हुए आभार प्रकट किया।

रावला मंडी में राशन वितरण बाधित

रावलामंडी, (निसं)। उचित मूल्य की दुकानों पर राशन वितरण में बाधा आ रही है। सर्वर डाउन होने और ई-पोस मशीनों में स्टॉक अपडेट न होने के कारण उपभोक्ताओं को खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। इससे स्थानीय लोग काफी परेशान हैं। उपभोक्ताओं को राशन न मिल पाने का मुख्य कारण सर्वर की खराबी और डीलरों की ई-पोस मशीनों में स्टॉक का अपडेट न होना है। गोदामों में राशन उपलब्ध होने के बावजूद, डीलरों के पास मशीन में जानकारी अपडेट न होने से वितरण रुक गया है। इसके अलावा, कुछ ई-पोस मशीनें आधार ई-केवाईसी पूरी न होने के कारण बंद पड़ी हैं।

जिला आपूर्ति अधिकारी से बात करने पर उन्होंने बताया कि यह समस्या सरकार द्वारा ई-पोस मशीन में सॉफ्टवेयर अपडेट के कारण उत्पन्न हुई है। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस समस्या को जल्द ही ठीक कर लिया जाएगा, ताकि उपभोक्ताओं को परेशानी न हो।

दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से है भारत : राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े

- राज्यपाल ने राष्ट्रीय एकात्मता विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया
- राज्यपाल बागड़े ने जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर आधारित प्रदर्शनी का किया अवलोकन

बांसवाड़ा, (निसं)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे ने गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय में "राष्ट्रीय एकात्मता : विविधता में एक चेतना" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने संगोष्ठी के अंतर्गत जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं अवलोकन करते हुए कहा कि राष्ट्र अनेक भाषा, संस्कृति, मतों, परंपराओं से मिलकर बनता है राष्ट्र की एक सीमा होती है। राष्ट्र में उस देश का नागरिक रहता है। कोई दूसरे देश का नागरिक आता है तो उसे उस देश की नागरिकता लेनी पड़ती है। संगठित जनसमुदाय, निश्चित भूभाग, संस्कृति, परंपरा, एकता की भावना हमें एक सूत्र में बांधती है। देश के नागरिकों में देश के मूल्यों, आदर्शों, मातृभूमि, समुदाय के प्रति निष्ठा और प्रेम होना चाहिए।

गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने संबोधित किया।

राज्यपाल ने कहा कि एकता की भावना सिर्फ बातों में नहीं व्यक्ति के कर्मों में भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि देश जब बनता है तब एक देश से दूसरा देश बन जाता है। कारण अलग-अलग होते हैं। बागड़े ने कहा कि हमारे विघटन, हमारी गरीबी, हमारे एकसंघ नहीं होने का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने देश पर अतिक्रमण कर लिया। वह हमने अंग्रेजों से वापस लिया। एक राष्ट्र विकसित बनता है जब नागरिक एकजुट होकर देशप्रेम के साथ अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं। नागरिक अपनी शक्ति, बुद्धि, त्याग, आर्थिक स्वावलंबन से देश को विकसित बनाते हैं। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से हैं। पहले गांव में कच्चे मकान होते थे जो अब पक्के बन गए हैं क्योंकि लोगों के पास पैसा आया है। देश की अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि रामायण और महाभारत हमारी संस्कृति का मूल है। राम का नाम सभी भाषाओं में है। भजन-कीर्तन, व्याख्यान, भाषण, शिक्षण अलग-अलग भाषाओं में होता है मगर देवधर्म सबका एक ही है। एक ही गणेशजी की आरती अनेक भाषाओं में होती है मगर सबका भाव एक ही होता है। अनेक भाषा, खान-पान, वेशभूषा अलग-अलग होने के बावजूद हम सब एक हैं। हमारी संस्कृति भाषा अनेक भाव एक, पथ अनेक-गंतव्य एक की है।

लॉरा वोलवार्ट ने विश्व कप के सेमीफ़ाइनल और फ़ाइनल में शतक लगाकर भारत की स्मृति मंधाना को पीछे छोड़ते हुए आईसीसी की महिला वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर एक स्थान हासिल कर लिया है। -लॉरा वोलवार्ट

दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज, आईसीसी में बल्लेबाजी रैंकिंग में नबंर 1 का स्थान हासिल करने पर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

महमूदुल हसन

सलामी बल्लेबाज महमूदुल हसन आयरलैंड के खिलाफ आगामी घरेलू श्रृंखला के लिए बंगलादेश टेस्ट टीम में लौट आए हैं। हाल ही में कप्तानी विवाद के बाद यह बंगलादेश का पहला टेस्ट मैच होगा, जो नजमुल हुसैन द्वारा मौजूदा विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के लिए इस प्रारूप में कप्तान बने रहने के फैसले के साथ समाप्त हुआ था। महमूदुल हसन, जिनका इस प्रारूप में औसत केवल 22.79 है, को श्रीलंका के खिलाफ बांग्लादेश के पिछले टेस्ट मैच में टीम से बाहर रखा गया था। हाल ही में नेशनल क्रिकेट लीग में शतक लगाने के बाद इस 24 वर्षीय खिलाड़ी को टीम में वापस लाया गया है।

क्या आप जानते हैं ?... दक्षिण अफ्रीका ने जिम्बाब्वे को टैस्ट मैच के दूसरे दिन ही एक पारी और 21 रन से हराकर दो दिन में जीत हासिल करने वाली तीसरी टीम का दर्जा मिला। इससे पहले इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया यह सम्मान पा चुकी है।

राजस्थान की कौनसी टीम खेलेगी रणजी मुकाबला ?

आखिर इस दर्द की दवा क्या है, कौन संभालेगा राजस्थान की डूबती क्रिकेट को

जयपुर, 4 नवंबर। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन का सियासी विवाद लगातार बढ़ता जा रहा है। एडहॉक कमेटी कन्वीनर दीनदयाल कुमावत के खिलाफ अब कमेटी के चार सदस्यों ने आर-पार की लड़ाई का ऐलान कर दिया है।

सरकार ने दो बार बना दी आरसीए में एडहॉक कमेटी, लेकिन दोनों ही बार कमेटी सदस्यों के बीच हो गया विवाद, पहले विधायक जयदीप बिहाणी व धनंजय खींवसर के बीच हुआ विवाद, अब डीडी कुमावत व धनंजय सिंह खींवसर हैं आमने-सामने, पिंकेश जैन, आशीष तिवाड़ी व मोहित हैं धनंजय सिंह के साथ, लेकिन इस बार तो दो-दो रणजी टीम बना दी गई राजस्थान की। अब बीसीसीआई के सामने एक बार फिर आरसीए की होगी किरकिरी, अब सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए इस मामले में, वरना विवाद के चलते आरसीए को किया जा सकता है सस्पेंड।

आरसीए की एडहॉक कमेटी ने किया क्रिकेट का बेड़ा गर्क !

चारों ने कुमावत की जारी राजस्थान टीम के अलावा अलग से टीम की घोषणा कर दी। राजस्थान रणजी की दो टीमें बना दी एडहॉक कमेटी ने, पहले कन्वीनर डीडी कुमावत ने टीम की घोषणा की, कुछ देर बाद चार सदस्यों ने नई टीम बना दी। अब राजस्थान की कौनसी टीम खेलेगी रणजी मुकाबला? कमेटी सदस्यों के आपसी विवाद ने गर्त में पहुंचाया राजस्थान क्रिकेट को, क्या अब राजस्थान क्रिकेट टीम पर प्रतिबंध लगने की संभावना जताई जा रही है?

डीडी कुमावत द्वारा राजस्थान रणजी टीम व अंडर-23 टीम घोषित

आरसीए तदर्थ समिति ने रणजी ट्रॉफी में मुंबई टीम के विरुद्ध बढत लेने वाली राजस्थान रणजी टीम व अंडर 23 ट्रॉफी में बंगाल टीम के सामने शानदार प्रदर्शन करने वाली राजस्थान टीमों को राजस्थान सीनियर चयनकर्ताओंरणजी ट्रॉफी के हैदराबाद के विरुद्ध तथा अंडर 23 वन डे ट्रॉफी के लिए यथावत रखते हुए दोनों टीमें घोषित की ।

राजस्थान टीम :- महिपाल लोमरोर (कप्तान), दीपक हुड्डा, अभिजीत तोमर, सचिन यादव, कार्तिक शर्मा, अजय सिंह कुकना, कुणाल सिंह राठौड़, समर्पित जोशी, शुभम गढ़वाल, सलमान खान, अनिकेत चौधरी, अशोक शर्मा, आकाश सिंह, राहुल चाहर, दीपक चौधरी, अंडर 23 एक दिवसीय ट्रॉफी हेतु राजस्थान टीम घोषित ।

राजस्थान टीम :- सुमित गोदारा, सर्वज्ञ पानेरी, रोहन राजभर, करण लाम्बा, राज शर्मा, मुकुल चौधरी, अनिरुद्ध सिंह, मोहित चांगरा, दीपेंद्र सिंह, चेतन शर्मा, गणेश सुथार, शोभित मिश्रा, आयुष अमेरिया, भगवान् सिंह, दर्शन जैन, मिनाफ शेख।

आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्यों द्वारा घोषित राजस्थान टीम

हैदराबाद में 8 से 11 नवंबर, 2025 तक हैदराबाद के खिलाफ होने वाले अगले रणजी ट्रॉफी मैच के लिए आरसीए सीनियर टीम के सिलेक्शन के लिए हुई।

निम्नलिखित खिलाड़ियों का सिलेक्शन किया गया है:-

1 सचिन यादव अलवर
2 महिपाल लोमरोर (कप्तान) नागौर
3 दीपक हुडा प्रोफेशनल
4 कार्तिक शर्मा भरतपुर
5 कुणाल सिंह राठौड़ कोटा
6 अजय सिंह कुकाना श्रीगंगानगर
7 राहुल चाहर भरतपुर
8 अनिकेत चौधरी जयपुर
9 आकाश सिंह भरतपुर
10 अशोक शर्मा जयपुर
11 सलमान खान झालावाड़
12 रामनिवास गोलाडा जयपुर
13 समर्पित जोशी उदयपुर
14 शुभम गढ़वाल जोधपुर
15 साहिल दीवान अजमेर

जयपुर में जायसवाल के 156 रनों की बदौलत मुंबई ने ड्रॉ सुनिश्चित किया

अहमदाबाद, 4 नवंबर। अहमदाबाद में एक बेहद करीबी मुकाबले में, हरियाणा ने मेजबान गुजरात को 4 विकेट से हराकर लगातार तीसरी जीत दर्ज की। पहले दिन कोई खेल नहीं होने के बावजूद, मैच में काफ़ी रोमांच देखने को मिला और हरियाणा ने बढ़त बना ली। गुजरात ने दिन की शुरुआत 8 विकेट पर 113 रन से की और अंत में केवल 137 रन ही बना सका, जिसमें निखिल कश्यप ने चार विकेट लिए। जीत के लिए 62 रनों की जरूरत थी, हरियाणा का स्कोर 18/4, 30/5 और फिर 43/6 हो गया। पार्थ वत्स और यशवर्धन दलाल ने सुनिश्चित किया कि आगे कोई दिक्कत न हो और वे अपनी टीम को जीत दिलाएं।

मुंबई ने राजस्थान से ड्रा खेला

राजस्थान को पहली पारी में बढ़त मिलने के बाद, मुंबई ने अपनी दूसरी पारी में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन मैच ड्रॉ रहा। यशस्वी जायसवाल के 156 रनों की पारी ने मुंबई को ड्रा दिलाया, जबकि मुशीर खान ने 63 रनों की पारी खेली। मुंबई ने दूसरी पारी में 3 विकेट पर 269 रन बनाए। जिसके बाद खिलाड़ियों ने हाथ मिलाया।

कर्नाटक ने केरल को पारी से हराया

मोहसिन खान ने 23.3 ओवर में 29 रन देकर 6 विकेट चटकाए और कर्नाटक को केरल के खिलाफ पारी और 164 रनों से शानदार जीत दिलाई। फ़ॉलोऑन खेलते हुए, केरल ने दिन की शुरुआत 10/0 से की, लेकिन वे लगातार विकेट गंवाते रहे, जिसमें सलामी बल्लेबाज़ कृष्ण प्रसाद का सर्वोच्च स्कोर 33 रन रहा। अपना तीसरा प्रथम श्रेणी मैच खेल रहे 22 वर्षीय ऑफ स्पिनर मोहसिन ने अपने पहले ही मैच में पांच विकेट लेकर कर्नाटक की जीत सुनिश्चित की, हालाँकि केरल ने 79.3 ओवर तक कड़ी टक्कर दी।

उत्तराखंड की रोमांचक जीत

मयंक मिश्रा के पांच विकेटों की बदौलत उत्तराखंड ने दिल्ली में सर्विसेज के खिलाफ कम स्कोर वाले मैच में रोमांचक जीत हासिल की। जीत के लिए 123 रनों का पीछा करते हुए, सर्विसेज ने दिन की शुरुआत 5 विकेट पर 71 रनों से की। अर्जुन शर्मा (23) को छोड़कर, कोई भी अन्य बल्लेबाज़ 20 रन तक नहीं पहुंच सका। उत्तराखंड के मयंक, जगदीश सुचित और अवनीश सुधा ने लगातार रन बनाए और अंततः सर्विसेज़ को 105 रनों पर आउट करके 17 रनों से जीत दिलाई।

सीनियर महिला इंटर जोनल टी-20 ट्रॉफी में खेलेगी विश्व विजेता शेफाली

मुंबई, 4 नवंबर। नागालैंड सीनियर वुमेंस इंटर जोनल टी20 ट्रॉफी 2025 क्रिकेट टूर्नामेंट की मेजबानी 4 से 14 नवंबर तक करने के लिए तैयार है।यह घरेलू महिला टी20 क्रिकेट प्रतियोगिता का तीसरा संस्करण होगा, जिसकी शुरुआत साल 2022 में हुई थी। यह प्रतियोगिता भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा आयोजित की जाती है। 2025 सीनियर महिला इंटर जोनल टी20 ट्रॉफी में छह क्षेत्रीय क्रिकेट टीमें हिस्सा लेंगी, जिसमें नॉर्थ जोन, साउथ जोन, ईस्ट जोन, वेस्ट जोन, सेंट्रल जोन और नॉर्थ ईस्ट जोन का नाम शामिल है। भारत की वर्ल्ड कप विजेता शेफाली वर्मा को नॉर्थ जोन टीम का कप्तान नियुक्त किया गया है, जबकि इस साल की शुरुआत में भारत को अंडर-19 टी-20 विश्व कप खिताब दिलाने वाली निकी प्रसाद साउथ जोन टीम की कप्तानी करेंगी। इस टूर्नामेंट में कई प्रमुख खिलाड़ी शामिल होंगे, जिनमें साइमा ठाकोर, अमनदीप कौर और आशा शोभना शामिल हैं।

पहले राउंड के बाद दिवेश और उमेद संयुक्त बढ़त पर

भुवनेश्वर, 4 नवंबर। दिवेश राणा और उमेद कुमार की हरियाणा की जोड़ी ने भुवनेश्वर गोल्फ क्लब में खेले जा रहे पीजीटीआई नेक्सजेन के दिलीप टिर्की आमंत्रण 2025 के पहले राउंड में पांच अंडर 67 का स्कोर बनाकर संयुक्त बढ़त हासिल कर ली।

ओडिशा राज्य में खेले जा रहे पीजीटीआई के पहले आयोजन में सौरव राठी और बिपिन मुखिया संयुक्त शीर्ष पर चल रहे खिलाड़ियों से दो शॉट पीछे संयुक्त तीसरे स्थान पर रहे। 20 लाख रुपये इनामी इस आयोजन में प्रदीप भगत स्थानीय पेशेवरों में सर्वोच्च स्थान पर रहे, उन्होंने 77 का स्कोर बनाया और 58 खिलाड़ियों में संयुक्त 37वें स्थान पर रहे।

इस टूर्नामेंट का समर्थन भारतीय हॉकी के दिग्गज दिलीप टिर्की कर रहे हैं। भारत में पेशेवर गोल्फ़ को बढ़ावा देने के पीजीटीआई के निरंतर प्रयासों को इसके टूर पार्टनर रोलेक्स, अमूल, इंडसइंड बैंक, विक्टोरियस चॉइस, कैंपा, अमृतांजन इलेक्ट्रो प्लस, गोल्फ प्लस मंथली और गोल्फ डिज़ाइन इंडिया द्वारा पूरे वर्ष समर्थन दिया जाता है।

हैटसन बैडमिंटन सेंटर के ऋत्विक संजीवी ने मैंगलोर इंडिया इंटरनेशनल चैलेंज में जीता स्वर्ण पदक

नई दिल्ली, 4 नवंबर। हैटसन बैडमिंटन सेंटर के ऋत्विक संजीवी ने मंगलुरु में आयोजित मैंगलोर इंडिया इंटरनेशनल चैलेंज 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में पुरुष एकल वर्ग का खिताब जीतकर तमिलनाडु और भारत का गौरव बढ़ाया। विश्व रैंकिंग में 60वें स्थान पर काबिज 22 वर्षीय ऋत्विक ने हमवतन रौनक चौहान (14-21, 21-19, 21-19) के खिलाफ एक कड़े फाइनल में जीत हासिल करने के लिए कड़ी टक्कर दी। यह जीत इस सीजन में उनका पहला खिताब है, जिसने बैडमिंटन में भारत के शीर्ष उभरते सितारों में से एक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को और मजबूत किया है।

हैटसन बैडमिंटन सेंटर के मुख्य कोच रजनीकांत ने ऋत्विक की उपलब्धि पर गहरा गर्व व्यक्त किया: "ऋत्विक के समर्पण, कड़ी

मेहनत और सेंटर की कोचिंग ने एक ऐसा चैंपियन तैयार किया है जिस पर हम सभी को गर्व है। हम ऐसी प्रतिभाओं को निखारने और भारतीय बैडमिंटन के भविष्य को आकार देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

ऋत्विक को बधाई देते हुए, हैटसन एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड के अध्यक्ष,आर.जी. चंद्रमोगन ने कहा, "ऋत्विक की जीत हैटसन बैडमिंटन सेंटर की स्थापना के पीछे के दृष्टिकोण को पुष्ट करती है। हम भारत में होनहार खिलाड़ियों का समर्थन और खेल प्रतिभाओं को विकसित करना जारी रखेंगे।"

टूर्नामेंट में अन्य उल्लेखनीय प्रदर्शनों में महिला एकल में मानसी सिंह की जीत और ध्रुव रावत-मनीषा कुक्कापल्ली की मिश्रित युगल जोड़ी का खिताब शामिल था, जिसने कई मोर्चों पर भारतीय बैडमिंटन की ताकत का प्रदर्शन किया।

अशरफुल बांगाल्देश के बल्लेबाजी कोच नियुक्त

ढाका, 4 नवंबर। पूर्व बंगलादेशी खिलाड़ी मोहम्मद अशरफुल को आयरलैंड के खिलाफ आगामी घरेलू श्रृंखला से पहले राष्ट्रीय बल्लेबाजी कोच नियुक्त किया गया है। अशरफुल वरिष्ठ सहायक कोच मोहम्मद सलाहुद्दीन की जगह लेंगे, जो बीसीबी द्वारा डेविड हेम्प से अलग होने के बाद से बल्लेबाजी इकाई की देखरेख कर रहे हैं। 2014 में बीपीएल में मैच फिक्सिंग के कारण प्रतिबंधित होने के बाद अशरफुल पहली बार राष्ट्रीय ड्रेसिंग रूम में वापसी करेंगे। अशरफुल ने घरेलू सर्किट के साथ-साथ ग्लोबल सुपर लीग में भी विभिन्न पदों पर बल्लेबाजी कोच के रूप में काम किया है।

स्टोक्स, बेथेल समेत 14 खिलाड़ियों को दो साल का ईसीबी अनुबंध

लंदन, 4 नवंबर। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने मंगलवार को 14 खिलाड़ियों के लिए दो साल के केंद्रीय अनुबंधों की घोषणा की, जो सितंबर 2027 तक चलेंगे। टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स, सीमित ओवरों के कप्तान हैरी ब्रुक, सीनियर खिलाड़ी जोस बटलर, जो रूट और आदिल राशिद इस सूची में शामिल खिलाड़ियों में शामिल हैं। 12 अन्य खिलाड़ियों को एक साल के अनुबंध की पेशकश की गई, जबकि चार और खिलाड़ियों को विकास अनुबंध दिए गए।

तेज़ गेंदबाज जोफ्रा आर्चर, जो अपनी चोटों की समस्या को पीछे छोड़ते हुए नजर आ रहे हैं, को दो साल का अनुबंध दिया गया है, जबकि उनके साथी तेज गेंदबाज़ मार्क वुड ने एक साल का अनुबंध चुना है। सलामी बल्लेबाज बेन डकेट और विकेटकीपर जेमी स्मिथ, जिन्होंने हाल के दिनों में सभी प्रारूपों में अपनी जगह पक्की कर ली है, ने भी दो साल के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं।

30 खिलाड़ियों की सूची में छह नए नाम शामिल हैं। युवा ऑलराउंडर जैकब बेथेल, जिन्होंने हाल ही में एक दूसरी श्रेणी की टी20 टीम का नेतृत्व किया था, उनके साथ सोनी बेकर, लियाम डॉसन, साकिब महमूद, जेमी ओवरटन और ल्यूक वुड भी शामिल हैं।

कंधे में खिंचाव के कारण ब्रेविस पाक के खिलाफ वनडे सीरीज से बाहर

फैसलाबाद, 4 नवंबर। दक्षिण अफ्रीका के युवा बल्लेबाज डेवाल्ड ब्रेविस 1 नवंबर को लाहौर में तीसरे टी20 मैच के दौरान कंधे की मांसपेशियों में हल्के खिंचाव के कारण आज से पाकिस्तान के खिलाफ शुरू हो रही तीन मैचों की वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं। 22 वर्षीय ब्रेविस इस महीने के अंत में होने वाले दक्षिण अफ्रीका के भारत दौरे से पहले पुनर्वास के लिए पाकिस्तान में टीम के साथ रहेंगे, जिसमें दो टेस्ट, तीन वनडे और पांच टी20 मैच शामिल हैं। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने अभी तक ब्रेविस के प्रतिस्थापन की घोषणा नहीं की है।

उनकी अनुपस्थिति पहले से ही कमज़ोर वनडे टीम को और कमज़ोर कर देती है, क्योंकि वरिष्ठ खिलाड़ी एडेन मार्करम और कैगिसो रबाडा को आराम दिया गया है, और तेज गेंदबाज क्वेना मफाका और एनरिक नॉर्टजे चोटों के कारण बाहर हैं। मैथ्यू ब्रीट्ज़के वनडे में टीम की कप्तानी करेंगे, जबकि क्विंटन डी कॉक के संन्यास लेने का फैसला बदलने के बाद पहली बार 50 ओवर के प्रारूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। ब्रेविस ने पाकिस्तान दौरे के सभी मैचों में हिस्सा लिया, और उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन लाहौर में 54 रनों की आक्रामक पारी रहा। अब तक छह एकदिवसीय मैचों में, उन्होंने 49 के सर्वोच्च स्कोर के साथ 110 रन बनाए हैं।

वर्ल्ड कप में देर से शामिल हुई शेफाली वर्मा ने सचिन तेंदुलकर को दिया अपनी सफलता का श्रेय

मुंबई, 4 नवंबर। महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 के फाइनल में प्लेयर ऑफ द मैच बनी शेफाली वर्मा रविवार को नवी मुंबई में दक्षिण अफ्रीका पर भारत की 52 रनों की जीत में अहम भूमिका निभाने के बाद शब्दहीन रह गईं। उन्होंने अचानक टीम में वापसी की और अपने शानदार प्रदर्शन से भारत को जीत दिलाई।

सलामी बल्लेबाज को प्रतीका रावल के चोटिल होने के बाद सेमीफाइनल से पहले ही टीम में शामिल किया गया था उन्होंने फ़ाइनल में 78 गेंदों में 87 रनों की शानदार पारी खेली और अपनी टीम को 298/7 का स्कोर बनाने में मदद की। इसके बाद गेंदबाजी में भी उन्होंने दमदार प्रदर्शन किया और 2/36 का आंकड़ा दर्ज किया, जिससे प्रोटियाज को लक्ष्य का पीछा करने से रोका जा सका।

दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वुलफार्ट ने अपने देश की ओर से बेहतरीन प्रदर्शन किया और लगातार दूसरा शतक जड़ा। लेकिन दीप्ति शर्मा के पांच विकेटों ने मैच का रुख पूरी तरह से बदल दिया और मेजबान टीम ने ऐतिहासिक जीत सुनिश्चित की।

मैच के बाद शेफाली वर्मा ने कहा, "मैंने शुरुआत में ही कहा था कि भगवान ने मुझे यहां कुछ अच्छा करने के लिए भेजा है, और आज यह सच में हो गया। मुझे बहुत खुशी है कि हम जीत गए और मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकती। यह मुश्किल था, लेकिन मुझे खुद पर पूरा विश्वास था कि अगर मैं शांत रहूंगी, तो मैं सब कुछ हासिल कर सकती हूं।"

"मैं बस अपनी टीम को जीत दिलाना चाहती थी। मेरा मन साफ था, और मैंने अपनी योजनाओं पर काम किया। इसलिए, मुझे खुशी है कि मैं उन्हें लागू कर पाई और सभी मेरा समर्थन कर रहे थे। उन्होंने (सीनियर खिलाड़ियों ने) मुझे बस अपना खेल खेलने के लिए कहा, और जब आप यह जान जाए कि क्या करना है, तो बस यही काफी होता है।" वर्मा ने यह भी बताया कि भारतीय क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर का समर्थन मिलना उन्हें बहुत प्रोत्साहित करता था। यह एक बहुत ही यादगार पल है। जब मैंने उन्हें (सचिन तेंदुलकर) देखा, तो मुझे बहुत हौसला मिला। मैं उनसे बात करती रहती हूं, वे मुझे हौसला देते रहते हैं। वे क्रिकेट के मास्टर हैं, और हम उन्हें देखकर ही प्रेरित होते रहते हैं।"

वहीं, दीप्ति शर्मा को टूर्नामेंट की प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया, क्योंकि उन्होंने वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा 22 विकेट लिए - जो कि दूसरे स्थान की ऑस्ट्रेलिया की ऐनाबेल सदरलैंड से पांच ज्यादा थे। 28 वर्षीय खिलाड़ी ने खेल के संतुलन में रहते हुए दक्षिण अफ्रीका के मध्य और निचले क्रम को तहस-नहस कर दिया, साथ ही उन्होंने प्रोटियाज की कप्तान वुलफार्ट का अहम विकेट भी लिया। इससे पहले उन्होंने भारत के लिए बल्ले से कमाल का प्रदर्शन करते हुए 58 रन बनाए थे। शर्मा ने कहा, "ईमानदारी से कहूं तो यह एक सपने जैसा लगता है। (यह) सच में अच्छा लगता है।

कल से शुरू होगा सांसद खेल महोत्सव 2025

नई दिल्ली, 4 नवंबर। सांसद खेल महोत्सव 2025 - पूर्वी दिल्ली 6 नवंबर 2025 को ईस्ट विनोद नगर स्टेडियम में शुरू होगा, जो राष्ट्रीय राजधानी में खेलों और एथलेटिक्स के एक भव्य उत्सव का सूत्रपात करेगा। भारत को एक वैश्विक खेल महाशक्ति बनाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप, इस आयोजन का उद्देश्य फिटनेस की संस्कृति को बढ़ावा देना, उभरती प्रतिभाओं की पहचान करना और खेलों को राष्ट्रीय विकास के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में बढ़ावा देना है। इस महोत्सव में पूर्वी दिल्ली के 18 स्थानों पर एथलेटिक्स, नमो रन, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, कुश्ती आदि सहित 11 खेल स्पर्धाएँ आयोजित की जाएंगी। 6 नवंबर से 7 दिसंबर तक तीन चरणों में आयोजित होने वाले इस आयोजन का समापन 25 दिसंबर 2025 को एक भव्य समापन समारोह के साथ होगा। इस आयोजन का उद्घाटन कॉर्पोरेट मामलों और सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री तथा पूर्वी दिल्ली के सांसद हर्ष मल्होत्रा द्वारा किया जाएगा।

14 व 16 साल की लड़कियों एवं लड़कों में प्रतिभा तराशने के लिए अस्मिता लीग का आयोजन 10 नवंबर को राजस्थान विवि. खेल मैदान पर

जयपुर, 4 नवंबर। 14 व 16 साल की लड़कियों एवं लड़कों में प्रतिभा तराशने के लिए अस्मिता लीग का आयोजन 10 नवम्बर को राजस्थान विश्वविद्यालय खेल मैदान पर होगा। लड़कियों की लीग 10 नवम्बर को सुबह 7:30 चालू होगी और लड़कों की लीग 11/11/2025 को सुबह 7:30 बजे चालू होगी। 14 वर्ष में जो लड़कियां एवं लड़के 21/12/2011 से 20/12/2013 एवं 16 वर्ष में जो लड़कियों एवं लड़के 21 /12/2009 से 20/12/2011 के बीच जिनका जन्म हुआ है वहीं भाग ले सकते हैं।

प्रतियोगिता तीन वर्ग में संपन्न होगी।

ए वर्ग 14 वर्षीय लड़के एवं लड़कियां में 60 मीटर दौड़/ लंबी कूद (5 मी अप्रोच के साथ) / ऊंची कूद सीजर स्टाइल

बी वर्ग में 14 वर्षीय लड़कियां एवं लड़के 60 मीटर दौड़ / लंबी कूद (5 मी अप्रोच के साथ) / गोला फेक बैक थ्रो 1 किलो

सी वर्ग में 14 वर्षीय लड़के एवं लड़कियां 60 मीटर दौड़। लंबी कूद (5 मी अप्रोच) एवं 600 मीटर दौड़

ए/बी/सी वर्ग में किड्स जैवलिन थ्रो 5 मी रनवे के साथ सभी को करनी है।

ए वर्ग में 16 वर्षीय लड़कियां एवं लड़के 60 मी दौड़, तस्तरी फेंक / गोला फेंक (3 किलो)/ भाला फेंक 10 मी अप्रोच के साथ (500 ग्राम)।

बी वर्ग में 16 वर्षीय लड़कियां एवं लड़के 600 मीटर दौड़, तस्तरी फेंक / गोला फेंक (3 किलो)/ भाला फेंक 10 मी अप्रोच के साथ (500 ग्राम)।

सी वर्ग में 16 वर्षीय लड़कियां एवं लड़के ऊंची कूद (सीजर स्टाइल), तस्तरी फेंक / गोला फेंक (3 किलो)/ भाला फेंक 10 मी अप्रोच के साथ (500 ग्राम)

इच्छुक प्रतियोगी अपनी प्रविष्टि जिला एथलेटिक्स संघ जयपुर के सचिव गोपाल सैनी को सुबह 7:00 बजे से 8:00 तक पोलो ग्राउंड में दे देवे।

डॉ. नीरज के. पवन ने इंडोर स्टेडियम का लिया जायजा

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 24 नवंबर से 5 दिसंबर तक

जयपुर, 4 नवंबर। डॉ. नीरज के पवन, शासन सचिव, युवा मामले एवं खेल विभाग, राजस्थान सरकार और अध्यक्ष, राजस्थान राज्य कीड़ा परिषद ने मंगलवार को सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित विभिन्न खेल मैदानों सहित इंडोर स्टेडियम में तैयारियों का जायजा लिया, जहां बास्केटबाल के पुरूष व महिला वर्ग के मैच यहा आयोजित किये जायेगें। खेलों इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 24 नवम्बर से 5 दिसम्बर तक सभी संभागों में आयोजित किये जायेगें। सभी जगह खेल मैदानों की कायाकल्प की जा रही है। इसी के तहत जयपुर में भी सभी मैदानों को दुरस्त किया जा रहा है। डॉ. नीरज के पवन ने खेलों इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 की तैयारियों का निरीक्षण किया और संतुष्टि व्यक्त की। इंडोर स्टेडियम में चल रही तैयारिया 15 नवंबर तक पूर्ण कर ली जायेगी। साथ ही अन्य खेल मैदानों के रिनोवेषन का कार्य भी 15 नवंबर तक पूर्ण कर लिया जायेगा। उन्होने बताया कि निरीक्षण के दौरान खेल सचिव ने यहा कार्य कर रही एजेन्सी को आवष्यक दिषा निर्देष दिए और कहा कि इसे समय पर पूर्ण कर लिया जाये।

घुटने की चोट के कारण बीबीएल से बाहर हुए आर. अश्विन

नई दिल्ली, 4 नवंबर। घुटने की सर्जरी की वजह से आर अश्विन को सिडनी थंडर के साथ अपना बीबीएल डेब्यू रद्द करना पड़ा। उन्होंने कहा कि यह मौका गंवाने से वह "बहुत निराश" हैं, क्योंकि इससे वह बीबीएल में खेलने वाले भारत के पहले कैप्ड खिलाड़ी बन जाते। वहीं थंडर ने कहा कि वे "अश्विन के साथ मिलकर एक नई योजना पर काम कर रहे हैं।"

इस साल की शुरुआत में आईपीएल से संन्यास लेने के बाद अश्विन के लिए विदेशी लीग में खेलने का रास्ता खुला था। उन्होंने थंडर के साथ पूरे बीबीएल सीजन के लिए करार किया था। अश्विन ने थंडर के बयान में कहा, "मुझे बीबीएल 15 मिस करने का बहुत अफसोस है। अब मेरा पूरा ध्यान रिकवरी पर है। मैं थंडर परिवार और फ़ैंस का शुक्रगुज़ार हूं, जिन्होंने पहले ही बहुत अपनापन दिखाया है। ट्रेंट (कोपलैंड, थंडर जनरल मैनेजर) और पूरी मैनेजमेंट टीम ने पहले ही बातचीत से मुझे क्लब का हिस्सा महसूस कराया।

"अगर रिहैब और यात्रा की योजना अनुमति दें, तो मैं सीजन के बाद के हिस्से में टीम के साथ रहना और फ़ैंस से मिलना चाहूंगा। थंडर टीमों को शानदार साल की शुभकामनाएं।" ट्रेंट कोपलैंड ने कहा, "सिडनी थंडर के सभी लोग अश्विन की घुटने की चोट की खबर से बहुत दुखी हुए, जिसने उन्हें बीबीएल 15 से बाहर कर दिया। हम उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं।

"जब हमने पहली बार अश्विन से बात की, तभी उनके थंडर के प्रति समर्पण का अंदाज़ा लग गया था। हमें उम्मीद है कि हम उन्हें बीबीएल 15 के कुछ हिस्से के दौरान अपने डगआउट में स्वागत कर सकेंगे, फ़ैंस से मिलवाएंगे और एक लंबे समय का रिश्ता बनाएंगे।"

देवनानी की पत्नी के अंतिम संस्कार में मुख्यमंत्री सहित कई मंत्री पहुँचे

विभिन्न राजनीतिक दलों, प्रतिनिधियों के साथ हजारों की संख्या में जनता उपस्थित थी

अजमेर, 4 नवम्बर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की धर्मपत्नी इंदिरा देवनानी का मंगलवार को अंतिम संस्कार कर दिया गया। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा सहित, राज्य सरकार के कई मंत्रियों ने अजमेर में देवनानी के निवास पर इंदिरा देवनानी को श्रद्धांजलि दी एवं शोक संतप्त परिवार को ढ ांढ स बंधाया। अंतिम संस्कार में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों सहित हजारों की संख्या में शहर के लोग उपस्थित थे।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की धर्मपत्नी इंदिरा देवनानी की पार्थिव देह आज अजमेर के ऋषि घाटी स्थित मुक्तिधाम में पंचतत्व में विलीन हुई। विधानसभा अध्यक्ष देवनानी के पुत्र महेश ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पार्थिव देह को मुखाग्नि दी। इंदिरा देवनानी की पार्थिव देह मंगलवार सुबह आठ बजे जयपुर से अजमेर लाकर उनके निवास स्थान पर दर्शनार्थ रखी गई।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने मंगलवार को अजमेर में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के घर पर इंदिरा दवेनानी की पार्थिव देह को पुष्पांजलि अर्पित की। केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, सहकारिता मंत्री गौतम दक, चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित कुमार गोदारा, ऊर्जा मंत्री हीरा लाल नागर,

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा व कई मंत्रियों ने मंगलवार को अजमेर में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की धर्मपत्नी इंदिरा दवेनानी को श्रद्धांजलि अर्पित की और शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया।

जलदाय मंत्री कन्हैया लाल चौधरी, जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के राज्यमंत्री के.के. बिश्नोई, मुख्य सचेतक एवं पूर्व मंत्री जोगेश्वर गर्ग, राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, किसान आयोग के अध्यक्ष सी.आर. चौधरी, देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भडाणा, राजस्थान धरोहर संरक्षण प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत, विधायक मसूदा वीरेंद्र सिंह कानावत, भीलवाड़ा विधायक अशोक कोठारी, जयपुर विधायक गोपाल शर्मा, ब्यावर विधायक शंकर सिंह रावत, भंवर सिंह पलाड़ा श्रद्धांजलि देने के लिए अजमेर पहुंचे।

श्रद्धांजलि देने वालों में अजमेर डेयरी के अध्यक्ष रामचंद्र चौधरी, दीनबंधु चौधरी, आरटीडीसी के पूर्व अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह राठौड़, पूर्व विधायक किशन सोनगरा, पूर्व विधायक डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, किशनगढ के पूर्व विधायक सुरेश टांक, किसान मोर्चा अध्यक्ष हरिराम

■ अंतिम संस्कार में अजमेर के विभिन्न राजनीतिक व सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी तथा विश्व हिन्दू परिषद व आरएसएस के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

रिणवा, मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष जी आर मूलचंदानी, जिला अध्यक्ष रमेश सोनी, देहात अध्यक्ष जीतमल प्रजापत, नागौर जिला अध्यक्ष गजेंद्र सिंह, जिलाध्यक्ष जालौर श्रवण सिंह राव, महेंद्र सिंह रलावता, विजय जैन, पूर्व जिला अध्यक्ष अरविंद यादव, पूर्व सभापति सुरेन्द्र सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष देवी शंकर भूतड़ा, एडीए के पूर्व अध्यक्ष शिव शंकर हेड़ा, पूर्व जिला प्रमुख पुखराज पहाडिय़ा, पूर्व कुलपति बी.एल. छीपा, विश्व हिंदू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री शशि प्रकाश इंदौरिया, प्रांत संघ चालक जगदीश राणा, प्रचारक राजेन्द्र सिंह एवं गोविंद, जिला संघ संचालक खाजू लाल चौहान सहित, संभागीय आयुक्त शक्ति सिंह राठौड़, महानिरीक्षक पुलिस राजेन्द्र सिंह, जिला कलेक्टर लोकबंधु भी शामिल थे।

एसआईआर के खिलाफ सड़क पर उतरीं ममता बनर्जी

बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया की शुरूआत के पहले दिन ही तृणमूल ने मार्च निकाला

कोलकाता, 4 नवंबर। बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के विरोध में तृणमूल कांग्रेस ने कोलकाता में मंगलवार को एक रैली निकाली। मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी ने पार्टी नेताओं व मंत्रियों के साथ कोलकाता में सड़क पर उतरकर एक विशाल विरोध मार्च का नेतृत्व किया।

इस मार्च में तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव व ममता के सांसद भतीजे अभिषेक बनर्जी भी शामिल हुए। करीब चार किलोमीटर लंबा यह पैदल मार्च कोलकाता के ऐतिहासिक रेड रोड से शुरू होकर जोड़ासांकों ठाकुरबाड़ी (रवींद्रनाथ टैगोर के पैतृक आवास) के पास समाप्त हुआ, जिसमें हजारों तृणमूल कार्यकर्ता व समर्थक हाथों में एसआइआर के विरुद्ध पोस्टर और बैनर लेकर शामिल हुए।

दूसरी ओर बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता व भाजपा विधायक सुवेंदु अधिकारी ने एसआइआर के समर्थन और इसके माध्यम से घुसपैठियों को देश से बाहर निकालने की मांग को लेकर कोलकाता से लगे उत्तर 24 परगना जिले के पानीहाटी में जुलूस का नेतृत्व किया।

इसी के साथ, तृणमूल कांग्रेस पर हुगली जिले के सिंगुर में भाजपा द्वारा एसआइआर के समर्थन में आयोजित एक सभा पर हमले का आरोप लगा है। आरोप है कि सभा में शामिल भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट की गई।

■ इधर सिंगूर में भाजपा द्वारा एसआईआर के समर्थन में आयोजित एक सभा पर कथित रूप से तृणमूल के लोगों ने हमला कर दिया, हालांकि तृणमूल ने इन आरोपों का खंडन किया है।

इसमें कई कार्यकर्ता घायल हो गए। हालांकि, सत्तारूढ़ दल ने भाजपा के आरोपों का खंडन किया है।

पैदल मार्च के समापन के बाद सभा को संबोधित करते हुए ममता व अभिषेक ने एसआइआर को लेकर भाजपा व केंद्र सरकार पर जोरदार हमला बोला। ममता ने कहा कि चुनाव आयोग की मिलीभगत से भाजपा लोगों का लोकतांत्रिक अधिकार छीनना चाहती है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैं जान दे दूंगी, लेकिन किसी का भी अधिकार छीनने नहीं दूंगी। उन्होंने फिर चेतावनी दीकि एक भी वैध मतदाता का नाम कटने पर दिल्ली जाकर बड़ा आंदोलन व घेराव किया जाएगा। ममता ने कहा कि लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए सड़क से लेकर अदालत तक लड़ाई जारी रहेगी।

ममता ने कहा कि भाजपा मतदाता सूची में गड़बड़ी व फर्जी लोगों के नाम शामिल होने की बात करती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह का नाम लिए बिना उन्होंने सवाल किया कि अगर ऐसा है तो आप इतने सालों से किस वोटर लिस्ट से जीतते आए हैं और केंद्र व कई राज्यों की सत्ता में हैं? अगर ये लिस्ट झूठी है, तो आपकी सरकार भी झूठी है, आपका पद भी झूठ है। उन्होंने कहा कि दिखाने के लिए मोदी हर साल कुछ न कुछ कर रहे हैं। एक बार उन्होंने नोटबंदी की। आज हमें बताइए, क्या आप काला धन वापस लाए? कितना काला धन वापस आया?

वहीं, नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी ने ममता व तृणमूल पर एसआइआर को लेकर भय पैदा करने का आरोप लगाया। उन्होंने एसआइआर के कथित डर से कुछ लोगों द्वारा आत्महत्या किए जाने के लिए ममता को जिम्मेदार ठहराया।

जद (यू) ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अनंत सिंह, जिनके खिलाफ पहले ही 28 आपराधिक मामले दर्ज हैं, अब गैंगस्टर से राजनेता बने दुलार सिंह यादव की हत्या के आरोपी के रूप में नामजद किए गए हैं। यादव मोकामा में जन सूराज के उम्मीदवार पीयूष प्रियदर्शी के लिए प्रचार कर रहे थे, लेकिन पार्टी के नेता प्रशांत किशोर ने इस बात का खंडन किया कि दुलार सिंह यादव जन सूराज से जुड़े थे।

सुप्रीम कोर्ट ने धर्मान्तरण कानून पर राजस्थान सरकार को नोटिस भेजा

अधिवक्ता हुजैफा अहमदी और वरिष्ठ मानवाधिकार कार्यकर्ता जॉन दयाल की याचिका पर नोटिस जारी किए गए हैं

नयी दिल्ली, 04 नवंबर। उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को राजस्थान विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम, 2025 के कई प्रावधानों को चुनौती देने वाली जनहित याचिका पर राजस्थान सरकार को नोटिस जारी किया।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने अधिवक्ता एवं शोधकर्ता एम. हुजैफा और वरिष्ठ मानवाधिकार कार्यकर्ता जॉन दयाल की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया।

एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड यशवंत सिंह के माध्यम से दायर याचिका में आरोप लगाया गया है कि ये प्रावधान मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और दंडात्मक विध्वंस और सामूहिक दंड के समान हैं। याचिकाकर्ताओं का प्रतिनिधित्व वरिष्ठ अधिवक्ता अभय महादेव थिप्से ने किया।

न्यायालय ने इस मामले को एक अन्य लंबित जनहित याचिका, दशरथ कुमार हिनूनिया बनाम राजस्थान राज्य, के साथ संलग्न कर दिया, जिस पर वरिष्ठ अधिवक्ता हुज़ेफ़ा अहमदी ने तर्क दिया था, जिसमें पहले नोटिस और

■ याचिका में आरोप लगाया गया है कि देश के विभिन्न राज्यों में जो धर्मान्तरण कानून बने हैं उनमें राजस्थान का कानून सर्वाधिक गंभीर है।

स्थगन आवेदन जारी किए गए थे।

सुनवाई के दौरान पीठ ने सवाल किया कि याचिका राजस्थान उच्च न्यायालय में क्यों नहीं दायर की गई।

जवाब में अहमदी ने दलील दी कि अन्य राज्यों के धर्मांतरण विरोधी कानूनों को चुनौती देने वाली इसी तरह की याचिकाएँ पहले से ही शीर्ष न्यायालय में लंबित हैं, और संबंधित मामले इसी न्यायालय में स्थानांतरित कर दिए गए हैं। उन्होंने राजस्थान के कानून को सभी राज्य धर्मांतरण विरोधी कानूनों में "सबसे गंभीर" बताते हुए कहा कि इस कानून में सामूहिक धर्मांतरण (दो से अधिक व्यक्तियों के धर्मांतरण के रूप में परिभाषित) के लिए 20 लाख रुपये तक के जुर्माने और 20 साल से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है।

याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि ये प्रावधान बिना सुनवाई के दंडात्मक कार्रवाई की अनुमति देकर संविधान के अनुच्छेद 14, 21, 22 और 300ए का उल्लंघन करते हैं, तथा कानून के शासन और शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत को कमजोर करते हैं। अल्पसंख्यकों और हाशिए पर पड़े समूहों पर पड़ने वाले असमान प्रभाव को उजागर करते हुए याचिकाकर्ताओं ने शीर्ष न्यायालय से इन प्रावधानों को असंवैधानिक बताते हुए उन्हें रद्द करने का आग्रह किया है।

इंडिया गठबंधन एसआईआर का देश व्यापी विरोध करेगा

नयी दिल्ली, 04 नवंबर। इंडिया गठबंधन ने मंगलवार से शुरू हो रही दूसरे चरण की मतदाता गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया का विरोध करने की योजना बनायी है।

सूत्रों के अनुसार बिहार विधानसभा चुनाव के बाद एसआईआर को लेकर इंडिया गठबंधन ने देशव्यापी आंदोलन करने की तैयारी की है। इंडिया गठबंधन इसके विरोध में सामूहिक रूप से उच्चतम न्यायालय का फिर से रुख करने की भी तैयारी कर रहा है। सूत्रों के अनुसार बिहार विधानसभा चुनाव के बाद (एसआईआर) के मसले पर इंडिया गठबंधन की बैठक आयोजित की जायेगी, जिसमें उच्चतम न्यायालय से गुहार करने और देशव्यापी आंदोलन करने की रूपरेखा तैयार की जायेगी। फिलहाल पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कांग्रेस नेतृत्व के साथ मिलकर मतदाता सूची पुनरीक्षण मुद्दे पर संघर्ष को आगे बढ़ ाने पर सहमति दी है।

गौरतलब है कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने 27 अक्टूबर को प्रेस कॉन्फ्रेंस में एसआईआर के दूसरे चरण की घोषणा की थी। उनके अनुसार, एसआईआर चार नवंबर से गणना चरण के साथ शुरू होगा और चार दिसंबर तक जारी रहेगा। चुनाव आयोग नौ दिसंबर को प्रारंभिक मतदाता सूची जारी करेगा और अंतिम सूची सात फरवरी को प्रकाशित की जायेगी।

गौरतलब है कि दूसरे चरण में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ , राजस्थान, अंडमान और निकोबार द्वीप, लक्षद्वीप, गोवा, गुजरात, केरल, पुड्डुचेरी, तमिलनाडु में मतदाता सूची का पुनरीक्षण किया जायेगा।

महाराष्ट्र में नगर परिषदों व पंचायतों के चुनाव 2 दिसम्बर को

मुंबई, 04 नवंबर। महाराष्ट्र के प्रदेश चुनाव आयोग ने मंगलवार को 246 नगर परिषदों और 42 पंचायतों के लिए मतदान की तारीख दो दिसंबर घोषित कर दी है। लेकिन आयोग ने 29 नगर निगमों के चुनाव की तारीख की घोषणा फिलहाल नहीं की है। राज्य चुनाव आयुक्त दिनेश टी. वाघमारे ने एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि मतगणना 03 दिसंबर को होगी और परिणाम 10 दिसंबर को घोषित किए जाएँगे। आयोग के मुताबिक, नामांकन प्रक्रिया 10 नवंबर से शुरू होगी। नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 17 नवंबर है और 18 नवंबर को नामांकन पत्रों की जाँच की जाएगी। वाघमारे ने बताया कि इन स्थानीय निकायों में 6,859 सदस्यों और 288 अध्यक्षों के चुनाव के लिए मतदान होगा।

एनडीए का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रयासों के बावजूद, स्थानीय चुनावी माहौल अस्थिर और अनिश्चित बना हुआ है। एनडीए की सहयोगी लोक जनशक्ति पार्टी (एलजेपी), जिसे पटना ज़िले में चार सीटें दी गई हैं, के प्रदर्शन पर भी नज़दीक से नज़र रखी जा रही है। गठबंधन के भीतर से मिली सूचनाओं के अनुसार, पार्टी ज़मीनी स्तर पर संघर्ष कर रही है और संभव है कि उसे एक भी सीट न मिले, ऐसा नतीजा एनडीए की कुल सीटों की संख्या को और कम कर सकता है।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह बदलता हुआ रुख सत्ता विरोधी लहर, बेरोज़गारी की चिंताओं और राजद के तेजस्वी यादव के नेतृत्व वाले महागठबंधन के मजबूत संगठन से प्रभावित मतदाताओं की गहरी भावनाओं को दर्शाता है। अगर यह रुझान बना रहा, तो कई सीटों पर भाजपा तीसरे स्थान पर जा सकती है, जो उसकी पिछली बढ़त के बिल्कुल विपरीत होगा।

इन संकेतों को देखते हुए, भाजपा रणनीतिकार सत्ता बरकरार रखने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बचे-खुचे समर्थन पर अधिक भरोसा कर रहे हैं। शुरुआती रिपोर्टों में कड़ी टक्कर के संकेत मिलने के साथ, जनता दल (यूनाइटेड) पर एन.डी.ए. की निर्भरता और बढ़ती जा रही है। एक रणनीतिकार के शब्दों में, "तेजस्वी को सत्ता से बाहर रखना है, तो हमें नीतीश की ज़रूरत पहले से कहीं ज़्यादा है।"इस चुनाव में भाजपा के लिए दांव असामान्य रूप से ऊँचा है, न सिर्फ अपने गढ़ को बचाने के लिए, बल्कि बिहार जैसी अस्थिर राजनीति वाले राज्य में अपनी साख और ताकत बनाए रखने के लिए भी। पहले चरण के मतदान में अब कुछ ही समय बाकी है और बिहार एक ऐसे मुकाबले की तैयारी में है जो राज्य के सत्ता संतुलन को बदल सकता है और राष्ट्रीय राजनीति पर असर डाल सकता है।

पैसेंजर ट्रेन व ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

टक्कर के बाद ओवरहेड वायर और सिग्नल सिस्टम बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए हैं, जिससे ट्रेन परिचालन ठप हो गया है। स्थिति को देखते हुए कई ट्रेनों को रद्द या डायवर्ट किया गया है।

रेलवे ने मौके पर मेडिकल यूनिट और राहत दल भेज दिए हैं। हादसे के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन प्रशासन ने जांच के आदेश जारी कर दिए हैं।

रेलवे ने प्रत्येक मृतक के परिवार को 10 लाख, गंभीर रूप से घायल यात्रियों को पांच-पांच लाख तथा सामान्य रूप से घायल यात्रियों को एक-एक लाख की सहायता राशि देने की घोषणा की है।

बारह राज्यों में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गणना अवधि आज से शुरू हो गई है और यह चार दिसंबर तक पूरे एक महीने तक जारी रहेगी।

27 अक्टूबर, 2025 तक मतदाता सूची में शामिल प्रत्येक मतदाता को एक विशिष्ट गणना प्रपत्र (ईएफ) उपलब्ध कराया जाएगा, जो आंशिक रूप से पहले से भरा होगा। सभी 12 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में ईएफ का वितरण शुरू हो चुका है और 100 प्रतिशत ईएफ छप चुके हैं।

एसआईआर प्रक्रिया को पूरा करने के लिए 5.3 लाख से अधिक बूथ स्तरीय अधिकारी (बीएलओ), 7.64 लाख बूथ स्तरीय एजेंट (बीएलए), 10,448 ईआरओ/एईआरओ और 321 डीईओ लगाये गये हैं।

'सड़क दुर्घटनाएं ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में सडक सुरक्षा नीति, 2017 अपनाई गई है और इसमें ब्लैक-स्पॉट प्रबंधन व यातायात निगरानी का भी प्रावधान है। इसके बावजूद प्रशासन यहां पर ओवरलोड वाहनों के अनधिकृत प्रवेश और लापरवाही से संचालन को रोकने में विफल रहा है।

याचिका में अदालत से आग्रह किया है कि जयपुर नगरपालिका सीमा के भीतर भारी वाणिज्यिक वाहनों के प्रवेश और संचालन को प्रतिबंधित किया जाए।

सभी एजेंसियों के संयुक्त प्रवर्तन अभियानों के जरिए कानूनी प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन हो। इसके अलावा राज्य सडक सुरक्षा परिषद, पीएचईडी, जेडीए को निर्देश दिया जाए कि वे शहर की प्रमुख सडकों की इंजीनियरिंग की ऑडिट करें और एक्सीडेंट वाले ब्लैक स्पॉट की पहचान करें व मरम्मत करे।

भूमिहार बिहार में जनसंख्या ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चुनावी गठबंधनों और प्रतिद्वंद्विताओं की जटिलताओं को समझने के लिए मजबूर हैं। जबकि अनंत सिंह और सूरज भान सिंह के बीच अंतिम सीधा टकराव दो दशकों से भी अधिक समय पहले हुआ था, राजनीतिक माहौल अब भी उनके बीच की दुश्मनी को कम नहीं कर पाया है।

यह चुनाव उनकी पहले की झड़पों में एक बदलाव लाते हुए, मतदान की लड़ाई की वापसी को दर्शाता है, जबकि पहले अक्सर बंदूकों से फैसले होते थे।

सूरज भान सिंह, जिनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं अब उनकी पत्नी, वीणा देवी के कंधों पर टिकी हैं, मोकामा में शक्ति के जटिल समीकरणों को उजागर करते हैं। सन् 1992 के एक हत्या मामले में आजीवन कारावास की सजा काटने के बाद, उन्होंने चुनावी प्रभाव फिर से हासिल करने के लिए अपनी पत्नी को मैदान में उतारा है। उनकी उम्मीदवारी न केवल उनके विरासत की निरंतरता है, बल्कि यह एक रणनीतिक कदम भी है, जो उनके समर्थकों के इतिहास और उनकी वफादारी का लाभ उठाने का प्रयास है। जब वे अनंत सिंह के खिलाफ प्रचार करती हैं, तो उनके दांव उतने ही व्यक्तिगत भी होते हैं, जितने राजनीतिक।

बिहार की राजनीति के रंग-बिरंगे क्षेत्र में, जहां जाति और समुदाय के प्रति लोगों की निष्ठा अक्सर विचारधारा पर हावी रहती है। लेकिन भूमिहार समुदाय इसका एक विचारणीय विरोधाभास प्रस्तुत करता है। भले ही भूमिहार केवल 2.9 प्रतिशत मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन 2025 के विधानसभा चुनाव के समीप आने के साथ ही भूमिहार तीव्र राजनीतिक दाँव-पेच के केन्द्र बन गये हैं। यह छीना-झपटी केवल संख्या के कारण नहीं है, यह प्रभाव, विरासत और राजनीतिक सपनों की जिंदा रहने की लड़ाई है।

बड़ी राजनीतिक पार्टियां, विशेषकर एनडीए और महागठबंधन, ऐसे समुदाय को लेकर इतना प्रयास क्यों करती हैं, जिसके वोट का हिस्सा 3 प्रतिशत से भी कम है? इसका उत्तर भूमिहारों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता में छिपा हुआ है। पारंपरिक रूप से इन्हें एक उच्च जाति के रूप में देखा जाता है (जो लगभग ब्राह्मणों के समान मानी जाती है), और इनका बिहार की राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है।

भूमिहारों के उत्पत्ति के बारे में एक मान्यता यह है कि वे ब्राह्मण थे, जिन्हें बौद्ध शासक अशोक महान के शासन में अनुदान स्वरूप भूमि प्रदान की गई थी। जब उन्होंने हिंदू धर्म को अपनाया, तब हिंदू पुजारियों ने उन्हें ब्राह्मणों से मामूली सा नीचा दर्जा दिया।

कुछ उन्हें ब्राह्मणों और राजपूतों का मिश्रण मानते हैं। भूमिहार एक पारंपरिक रूप से भू स्वामी जाति रही है और छोटी रियासतों और जमींदारियों पर उनका नियंत्रण रहा है, जैसे बेतिया, टेकरी, हठवा, तमुखी, शिवहर, पाकुर, महिषादल और महेशपुर, और उत्तर प्रदेश की वाराणसी। ब्रिटिश शासन के दौरान, भूमिहारों ने अधिकांश रूप से सेना में शामिल होकर एक सैन्य छवि बनाई।

भूमिहार समुदाय ने कई सृजनशील बुद्धिजीवियों को जन्म दिया, जैसे वीर रस परम्परा के राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, लेखक राहुल सांस्कृतायन, रामवृक्ष बेनीपुरी और ऐसे ही अन्य बहुत से साहित्यकार। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 नवम्बर को पटना में दिनकर चौक से अपने रोड शो की शुरुआत की, और कवि दिनकर का यशोगान किया।

श्री कृष्ण सिंह, जो संविधान सभा के सदस्य और बिहार के पहले मुख्यमंत्री (1946 से 1961 तक) और एक भूमिहार नेता थे, की विरासत बहुत महत्वपूर्ण है, और यह सभी पक्षों को यह याद दिलाती है कि यह समुदाय चुनावी परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

सिंह के लंबे कार्यकाल में कई प्रभावशाली भूमिहार नेताओं का उदय हुआ, जिनमें महेश प्रसाद सिन्हा, कृष्णकांत सिंह, एलपी शाही, बसवन सिन्हा और कैलाशपति मिश्र शामिल हैं। कैलाशपति मिश्र (गुजरात के पूर्व गवर्नर) बिहार के एक बहुत प्रभावशाली भाजपा नेता थे।

इसी तरह, पूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. सी.पी. ठाकुर भी प्रभावशाली भूमिहार नेताओं में शामिल थे। आज भाजपा में शीर्ष भूमिहार नेता हैं, केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा।

भले ही ओबीसी नेताओं जैसे लालू प्रसाद और नीतीश कुमार ने 1990 से 2025 तक बिहार की राजनीति में दबदबा बनाया हो, भूमिहारी समुदाय ने नौकरशाही, शिक्षा, मीडिया, और पेशेवर क्षेत्रों, जैसे कानून, चिकित्सा आदि में अपनी छाप छोड़ी है। बिहार के प्रमुख ठेकेदार मुख्यतः भूमिहार ही हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भूमिहार कायस्थों और ब्राह्मणों से मुकाबला करते हैं। आक्रामकता में भूमिहार राजपूतों और यादवों से मुकाबला करते हैं। व्यापार में भूमिहार बनियों से मुकाबला करते हैं। वे राजनीति में भी हावी हैं, राजीव रंजन सिंह (उर्फ लल्लन सिंह, प्रमुख जेडीयू नेता और केन्द्रीय पंचायतीराज, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री), जो पीएम मोदी के रोड शो में उनके साथ थे, एक प्रमुख भूमिहार नेता हैं।

इसी तरह, पूर्व कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह भी भूमिहार हैं। लल्लन सिंह, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दशकों पुराने करीबी दोस्त हैं। जब 2005 में नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री बने, तो पटना में एक प्रसिद्ध कहावत थी "ताज नीतीश को, राज भूमिहार को।"

भूमिहार बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के हर हिस्से में फैले हुए हैं, लेकिन वे मध्य बिहार के तीन केन्द्रीय क्षेत्रों में प्रमुख रूप से हावी हैं: अरवल, जहानाबाद (पुराना गया और पुराना शाहाबाद क्षेत्र), मोकामा और मुंगेर क्षेत्र, और बेगूसराय, लखीसराय और बरैया क्षेत्र। समस्तीपुर के मिथिलांचल जिलों में भूमिहार ब्राह्मणों से वैवाहिक रिश्ते बनाते हैं और उन्हें "दो-गामिया" समुदाय के रूप में जाना जाता है।

मोकामा "जंगल राज" के रणवीर सेना काल की एक शक्तिशाली पुनः गूंज है।

1990 के दशक के बाद, चुनावी राजनीति में उनके प्रभाव में गिरावट आने के बाद, बहुत से भूमिहार रणवीर सेना, जो 1994 में एक नागरिक सेना (मिलिशिया) के रूप में स्थापित की गई थी, से जुड़ गए थे। रणवीर सेना का नाम 19वीं सदी के एक शक्तिशाली भूमिहार नेता रणवीर चौधरी के नाम पर रखा गया था। इस मिलिशिया ने 1990 के दशक के अंत में लाल सेना (एक सशस्त्र माओवादी संगठन) पर जहानाबाद, मखदूमपुर और औरंगाबाद क्षेत्रों में सशस्त्र हमले किए थे।

रणवीर सेना द्वारा लक्ष्मणपुर बाठे सहित, अन्य अनेक स्थानों पर नरसंहार किए गए थे। बाद में सेनारी में लाल सेना ने बहुत से भूमिहारों का नरसंहार किया। आज मोकामा में हो रही हिंसा रणवीर सेना के "जंगल राज" के दौर की शक्तिशाली पुनर्गूंज है।

राहुल गाँधी की, फ्रैश, ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जिलाध्यक्ष नहीं चाहते, जो उनके प्रभाव क्षेत्र में फिट न बैठते हों।

सिफारिश किए गए नामों में प्रमोद सिसोदिया (चित्तौड़गढ़), सबनम गोदारा (हनुमानगढ़) और पुष्पेन्द्र भारद्वाज (जयपुर) शामिल हैं।

पार्टी की ओर से अभी औपचारिक आदेश जारी नहीं हुए हैं, लेकिन स्थानीय कार्यकर्ताओं का कहना है कि संगठन को स्वच्छ और विश्वसनीय बनाने की पार्टी की प्रतिबद्धता के संदर्भ में चयनित नामों की जांच की जानी चाहिए।

एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स () पोर्टल के अनुसार, भारद्वाज के हलफनामे में निम्नलिखित मुकदमों का उल्लेख है:

एफआईआर संख्या 1129/2008, सीआईएस संख्या 20789/14, एसीएमएम संख्या 9, जयपुर-1 – आईपीसी की धारा 188 (लोक सेवक द्वारा जारी आदेश की अवज्ञा), मामला लंबित।

एफआईआर संख्या 155/2001, केस संख्या 321/2002, एसीएमएम संख्या 9, जयपुर – आईपीसी की धाराएं 147, 148, 149, 452, 427 (दंगा व संबंधित अपराध)। इसमें उन्हें दोषी ठहराया गया था, लेकिन परिवीक्षा अधिनियम के तहत रिहा किया गया; अपील अब भी लंबित है।

भारद्वाज दो बार सांगानेर विधानसभा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार रहे हैं, लेकिन दोनों बार 50,000 से अधिक वोटों से हार चुके हैं। पार्टी कार्यकर्ताओं का कहना है कि उनकी डिप्टी सीएम और भाजपा नेता प्रेमचंद बैरवा से नज़दीकी हितों के टकराव की स्थिति पैदा करती है।

पिछले साल वायरल हुए एक वीडियो में भारद्वाज के बेटे और बैरवा के बेटे को पुलिस वाहनों के साथ खुली जीप में घूमते हुए दिखाया गया था, जिससे सरकारी संसाधनों के दुरुपयोग को लेकर काफी आलोचना हुई। बाद में जारी एक और वीडियो में भारद्वाज ने इस घटना का बचाव किया, बजाय निंदा करने के। यह मामला राष्ट्रीय मीडिया में भी प्रमुखता से छपा था।

हनुमानगढ़ और चित्तौडगढ़ में जमीनी कार्यकर्ताओं ने सबनम गोदारा और प्रमोद सिसोदिया के नामों पर भी आपत्ति जताई है। उनका कहना है कि इनकी स्थानीय साख और कार्यशैली पर पहले से सवाल उठते रहे हैं। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि औपचारिक नियुक्ति से पहले इन सभी के पृष्ठभूमि की जांच बेहद जरूरी है।

जयपुर जिला (शहरी) कांग्रेस कमेटी के कुछ सदस्यों ने एआईसीसी नेतृत्व को ज्ञापन देकर मांग की है कि जिलाध्यक्ष पद के उम्मीदवारों की जांच की जाए कि उनके खिलाफ कोई कानूनी मामला लंबित न हो और न ही कोई हितों का टकराव हो।

जयपुर के एक कार्यकर्ता ने कहा, राहुल गांधी जी के संगठन सृजन अभियान का उद्देश्य एक पारदर्शी संगठन बनाना है। और जिनके खिलाफ विवाद या आपराधिक रिकॉर्ड हैं, उन्हें जिलाध्यक्ष नहीं बनाया जाना चाहिए।

राजस्थान पीसीसी कार्यालय की ओर से जवाब मिला कि अंतिम सूची केवल पृष्ठभूमि जांच के बाद ही जारी की जाएगी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस समय "संगठन सृजन अभियान" के तहत राजस्थान में अपने जिला इकाइयों का पुनर्गठन कर रही है। राज्य नेतृत्व का कहना है कि यह पहल जमीनी कार्यकर्ताओं को सम्मान देने और आगामी नगर निकाय व पंचायत चुनावों से पहले पार्टी की साफ छवि पेश करने के लिए की जा रही है।

एस आई भर्ती ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राजकुमार यादव की जमानत याचिका को खारिज किया है। अदालत ने आरपीएससी के सदस्य रहे बाबूलाल कटारा के रिश्तेदार राहुल कटारा, दलाल रविन्द्र सिंह, असफल अभ्यर्थी नेहा, नैतिक, ऋद्धि, भरत और डमी कैंडिटेड्स अशोक सिंह व राधिका को जमानत दी है। गौरतलब है कि एसओजी ने मामले में अपने बेटे भरत यादव के लिए पेपर खरीदने के आरोप में राजकुमार यादव को गिरफ्तार किया था। उसका बेटा भरत भर्ती की लिखित परीक्षा में पास हो गया था, लेकिन इसके बाद हुई दक्षता परीक्षा में वह फेल हो गया था।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908